श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति

स्मारिका

वर्ष-24

विक्रमी संवत् 2074 (सन् 2017-2018)

झलकियाँ

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

!! श्रीराम !!

श्री राम जय राम जय जय राम

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुख मूल॥

सम्पादक मण्डल

पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा

डॉ0 भगवान दास पटैरया

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'

श्रीमती मंजु बंसल

स्मारिका

विक्रमी संवत् 2074 सन् 2017-2018

वार्षिक अंक - 24

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

स्थानीय कार्यालय : ए-447, सैक्टर - 47, नोएडा - 201 303

वैबसाइट - www.shriramcharit.com, ई-मेल - contactus@shriramcharit.com

दूरभाष - 0120-4305457

चल - 9811056467

मुद्रक : एक्सप्रैस प्रिंट हाउस, गाजियाबाद

फोन : 9350772514

ई-मेल : vinit.tyagi.gzb@gmail.com

पाठकों से निवेदन

स्मारिका का यह चौबीसवाँ अंक आपके हाथ में है। हमारा प्रयास रहा है कि इसमें भगवान श्रीरामजी के आदर्शों को प्रतिपादित करते हुए ऐसे लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनसे समाज में नैतिक मूल्यों का उत्थान हो। इस दिशा में हम कहाँ तक सफल हुए, यह आप ही बता सकते हैं। आशा करते हैं कि आप पत्रिका पढ़कर हमें **अपना लेख / अपनी प्रतिक्रिया अवश्य भेजेंगे,** ताकि हम अगले अंक में उसे समाहित कर सकें। लेख के संदर्भ में निम्नांकित बिन्दु उल्लेखनीय हैं –

1. **लेख श्रीरामचरितमानस में वर्णित प्रसंगों पर तथा उसका शीर्षक चौपाई, दोहा आदि पर आधारित हो।**

2. लेख में उद्धरित दोहा–चौपाई आदि गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार हों। कृपया संदर्भ निम्नांकित प्रकार से अंकित करें।

   जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

   (5/1/1)

   5/1/1 का आशय है, पाँचवे काण्ड (सुंदरकाण्ड) के पहले दोहे की पहली चौपाई। सातों काण्डों को क्रमशः इस प्रकार से इंगित करें :– 1. बालकाण्ड, 2. अयोध्याकाण्ड, 3. अरण्यकाण्ड, 4. किष्किंधाकाण्ड, 5. सुंदरकाण्ड, 6. लंकाकाण्ड एवं 7. उत्तरकाण्ड।

3. लेख ई–मेल से भेजने हेतु कृपया पृष्ठ सं0 12 देखें। **लेख bpateria@gmail.com** पर भी भेज सकते हैं?

स्मारिका के प्रकाशन में विज्ञापन से प्राप्त धन का महत्वपूर्ण योगदान है। अनुरोध है कि आप भी अपने संस्थान का विज्ञापन भेजकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

विज्ञापन दरें इस प्रकार से हैं –

क्रमांक	विवरण	राशि (रुपयों में)
1.	प्रथम पृष्ठ के पीछे (दूसरा कवर पेज)	35,000
2.	अंतिम पृष्ठ (चौथा कवर पेज)	30,000
3.	अंतिम पृष्ठ के पीछे (तीसरा कवर पेज)	25,000
4.	पत्रिका के अन्दर पूर्ण पृष्ठ	15,000
5.	पत्रिका के अन्दर आधा पृष्ठ	10,000

पाठकों से प्राप्त सहयोग राशि का योगदान भी इसके प्रकाशन में सराहनीय है। अतः अपनी श्रद्धानुसार जो पाठक सहयोग राशि भेजना चाहें वे श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के निम्नांकित खाते में जमा कर सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में चालू खाता सं0 35299035590 IFS Code : SBIN0015971

अध्यक्ष की ओर से

प्रिय श्रीरामचरितमानस प्रेमियों!

आजकल हमारे देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। समाज में पाश्चात्य संस्कृति का तेजी से प्रभाव बढ़ रहा है। हम अपनी शिक्षा, व्यवहार, समाज के प्रति कर्तव्य, धर्म तथा सेवा भावना से विमुख होकर मानव जाति का अहित कर रहे हैं। आज प्रेम और भाईचारे का स्थान हिंसा एवं वैमनस्य ने ले लिया है, जिसका प्रमुख कारण अत्यधिक सांसारिक वैभवों को प्राप्त करने की होड़ है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आपसी सद्भाव बढ़े, जन–जन में ईश्वरीय आस्था तथा भावी पीढ़ी में सुसंस्कार जागृत हों, इसी उद्देश्य से 'श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति, नोएडा' की सन् 1990 में स्थापना हुई, जिसका अगस्त 2015 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति में विलय हो गया है।

हमारा उद्देश्य श्रीरामचरितमानस पाठ एवं प्रवचनों के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी के पावन चरित्रों का प्रचार–प्रसार कर समाज एवं धर्म की सेवा करना है। इसके द्वारा हम सभी का कल्याण होगा। यह समिति अपने स्थापना काल से मार्च 2017 तक 433 मानस पाठ एवं प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित करा चुकी है। इसी कड़ी में अब तक अनेक विख्यात कथाकारों जैसे– संत प्रवर श्री विजय कौशलजी महाराज, रामभक्त पं0 मधुकरजी, श्री लक्ष्मीनारायण शर्माजी, डॉ0 रामगोपाल तिवारी, पं0 बलराम मिश्रजी, पं0 बैजनाथ शुक्लजी, श्री श्री 1008 श्री प्रेमाचार्यजी, श्री बैजूनाथजी महाराज, आचार्य श्यामसुंदर शरणजी, गोस्वामी रमाकांत चतुर्वेदीजी, मानस माधुरी श्रीमती अखिलेश्वरी देवी, आचार्य अखिलेश्वरानन्द (अंगदजी) महाराज, स्वामी श्री राजेश्वरानन्द सरस्वतीजी आदि के प्रवचनों का आयोजन किया जा चुका है। ऐसे ही कार्यक्रम भविष्य में भी होते रहें, ऐसी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है।

गत 26 वर्षों की भाँति इस वर्ष भी मंगलवार दिनाँक 04 अप्रैल 2017 को श्रीराम जन्ममहोत्सव का आयोजन अग्रसेन भवन, सैक्टर–33, नोएडा में किया जा रहा है। इस स्मारिका के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के लिए हम सभी विज्ञापनदाताओं एवं दानदाताओं का आभार प्रकट करते हैं। इस वर्ष "श्रीरामनवमी" के पावन पर्व पर रामकथा एवं श्रीरामजन्ममहोत्सव का **आयोजन उपर्युक्त तिथि पर प्रातः 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक होगा। इस पावन बेला में पं0 श्रीसुरेन्द्र शास्त्रीजी 'मानस कुसुम' श्रीरामकथा अमृत पान कराएँगे।** मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस कार्यक्रम के द्वारा जन–जन में धार्मिक भावना का प्रचार–प्रसार होगा, समाज का नैतिक उत्थान होगा तथा प्रभु श्रीराम के आदर्शों पर चलकर हम स्वयं, अपने परिवार, समाज, देश और विश्व का कल्याण कर सकेंगे।

समिति द्वारा आयोजित मानस पाठ

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत) द्वारा समय समय पर श्रीरामचरितमानस अखण्ड पाठ/सुन्दरकाण्ड पाठ एवं प्रवचन (सत्संग) का आयोजन किया जाता रहा है। इस क्रम में **मार्च 2017 तक 433 मानस पाठ एवं प्रवचन आयोजित किये गये।** इसका विवरण समिति की विगत वर्षों की स्मारिका में प्रकाशित किया गया है। पिछले एक वर्ष में 19 पाठ एवं प्रवचन (श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ) आयोजित हुए, जिनका विवरण निम्नांकित है –

क्र.सं.	तिथि	नाम व पता जिनके निवास पर कार्यक्रम आयोजित हुए
1.	02.04.2016	डॉ0 रविन्द्र कुमार शर्मा, 593 बिजवासन, दिल्ली–110061
2.	29.05.2016	डॉ0 भगवान दास पटैरया, डी–11, सैक्टर–36 नोएडा
3.	12.06.2016	श्री आनन्द गुप्ता, लोटस बॉलीवुड़ टावर, 12ए/1604, सैक्टर–100, नोएडा–201303
4.	14.06.2016	श्री डी0सी0 तिवारी, बी–15 गामा –I, ग्रेटर नोएडा
5.	19.06.2016	पं0 दिनेश चंद शर्मा, ए–447, सैक्टर–47, नोएडा–201303
6.	10.10.2016	श्री अनिल कुमार शर्मा, टाइप 3/9 के0वी0एस0 स्टाफ क्वार्टस, सै0–33, नोएडा
7.	10.10.2016	श्री सुशील शुक्ला, ए–24, सैक्टर–49, नोएडा
8.	05.11.2016	श्री गुलशन कुमार, ए–284, सैक्टर–47, नोएडा
9.	15.01.2017	महिला मंडल बी ब्लॉक, सैक्टर–23, नोएडा

तुलसी जयंती समारोह एवं श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ

क्र.सं.	तिथि	कार्यक्रम	स्थान	कथा व्यास
1.	15.04.2016	श्रीराम जन्म महोत्सव	अग्रसेन भवन, सै0–33,नोएडा	आचार्य बैजूनाथजी महाराज
2.	10.08.2016	तुलसी जयंती समारोह	श्रीराम मन्दिर, सी ब्लॉक, सैक्टर–36, नोएडा	मानस मर्मज्ञ पं॰ लक्ष्मीनारायण शर्मा
3.	27.08.2016	श्रीराम कथा (एक दिवसीय)	"	डॉ0 रामगोपाल तिवारी, 'मानस रत्न'
4.	15.12.2016 से 21.12.2016	श्रीराम कथा (सप्त दिवसीय)	"	श्रीमती अखिलेश्वरी देवी, 'मानस माधुरी'

इस अंक में

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अध्यक्ष की ओर से		3
2.	समिति के सदस्यों की सूची		7
3.	पाठकों के विचार		9
4.	श्रीराम जन्ममहोत्सव की झलकियाँ	कथा व्यास : आचार्य बैजूनाथजी महाराज	13
5.	तुलसी जयंती समारोह	कथा व्यास : मानस मर्मज्ञ लक्ष्मीनारायण शर्मा	19
6.	दोहे शबरी भक्त के	सरल शास्त्री	24
7.	एक दिवसीय श्रीरामकथा	कथा व्यास : डॉ0 रामगोपाल तिवारी 'मानस रत्न'	25
8.	जय रघुनंदन जय श्रीराम	श्रीमती मंजु बंसल	30
9.	सप्त दिवसीय श्रीरामकथा	कथा व्यास : श्रीमती अखिलेशवरी देवी, 'मानस माधुरी'	31
10.	राम नाम महिमा	सुश्री शारदा मिश्रा	36
11.	नामु राम को कलपतरु	श्री देवेन्द्र शर्मा	37
12.	भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ	डॉ0 रामगोपाल तिवारी	43
13.	असि रघुपति लीला उरगारी	आचार्य बैजूनाथजी महाराज	49
14.	रामहि केवल प्रेमु पिआरा	पं0 दिनेश चंद्र शर्मा	53
15.	भगवद् श्रीरामावतरणम्	श्री गोपाल सिंह	56
16.	भजिअ राम सब काम बिहाई	डॉ0 भगवानदास पटैरया	57
17.	कामहि नारि पिआरि जिमि	डॉ0 सहृदयनारायण उपाध्याय	63
18.	अनुकरणीय है 'राम' का चरित्र	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	71
19.	जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं	श्रीमती रीता कश्यप	77

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
20.	भजन की आवश्यकता	नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमान प्रसाद जी पोद्दार	81
21.	भगति तात अनुपम सुखमूला	वैद्य अच्युतकुमार त्रिपाठी	87
22.	विद्यावान गुनी अति चातुर	श्री जगत प्रसाद पालीवाल	91
23.	स्वर्ण लंका दहन का वैज्ञानिक पक्ष	श्री गोपाल कृष्ण फरलिया	95
24.	तात कैकइहि दोसु नहिं	श्रीमती राजवती देवी	99
25.	हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही	श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद	105
26.	जामवंत के बचन सुहाए	श्री रामजन्म सिंह	108
27.	तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा	श्रीमती कुसुम पटैरया	111
27.	हृदय राखि कोशलपुर राजा	श्री सोमदत्त गुप्ता	115
28.	संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी	डॉ0 राजाराम त्रिपाठी	117
29.	भय बिनु होइ न प्रीति	पं0 रामनरेश तिवारी	121
30.	श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति का वर्ष 2015–16 का आय–व्यय विवरण		123
31.	श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का वर्ष 2015–16 का आय–व्यय विवरण		124
32.	श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र		125
33.	श्रीरामशलाका प्रश्नावली		131
34.	विक्रमी संवत् 2074 के व्रत, पर्व, त्योहारों की सूची		134
35.	आरती एवं वन्दना		149
36.	श्रीरामचरितमानस पाठ के लिए आवश्यक सामग्री		156

विशेष : स्मारिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

सदस्यों की सूची

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
1.	**पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा**	**ए—447, सै0—47, नोएडा—201303**	**9811056467**	**अध्यक्ष**
2.	**डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी**	**1इ, वार्ड नं0 26, लक्ष्मीबाई रोड, देहरादून**	**09411714660**	**उपाध्यक्ष**
3.	**श्री देवेन्द्र सिंह अवाना**	**B 5/6, सामने C-4/106, सै0—31, नोएडा**	**9811602397**	**"**
4.	**डॉ0 भगवान दास पटैरया**	**डी—11, सै0—36, नोएडा**	**9899004263**	**महासचिव**
5.	**डॉ0 रविन्द्र कुमार शर्मा**	**593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली—110061**	**9911307799**	**सचिव**
6.	**श्री जे0के0 गुप्ता**	**सी—95, सै0—49, नोएडा**	**9810997834**	**कोषाध्यक्ष**
7.	**श्री लीलूराम वर्मा**	**सी—49, सै0—23, नोएडा**	**9312280743**	**कार्यकारी सदस्य**
8.	**श्री भिक्की लाल शर्मा**	**ए—105, सै0—20, नोएडा**	**9810836348**	**"**
9.	**श्री सूरजभान शर्मा**	**ए—141, सै0—20, नोएडा**	**8527132634**	**"**
10.	**श्री हुकमचन्द्र शर्मा**	**गली नं0—3C/7, बड चौक, ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा**	**9213999744**	**"**
11.	**श्री विनोद शर्मा**	**ए—19, सै0—22, नोएडा**	**9891117721**	**"**
12.	**श्री सुभाषचन्द्र मित्तल**	**865, जोशी रोड, करोल बाग, दिल्ली**	**9210364442**	**"**
13.	**श्रीमती नीलम श्रीवास्तव**	**एम—126, सै0—25, नोएडा**	**8800439949**	**"**
14.	**श्री शम्भू दत्त शर्मा**	**जी—2/3, शताब्दी एन्कलेव सै0—49, नोएडा**	**9868101502**	**"**
15.	**श्री अश्विनी कुमार भारद्वाज**	**बी—365, सै0—92, नोएडा—201305**	**9999533891**	**"**
16.	**श्री सी0एस0 भोगल**	**सी—2/103, सै0—36, नोएडा**	**9811026745**	**"**
17.	डॉ0 मनोज कुमार पटैरया	25/3, सै0—1, पुष्प विहार, नई दिल्ली	9868114548	आजीवन सदस्य
18.	श्री लक्ष्मी नारायण	60, मातेश्वरी वार्ड नं0 11, नौ गाँव, (छतरपुर) म0प्र0	9893772149	"
19.	श्री कृष्ण कुमार मिश्रा	12/250, कोटेश्वर नगर, पो0 रविशंकर यूनिवर्सिटी, (R.S.U.) जिला—रायपुर—492010	9406379229	"
20.	श्री देवेन्द्र कुमार रावत,	266, वार्ड नं0 7, स्नेहल नगर, वर्धा (महाराष्ट्र)	9423645351	"
21.	श्री भगवानदास पाठक	शीतल डायमंड, ए.के. रोड, हीरानगर, सूरत	9909253797	"
22.	श्री रविशंकर चतुर्वेदी	रो हाउस, बी—1, वस्तुभूमि, सीगेहाली, काडूगोडी, बंगलौर—560067	9945169080	"

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
23.	श्री लीले सिंह प्रधान	ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा	9213664668	आजीवन सदस्य
24.	श्री विशम्बर दयाल शर्मा	ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा	9289265996	"
25.	श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता	एफ—8, सै0—20, नोएडा	9810464009	"
26.	श्री राधेश्याम शर्मा	ए—55, सै0—27, नोएडा	9999930102	"
27.	श्री मांगेराम भारद्वाज	ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा	9999232019	"
28.	श्री रामेश्वर दत्त शर्मा	ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा	9953508132	"
29.	श्री रणजीत सिंह विष्ट	एफ—110, सै—20, नोएडा	9650324529	"
30.	श्री भीम सिंह	मोती मैमोरियल, दुर्गा पार्क, पो0—वसुन्धरा ग्राम—दल्लूपुरा, दिल्ली—110096	9810181724	"
31.	श्रीमती कुसुम पटैरया	डी—11, सै0—36, नोएडा	9811201847	"
32.	श्री ए.के. सक्सेना	एच—329, बीटा—II, ग्रेटर नोएडा	9540274589	"
33.	श्री देबीचरन शर्मा	बी—109, सै0—22, नोएडा	9350859122	"
34.	वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी	एच 129, सै0—41, नोएडा	9868943638	"
35.	श्री वेद प्रकाश बंसल	ए 33, सै0—19, नोएडा	9350732724	"
36.	श्री रघुनाथ प्रसाद शर्मा	बी—10A—7 B, सै0—34, नोएडा	9899797090	"
37.	श्री सतीश चन्द्र शर्मा	बी 170 B, सै0—26,नोएडा	8800969798	
38.	श्री सुरेन्दर कुमार ठक्कर	बी—69, सै0—52, नोएडा	9891445905	"
39.	श्री लाल मोहन चौधरी	ए—390, सै0—47, नोएडा	9899057335	"
40.	श्री अमर सिंह सेंगर	ए—162, सै0—20, नोएडा	0120—2440128	"
41.	श्री भूनिधि शर्मा	डी—185, सै0—49, नोएडा	9871199809	"
42.	श्री श्रीपाल अवाना	ए—286, सै0—47, नोएडा	9210638386	"
43	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	216, जी0जी0 हॉस्टल वाली गली होशियारपुर, सै0—51, नोएडा	9311384212	"
44	श्री यशपाल सिंह	बी—19, सै0—49, नोएडा	9810339398	"
45.	श्री सुरेन्द्र पाल शर्मा	226—ई, पॉकेट—1, मयूर विहार—1, नई दिल्ली—110091	9971430274	"
46.	श्रीमती मधुमालती	बी—69, सै0—52, नोएडा	9891707373	"
47.	श्री विद्याराम अवाना	एच—7, सै0—27, नोएडा	9891960087	"
48.	श्रीमती भारती चतुर्वेदी	बी—2/721, कैलाश धाम, सै0—50, नोएडा	9650990257	"
49.	श्री शिवकुमार शर्मा	ए—100, सै0—33, नोएडा	9871636341	"
50.	आचार्य योगेन्द्र पाण्डे	श्रीराम मन्दिर, सै0—36, नोएडा	9810479542	"
51.	श्रीमती अर्चना शर्मा	बी—2/113, ब्लॉक नं0 8, कैलाशधाम अपार्टमैंट, सै0—50, प्लाट नं ई01, नोएडा	9968422229	"
52.	श्री महावीर प्रसाद त्यागी	डी—61, सै0—49, नोएडा	9810403264	"

पाठकों के विचार

स्मारिका सद्गुरु स्वरूप

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति द्वारा प्रकाशित वार्षिक स्मारिका एक गहन चिन्तन युक्त शोध ग्रन्थ की तरह है, क्योंकि इसमें विशिष्टतम मानस मनीषियों द्वारा श्रीरामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगानुसार तुलसी साहित्य एवं अन्य सद्शास्त्रों के सैद्धान्तिक सूक्ष्म विवेचन प्रकाशित किए जाते हैं।

यह स्मारिका मानव जीवन के परम लक्ष्य की ओर सही दिशा में अग्रसर है, अर्थात् आज के विकृत वातावरण में जहाँ किसी शरीरधारी गुरु पर श्रद्धावान होना धोखे और खतरे से खाली नहीं है, वहीं पर यह स्मारिका सच्चे सत्संग एवं आध्यात्मिक ज्ञान विकास के सही मार्गदर्शन से सद्गुरु स्वरूप सिद्ध हो चुकी है।

स्मारिका में वर्ष भर के विविध मुहूर्त, पर्व, त्योहारों का तिथि पत्रक (लघु पंचाग), श्रीरामशलाका, प्रश्नावली तथा अनुष्ठानिक प्रयोग हेतु मंत्र, विधि एवं मानस मंत्रों के साथ आरती संग्रह प्रकाशन से स्मारिका को सर्वजन सुखाय एवं सर्वजन हिताय तथा अत्यन्त उपयोगी बनाने के लिए समिति के सद्प्रयास सर्व दृष्टि से अत्यंत सराहनीय एवं सफल है।

डॉ0 रामगोपाल तिवारी, मानस रत्न, चित्रकूट धाम, फोन : 09451142792

स्मारिका के लेख सामयिक

श्रीरामचरितमानस स्मारिका प्राप्त हुई। मानस मर्मज्ञ विद्वानों के सामयिक आलेख पठनीय व आचरणीय हैं, समाज एवं सभ्यता को नूतन दिशा प्रेरक भी हैं। कलियुग में राम नाम और मानस की सीख जीवन को धन्य कर देने में पूर्णतया सक्षम है। स्मारिका का एक अंक इससे पहले भी प्राप्त हुआ था। मानस स्मारिका हमारे ग्रन्थागार में संग्रहित है तथा मानस प्रेमियों के पठन–पाठन हेतु उपलब्ध है। आपने स्मरण रखते हुए उक्त धार्मिक संग्रहणीय ग्रन्थ भेजा, एतदर्थ शतशः साधुवादः!

आचार्य अवस्थी, वैदिक अध्यात्म चेतना मिशन, पिपराली रोड, सीकर (राज0)

अत्यंत रोचक है स्मारिका

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति की स्मारिका का 23वाँ अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। स्मारिका अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक व प्रेरणा से परिपूर्ण है। आपके कठोर व अथक परिश्रम से यह अत्यन्त सुन्दर बन पाई है।

'गागर में सागर' भरने के लिए बधाई। सहयोग राशि का चैक भी संलग्न है।

डॉ0 प्रमोद कुमार पालीवाल, म0 नं0–44, सैक्टर–2, रोहतक, हरियाणा–124001

सांस्कृतिक दस्तावेज

श्रीरामचरिमानस सत्संग समिति की स्मारिका का प्रकाशन सामयिक, विद्वतापूर्ण एवं एक सांस्कृतिक दस्तावेज है। यह भौतिकवादी युग में एक प्रकाश स्तम्भ है। 'मानस' एक राष्ट्रीय आइना है। आजतक 629 भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। **आत्ध्यात्मिक गुरु महेश योगी ने संयुक्त राज्य अमेरिका में 'वैदिक सिटी की स्थापना कर राम (Raam) मुद्रा को कानूनी मान्यता दिला दी। नोटों पर 18 लिपियों में राम मुद्रित है। नोट के एक ओर कल्पवृक्ष-कामधेनु है तथा दूसरी ओर श्रीराम के चित्र हैं।** श्रीराम को अन्तर्राष्ट्रीय दर्जा प्रदान करने वालों का भी जिक्र पत्रिका में होना देश के लिए गौरव की बात होगी। स्मारिका में मेरा भी लेख प्रकाशित करने हेतु आपको साधुवाद।

श्री रामजन्म सिंह, मो0 : 9839453851 ग्राम+पोस्ट दामा, तहसील मेंहनगर, जिला आजमगढ़, उ0प्र0

स्मारिका ज्ञानवर्धक है

हम विगत तीन वर्षों से श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति और अब श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका पढ़ रहे हैं। आप समय पर स्मारिका भिजवाते हैं, इसके लिए हम आपकी समिति का आभार व्यक्त करते हैं। **स्मारिका में प्रकाशित एक-एक पंक्ति ज्ञानवर्धक है।** मैं चंडीगढ़ के सैक्टर–29 बी स्थित बाल शिव मंदिर में भक्तों को श्रीरामकथा सुनाता हूँ। स्मारिका के लेख भी सुनाता हूँ। अगले अंकों के लिए भी मैंने सहयोग राशि चैक द्वारा आपकी समिति के खाते में जमा करा दी है। आशा है आप हमें स्मारिका भेजते रहेंगे।

श्रीमती चंद्रमुखी एवं राजेन्द्र पाल, 1471, सैक्टर–29 बी, चंडीगढ़, पिन – 160030

अद्‌भुत प्रेरणा स्रोत

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 23वाँ अंक प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित लेख अद्‌भुत प्रेरणास्रोत हैं और जीवन के हर मोड़ पर पथ प्रदर्शन करते हैं। सभी लेखकों एवं सम्पादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद।

सेवकराम जगवानी, फ्लेटस 112,प्लॉट सं0 1ए, सैक्टर–2, द्वारका, नई दिल्ली–110075

सभी लेखों में आनन्ददायी भाव

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 23वाँ अंक एवं श्रीरामकथा की एक प्रति भी प्राप्त हुई। बहुत–बहुत आभार। स्मारिका में विद्वानों द्वारा रामचरितमानस के कुछ प्रसंगों पर भावपूर्ण और भक्तिपूर्ण लेख पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। जिस प्रकार जौहरी खरड़ को निखार कर उसे हीरा पन्ना बना देता है उसी प्रकार इन विद्वानों के सतत् प्रयास से तुलसीदास द्वारा रचित मानस के प्रसंगों को निखारा गया है। मैंने पिछली 3 स्मारिकाओं के लेख पढ़े हैं और सबमें आनन्ददायी भाव पाये हैं। सहयोग राशि हेतु चैक भिजवा रहा हूँ। कृपया स्वीकार करें और भविष्य में भी प्रकाशित होने वाली स्मारिका भेजने का कष्ट करें। सधन्यवाद!

बनवारीलाल गुप्ता, 30 एवरेस्ट कालोनी, लाल कोठी, टोंक रोड़, जयपुर–302015

गूढ़ विषय को समझाने का अनुरोध

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका के अंक 23 में क्र0सं0 16 पर मान्यवर श्रीजगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल' द्वारा "नानापुराणनिगमागम सम्मत् यद्" में अलंकृत प्रभु श्रीराम द्वारा शबरी को बतलाई गई 'नवधा–भक्ति' समाज के लिए न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से कल्याणकारी है बल्कि व्यावहारिक पथ प्रदर्शक निर्देशिका भी है। इस गूढ़ विषय को 'सरल' जी विस्तार से और सरल शब्दों में मार्गदर्शक के रूप में समझाएँ तो अतिकृपा होगी।

सोमदत्त गुप्ता, मो0 : 9313787428 सी–7 एफ, वाटिका अपार्टमैन्टस, मायापुरी, नई दिल्ली–110064

समाज के लिए उपयोगी सामग्री

स्मारिका का 23वाँ अंक प्राप्त कर प्रसन्नता हुई। मैंने इसको आद्योपान्त पढ़ा तथा अन्य लोगों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित किया। इसमें मुद्रित लेख समाज के नैतिक स्तर में वृद्धि हेतु सहायक सिद्ध होंगे। समग्र रूप में यह कहा जा सकता है कि स्मारिका में समाज के उत्थान के लिए भरपूर सामग्री है।

देवेन्द्र कुमार रावत, 266, वार्ड नं0 7, स्नेहल नगर, वर्धा (महाराष्ट्र)

समाज के लिए स्मरणीय

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की पत्रिका का 23वाँ अंक प्राप्त हुआ। यह एक सराहनीय एवं अनुपम कृति है तथा समाज के लिए संग्रहणीय एवं प्रेरणास्रोत है। इसके सभी लेख समाज के नैतिक उत्थान में सहायक सिद्ध होंगे। आप सभी सज्जन बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं।

राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी, 1 ई, लक्ष्मीबाई रोड़, देहरादून

स्मारिका : भक्ति-ज्ञान-वैराग्य से परिपूर्ण

गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस की चौपाइयों पर आधारित लेख श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका के 23वें अंक में पढ़कर ऐसा अनुभव हुआ कि ये लेख भक्ति, ज्ञान एवं वैराग्य की भावना से परिपूर्ण हैं। इनमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्शों से जनसामान्य को प्रेरणा प्राप्त होगी तथा जिससे मनुष्य परम शान्ति प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। ऐसे सारगर्भित लेख प्रकाशित करने हेतु 'श्रीरामचरिमानस राष्ट्रीय समिति' के संपादक मंडल एवं सभी सदस्यों एवं लेखकों को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

डॉ0 हरिहर राम त्रिपाठी, गाँव–धुरियापार, पो0 उरूवा बाजार, जिला गोरखपुर, पिन–273407
फोन : 9651597305

स्मारिका प्रकाशन प्रशंसनीय है

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का प्रकाशन स्तुत्य एवं पुण्य कार्य है। हम इस हेतु इसके संपादक मंडल को अंतःकरण से साधुवाद एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं। हम अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं कि हमें भक्ति–ज्ञान–वैराग्य से ओतप्रोत पत्रिका पढ़ने हेतु प्राप्त होती है।

पं0 राजेश कुमार तिवारी, झाँसी (उ0प्र0) फोन : 9451131195

सहयोग राशि भेजने वालों को साधुवाद

स्मारिका प्रकाशनार्थ हमें विज्ञापन दाताओं एवं श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के सदस्यो के अतिरिक्त दिल्ली, रोहतक (हरियाणा), भीलवाड़ा, कोटा, सीकर, जैसलमेर, जूही और जयपुर (राजस्थान), चंडीगढ़, कैमूर (बिहार), चंद्रपुर (महाराष्ट्र), भोपाल, नरसिंहपुर, मुरैना, (मध्य प्रदेश), सुरेन्द्र नगर (गुजरात), कटक (उड़ीसा), गाजीपुर, मेरठ, एवं मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश), एरोड (तमिलनाडु), भाटापारा (छत्तीसगढ़) के पाठकों से सहयोग राशि प्राप्त हुई है। हम विज्ञापन दाताओं एवं उपर्युक्त पाठकों को साधुवाद ज्ञापित करते हुए आशान्वित हैं कि भविष्य में भी स्मारिका के प्रचार–प्रसार हेतु इसी तरह सहयोग करके हमारा उत्साह बढ़ाते रहेंगे।

लेखकों के लिए, मुद्रक (प्रिंटर) के सुझाव

1. कृपया अपने लेख, MS Word या Corel Draw 13 साफ्टवेयर में टाईप करें।
2. टाइप के लिए Dev-10 या Kruti-10 फॉन्ट का प्रयोग करें यह फॉन्ट सभी टाइप सेन्टर्स पर उपलब्ध होता है।
3. लेख हमें vinit.tyagi.gzb@gmail.com पर भेजें एवं bpateria@gmail.com पर cc करें।
4. ई–मेल में Subject में स्मारिका व लेख का नाम अवश्य डालें। उदाहरणार्थ 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' लेख का Subject इस तरह होगा Navmi Smarika : Maryada Purusaottam Ram

श्रीराम जन्म महोत्सव की झलकियाँ

कथा व्यास : **आचार्य पं0 बैजूनाथ जी महाराज,**
फोन : 9212033198

भावी पीढ़ी में सुसंस्कार जागृत करने और सुसंस्कारित सज्जनों में नैतिक स्तर सुदृढ़ करने के उद्देश्य से हम प्रतिवर्ष श्रीराम जन्ममहोत्सव आयोजित करते आ रहे हैं। इसी शृंखला में 26 वाँ महोत्सव दिनाँक 15 अप्रैल 2016 को महाराजा अग्रसेन भवन, सैक्टर 33, नोएडा में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभांरभ समिति के अध्यक्ष पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा द्वारा श्रीगणेश पूजन से हुआ। तत्पश्चात् श्रीभगवन्नाम संकीर्तन तथा भजन प्रस्तुत किए गए। इस पावन पर्व पर आचार्य पं0 बैजूनाथ जी महाराज ने श्रोताओं को श्रीरामकथामृत पान कराते हुए श्रीराम जी के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा प्रदान की। उनके भावपूर्ण प्रवचन के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

एक बार त्रेता युग में भगवान शंकर कुंभज ऋषि के आश्रम में श्रीरामकथा श्रवण करने गए।

एक बार त्रेता जुग माहीं। संभु गए कुंभज रिषि पाहीं।।

(1/48/1)

श्रीरामचरितमानस के कथा प्रसंगों में एक विशेषता है कि जहाँ भी 'एक बार' शब्द का प्रयोग होता है वहाँ पर कुछ न कुछ विशेष घटना घटित होती है और इस प्रसंग में भी यही हुआ। भगवान शंकर कुंभज ऋषि के आश्रम से जब सती जी के साथ लौट रहे थे, उसी समय अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम विरह लीला कर रहे थे क्योंकि उसी समय रावण ने सीता जी का हरण कर लिया था। शिवजी ने दूर से ही 'जय सच्चिदानंद' कह कर प्रणाम किया। उनको इस प्रकार एक राजकुमार को प्रणाम करते देखकर सती जी को संदेह हो गया और वे तर्क वितर्क करने लगीं कि जो घट–घट व्यापी ब्रह्म है वह नर शरीर कैसे धारण कर सकता है? और यदि ये विष्णु का अवतार है तो वे भी शिव जी की तरह सर्वज्ञ हैं, तो फिर वे एक अज्ञानी की तरह अपनी खोई हुई पत्नी को इस तरह क्यों खोज रहे हैं?

ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद।।

(1/50)

बिष्नु जो सुर हित नरतनु धारी। सोउ सर्बग्य जथा त्रिपुरारी।।
खोजइ सो कि अग्य इव नारी। ग्यानधाम श्रीपति असुरारी।।

(1/51/1–2)

शिवजी ने बहुत प्रकार से समझाया किन्तु सती जी की तर्क बुद्धि इतनी प्रबल थी कि उनका संदेह दूर नहीं हुआ। सद्‌गुरु के वचनों में विश्वास करके ही ईश्वर का अनुभव किया जा सकता है तर्क बुद्धि से नहीं। शिव जी ने समझ लिया कि यह तो हरि माया का ही खेल है जो उनके समझाने पर भी सती को विश्वास नहीं हो रहा है। तब उन्होंने परीक्षा लेने की सलाह दी। सती जी ने सीता जी का वेश बनाकर करके श्रीराम जी की परीक्षा ली, इस कारण शिव जी ने उनका पत्नी रूप में त्याग कर दिया। तत्पश्चात् सती जी ने अपने पिता दक्ष के यहाँ यज्ञ में शिवजी का अपमान देखकर शरीर त्याग दिया और हिमवंत के घर पार्वती रूप में जन्म लिया। नारद जी की प्रेरणा से उन्होंने शिव जी को पति रूप में पाने के लिए कठोर तप किया। उनकी अर्द्धांगिनी बनने पर उन्होंने एक दिन अपने पूर्व जन्म की स्मृति से फिर वही प्रश्न किया, पर इस बार प्रश्न पहले से भिन्न था। सती रूप में उन्होंने परीक्षा लेते समय श्रीराम जी का प्रभाव देख लिया था। अतः उन्हें यह विश्वास हो गया कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक, कण–कण में व्याप्त ब्रह्म नर शरीर धारण कर सकता है, पर इसका क्या कारण हो सकता है यह संदेह बना रहा। अतः अब वे शिवजी से यह प्रश्न करतीं हैं।

नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू। मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू॥

(1 / 120 / 7)

उमा के इस प्रश्न को सुन कर शिव जी हर्षित हुए और जो 'रामचरित्र' उन्होंने रचकर अपने हृदय में धारण किया था, उसे पूर्ण रूप से पार्वती जी को सुनाया। उन्होंने समझाया कि कण–कण में व्याप्त निर्गुण ब्रह्म के सगुण–साकार होने का कोई एक विशेष कारण है, ऐसा नहीं कहा जा सकता है, पर मुख्य रूप से वे अपने भक्तों के प्रेम वश मानव शरीर धारण करते हैं।

हरि अवतार हेतु जेहि होई। इदमित्थं कहि जाइ न सोई॥

(1 / 121 / 2)

ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना॥
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी॥

(1 / 13 / 4–5)

शिवजी ने बताया कि 'जय और विजय' नामक हरि के दो द्वारपाल थे। सनक–सनंदन–सनत–कुमार के श्राप से वे राक्षस हुए और उनके उद्धार हेतु हरि का अवतार हुआ। एक बार नारद जी ने श्राप दिया जिसके कारण ईश्वर ने नर शरीर धारण किया। पार्वती जी यह सुनकर आश्चर्य चकित हो गई क्योंकि नारद जी ज्ञानी है और विष्णुभगत भी है। अतः उन्होने शिवजी से यह प्रश्न किया।

कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा॥

(1 / 124 / 7)

इस प्रश्न के उत्तर में शिवजी ने नारद–मोह की कथा सुनाते हुए कहा कि जब भक्त के मन में अभिमान का अंकुरण हो जाता है तब भगवान ऐसी लीला स्वयं रचते है कि जिससे भक्त का अभिमान दूर हो

जाए भले ही वे स्वयं श्रापित हो जाएँ। नारद जी के प्रसंग में यही हुआ। स्वयं भगवान ने आकाशवाणी के माध्यम से यह कहा था।

नारद बचन सत्य सब करिहउँ। परम सक्ति समेत अवतरिहउँ।।

(1 / 187 / 6)

निर्गुण ब्रह्म द्वारा नर रूप धारण करने की कथा सुनाते हुए शिव जी ने पार्वती जी को बताया कि मनु–शतरूपा ने कठोर तप किया। उनके तप के दो स्वरूप थे। पहले वे 'वासुदेव' के द्वादश अक्षर मंत्र का जप कर रहे थे।

द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग।।
बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग।।

(1 / 143)

इस मंत्र जप के साथ ही अब वे दूसरे स्वरूप अर्थात् उस 'परम प्रभु' के जो सबके मूल कारण हैं, दर्शनार्थ उग्र तप करने लगे। उनके तप से प्रसन्न होकर 'ब्रह्मा–विष्णु–महेश' कई बार आए और वर माँगने को कहते रहे पर वे धैर्य पूर्वक अखिल ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमात्मा, जो ब्रह्मा–विष्णु–महेश के भी कारण है, के दर्शनार्थ डटे रहे। उनके इस प्रेम को देखकर वह 'परम प्रभु' श्रीराम मनु–शतरूपा के समक्ष प्रकट हो गए।

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना।।

(1 / 146 / 8)

मनु जी ने विचार किया कि इस अनुपम झाँकी के निरंतर दर्शन हेतु यही एक उपाय है कि भगवान उनके पुत्र बनकर आएँ और इसी विचार से उन्होंने यह वरदान माँग लिया।

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।।

(1 / 149)

श्रीराम जी के रूप में प्रकट अखिल ब्रह्माण्ड नायक ने 'एवमस्तु' अर्थात ऐसा ही हो, कहकर उन्हें वरदान दे दिया। समयानुसार मनु शतरूपा शरीर त्याग कर स्वर्गलोक चले गए और ईश्वर के विधान के अनुसार वे अयोध्या पुरी में दशरथ और कौशिल्या के रूप में इस धराधाम पर आए। रावण के आतंक से जब पृथ्वी, गौ, विप्र, संत, देवता सभी दुखी हो गए और उन्होंने अपने कष्ट निवारणार्थ प्रार्थना की तब अखिल ब्रह्माण्ड नायक, कण–कण में व्याप्त ब्रह्म ने आकाशवाणी के माध्यम से बताया कि वे अयोध्यापुरी में महाराज दशरथ और माँ कौशिल्या के यहाँ अपने अंशो संहित अवतार लेंगे। सभी देवता तब अपने–अपने लोक को चले गए। महाराज दशरथ वृद्धावस्था की ओर अग्रसर हो रहे थे, किन्तु उनके कोई संतान नहीं हुई। तब उन्होंने गुरु वशिष्ठ जी से अपना दुखड़ा सुनाया। उन्होंने श्रृंगी ऋषि को बुलवाकर पुत्रेष्ठि यज्ञ करवाया।

पूर्ण आहुति के साथ ही अग्निदेव ने प्रकट होकर प्रसाद स्वरूप खीर देते हुए कहा कि आपका कार्य सफल हुआ, अब यह खीर यथायोग्य रानियों में बाँट दीजिए।

जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा।।
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई।।

(1 / 189 / 7–8)

राजा दशरथ ने यथायोग्य रानियों को खीर का प्रसाद दिया जिससे वे गर्भवती हो गईं और जब प्रभु के प्रकट होने का अवसर आया तब सभी देवता अयोध्यापुरी में आकर फूलों की वर्षा करके उनके आगमन की प्रार्थना करने लगे। तत्पश्चात परम प्रभु श्रीराम माँ कौशिल्या के कक्ष में प्रकट होते हैं।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी।।

(1 / 192 / छंद)

माँ कौशिल्या विनती करतीं हैं जिसे सुनकर प्रभु शिशु रूप में आ जाते हैं और रुदन करने लगते हैं। शिशु रुदन सुनकर पूरा प्रासाद प्रसन्नता से झूम उठता है और महाराज दशरथ परमानंद में डूब जाते हैं तथा बाजे बजवाने का आदेश देते हैं।

परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा।।

(1 / 193 / 6)

तत्पश्चात् माता कैकेई के एक और माता सुमित्रा के दो पुत्र हुए। चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण था। फूलों की वर्षा के साथ बधाई गीत गाए गए। इस अवसर पर बालस्वरूप श्रीराम जी के दर्शन करने हेतु शिवजी भी आए। पार्वती जी को कथा सुनाते हुए वे कहते हैं –

औरउ एक कहउँ निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी।।
काकभुसुंडि संग हम दोऊ। मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ।।
परमानंद प्रेमसुख फूले। बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले।।

(1 / 196 / 3–5)

समयानुसार गुरु वशिष्ठ पधारे और चारों पुत्रों का नामकरण किया। कौशिल्या जी के पुत्र का नाम 'राम', कैकेई के पुत्र का नाम 'भरत' और सुमित्रा जी के पुत्रों के नाम 'लक्ष्मण' और 'शत्रुघ्न' रखे। नामों का अर्थ गुरुजी ने इस प्रकार समझाया –

जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा।।
बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।।
जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा।।

लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार।।

(1/197)

पार्वती जी के इस प्रश्न के उत्तर में कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक कण–कण में व्याप्त ब्रह्म किस कारण से नररूप धारण करते हैं, शिव जी उन्हें राम कथा सुना रहें हैं। दशरथ नंदन श्रीराम जी ही अखिल ब्रह्माण्ड नायक निर्गुण ब्रह्म हैं, इस तथ्य की पुष्टि हेतु शिव जी ने पार्वती जी को जो दो प्रसंग सुनाए वे इस प्रकार हैं।

(1) जब श्रीराम–लक्ष्मण, मुनि विश्वामित्र के साथ राजा जनक के निमंत्रण पर जनकपुरी जाते हैं तब उनका प्रथम बार दर्शन करने पर ब्रह्मज्ञानी राजा जनक मोहित हो जाते हैं। वे स्पष्ट रूप से मुनि विश्वामित्र जी से पूछते है कि क्या ये साक्षात् ब्रह्म के अवतार हैं क्योंकि इनके स्वरूप के दर्शन से उनका मन जो सदा ब्रह्मलीन रहता है, इनमें अनुरागी हो गया है।

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक। मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक।।
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय बेष धरि की सोइ आवा।।
सहज बिरागरूप मनु मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा।।
ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ।।
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा।।

(1/216/1–5)

राजा जनक के ऐसे वचन सुनकर मुनि विश्वामित्र जी ने बताया कि जो उन्होंने कहा, वह सत्य है क्योंकि जहाँ तक प्राणीमात्र का प्रश्न है ये सभी को इसी प्रकार से प्रिय है। आगे इस तथ्य की कुछ और व्याख्या करना चाहते थे पर श्रीरामजी मन ही मन मुस्कुराने लगे और तब विश्वामित्रजी समझ गए कि श्रीरामजी इनको अपना असली परिचय अभी नहीं बताना चाहते हैं, अतः उन्होंने यह कहकर कि ये दोनों राजा दशरथ के पुत्र हैं, वार्ता को विराम दिया।

ये प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी। मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी।।
रघुकुल मनि दसरथ के जाए। मम हित लागि नरेस पठाए।।

(1/216/7–8)

(2) दूसरा प्रसंग उस समय का है जब सीता हरण के पश्चात् श्रीराम–लक्ष्मण किष्किंधा पर्वत की ओर जाते हैं। बालि के त्रास से उस पर्वत पर निवास कर रहे सुग्रीव, हनुमानजी को उनके बारे में जानकारी लेने को भेजते हैं। श्रीहनुमानजी विप्र वेश में आकर प्रश्न करते हैं। उन्होंने प्रश्न किया कि क्या आप तीन देवों अर्थात् ब्रह्मा–विष्णु–महेश में से कोई हैं। पर श्रीरामजी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने फिर प्रश्न किया

कि क्या आप नर–नारायण हैं। तब भी श्रीरामजी कुछ नहीं बोले। हनुमानजी ने विचार किया कि इसके आगे तो कण–कण में व्याप्त अखिल ब्रह्माण्ड नायक ब्रह्म ही हो सकते हैं। तब उन्होंने यह प्रश्न किया –

जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार।
की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार।।

(4/1)

इस प्रश्न के उत्तर में श्रीरामजी अपना परिचय देते हैं कि वे अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र हैं। यह सुनकर हनुमानजी को पूर्व का वह प्रसंग याद आ गया जिसमें आकाशवाणी के माध्यम से यह कहा गया था कि अयोध्या में राजा दशरथ और कौशिल्या के यहाँ मैं अवतार लूँगा। अब श्रीहनुमानजी अपने परम प्रभु को पहचान कर उनके चरणों पर गिर पड़ते हैं –

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना।।
पुलकित तन मुख आव न बचना । देखत रुचिर बेष कै रचना।।
पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही।।

(4/2/5–7)

इस कथा प्रसंग के पश्चात् श्रीराम नाम संकीर्तन के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्नता की ओर अग्रसर हुआ। **'श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति'** की स्मारिका का 23वाँ अंक विमोचित हुआ। समिति के महासचिव डॉ0 भगवानदास पटैरया ने स्मारिका के संबंध में बताया कि इसमें श्रीरामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों पर शोधपूर्ण लेख प्रकाशित किए गए हैं। साथ ही पूरे वर्ष के व्रत, त्योहार, पर्व आदि का प्रामाणिक विवरण दिया गया है। श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्रों का संकलन तथा मंत्रों को सिद्ध करने की विधि भी वर्णित हैं। इन मंत्रों के प्रभाव से भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी मनोरथ पूर्ण हो सकते हैं।

इस अवसर पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी श्रीगणेश शंकर त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे गौरवशाली राष्ट्र में भगवत् अवतारों अथवा महापुरुषों के जन्म मनाने की प्रथा है इससे हमें उनके पावन चरित्रों का अनुसरण करने की प्रेरणा मिलती है। यह बड़े हर्ष का विषय है कि श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति और अब श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति श्रीराम जन्ममहोत्सव विगत 26 वर्षों से आयोजित कर रही है। अब विदेशी परम्परा के अनुसार हम अपना और अपने बच्चों का जन्मदिन मनाने लगे हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है पर हमें अपनी राष्ट्रीय परंपरा को ध्यान में रखते हुए भगवान के अवतारों और महापुरुषों के जन्मदिन भी अवश्य मनाने चाहिए। समिति अध्यक्ष पं0 दिनेश चंद्र शर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। इस महोत्सव में श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के अधिकांश सदस्य तथा अग्रवाल मित्र मंडल के पूर्व अध्यक्ष श्री परमात्माशरण बंसल, जागरण पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य श्री प्रमोद कुमार, मदर टैरेसा पब्लिक स्कूल के संस्थापक श्री आनन्द स्वरूप शर्मा उपस्थित थे। आरती एवं भोजन प्रसाद (भण्डारे) के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

तुलसी जयंती समारोह

कथा व्यास : **मानस मर्मज्ञ पं0 लक्ष्मी नारायण शर्मा,**
मो. : 9810094939

श्रावण शुक्ल सप्तमी बुधवार तदनुसार 10 अगस्त सन् 2016 को सैक्टर–36, नोएडा के श्रीराम मंदिर में **'तुलसी जयंती समारोह'** आयोजित हुआ। इस अवसर पर मानस मर्मज्ञ पंडित श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा ने गोस्वामी तुलसीदासजी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने 12 ग्रन्थों की रचना की जिसमें 'श्रीरामचरितमानस' तो श्रीरामजी का ग्रन्थावतार ही है। जिस प्रकार हमारा यह स्थूल शरीर पंच तत्वों– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश से बना हुआ है इसी प्रकार से श्रीरामचरितमानस के सृजन में केवल पाँच विधाएँ नामशः श्लोक, सोरठा, दोहा, चौपाई और छंद प्रयुक्त हुई हैं यदि हम आदर्श परिवार, आदर्श समाज और आदर्श राष्ट्र या विश्व का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें श्रीरामचरितमानस में वर्णित आदर्शों का अनुसरण करना होगा। इस ग्रन्थ के श्रवण, मनन–चिंतन और आचरण को व्यवहार में लाने में ही सभी का कल्याण निहित है। यह मानव शरीर हमें बड़े भाग्य से प्राप्त हुआ है –

बड़ें भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।

(7 / 43 / 7)

चौरासी लाख योनियों में भोग भोगने के पश्चात् यह मानव तन बड़े भाग्य से मिलता है। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि हर आयु का मनुष्य अपने अंगुल के नाप से सिर्फ 84 अंगुल का होता है। अतः इस मानव शरीर को पाकर भगवान का भजन करते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए, क्योंकि बीता हुआ समय फिर कभी नहीं आएगा और यह काया इतनी जर्जर हो जाएगी कि भजन करने योग्य ही न रहेगी।

राम भजन कर प्राणी। काया तेरी हो रही पुरानी।।

ब्रह्माजी ने वशिष्ठजी को रघुकुल का गुरु बनने को कहा तो उन्होंने निवेदन किया कि गुरु को शिष्य का पाप भोगना पड़ता है, इस कारण वे गुरु नहीं बनना चाहते। तब ब्रह्माजी ने समझाया कि इस कुल में आगे चलकर अखिल ब्रह्माण्ड नायक ब्रह्म श्रीराम के रूप में अवतरित होंगे। यह सुनकर वशिठजी ने रघुकुल का पुरोहित बनना स्वीकार किया। आजकल तो गुरुओं की बाढ़ सी आ गई है। तथाकथित संत चेले बनाने के चक्कर में रहते हैं। शिष्य के पाप को गुरु भोगता है, इस सिद्धांत को जानते हुए नारदजी ने केवल 4 शिष्य बनाए जिनमें 2 बालक और 2 वृद्ध हैं। बालक हैं ध्रुव और प्रह्लाद जिन्होंने अपनी श्रद्धा–भक्ति से भगवान को प्रकट कर अपना जीवन सार्थक किया और संसारी प्राणियों के लिए भक्ति–गंगा बहाकर उसमें डूबने का अवसर दिया, दो वृद्ध शिष्य हैं महर्षि वाल्मीकि और महर्षि वेदव्यास। महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की और महर्षि वेदव्यास ने 18 पुराणों की रचना के पश्चात् स्वान्तः

सुखाय "श्रीमद्भागवत" की रचना की जो साक्षात श्रीकृष्ण भगवान का ग्रन्थावतार है।

श्रीरामचरितमानस में श्रीरामकथा के प्रारंभ से पहले शिवकथा का वर्णन है जिसका प्रारंभ 'एक बार' शब्द से होता है –

एक बार त्रेता जुग माहीं। संभु गए कुंभज रिषि पाहीं।।

(1/48/1)

श्रीरामचरितमानस में 'एक बार' शब्द 21 बार आया है और जब भी 'एक बार' शब्द का प्रयोग हुआ है तभी कोई न कोई घटना घटित हुई है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं।।

(1/189/1)

राजा दशरथ के मन में ग्लानि हुई कि मेरे कोई संतान नहीं हैं। वे गुरु वशिष्ठजी के पास गए और अपनी व्यथा सुनाई। गुरुजी ने पुत्रेष्ठि यज्ञ करवाया जिससे उन्हें चार पुत्र प्राप्त हुए। राजा दशरथ की उस एक बार की ग्लानि से जो घटनाक्रम चला उससे उन्होंने अखिल ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमात्मा श्रीराम को पुत्र रूप में पाया।

एक बार जननीं अन्हवाए। करि सिंगार पलनाँ पौढ़ाए।।

(1/201/1)

एक बार माता कौशिल्याजी ने शिशु श्रीरामजी को पलने में सुला दिया और खुद इष्टदेव की पूजा हेतु पकवान बनाने लगीं। इष्टदेव की पूजा करने गईं तो देखा कि राम लला प्रसाद पा रहे हैं। वे तुरंत दौड़कर पालने के पास गईं तो देखा कि वे सो रहे हैं। फिर पूजा गृह में गईं तो वहाँ भी वही दृश्य देखा। उनकी बुद्धि भ्रमित हो गई, यह देखकर कि मेरा पुत्र एक जगह सो रहा है और उसी समय वह दूसरे स्थान पर पकवान पा रहा है। माता को भ्रमित देखकर श्रीरामजी ने अपने मुख में उन्हें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के दर्शन कराए।

श्रीरामचरितमानस में 6 दम्पत्तियों की कथा है जिनमें दो दम्पत्ति ऐसे हैं जिनकी पत्नी ने पति को समझाया पर वे नहीं मानें और मृत्यु को प्राप्त हुए– तारा और बालि तथा मंदोदरी एवं रावण। दो गृहस्थी ऐसी हैं जिनमें पति ने पत्नी को समझाया पर वे नहीं मानी जिससे एक दम्पत्ति की पत्नी एवं एक दम्पत्ति के पति का देहावसान हुआ– सती और शिव तथा कैकेई एवं दशरथ। दो दम्पत्ति ऐसे हैं जिनके पति ने जो कुछ कहा पत्नी ने सहर्ष स्वीकार किया– शतरूपा एवं मनु तथा श्रीसीताराम। विस्तार से इनकी कथा पढ़िए – एक बार त्रेता युग में शिवजी श्रीरामकथा श्रवण करने के उद्देश्य से सतीजी के साथ कुंभज ऋषि के आश्रम गए।

एक बार त्रेता जुग माहीं। संभु गए कुंभज रिषि पाहीं।।

(1/48/1)

(1) शिवजी के आगमन पर कुभंज ऋषि ने उनका भरपूर स्वागत किया जिसे देखकर सतीजी को संशय हो गया कि यह वक्ता क्या कथा सुनाएगा जो श्रोता का इतना स्वागत कर रहा है। श्रीराम कथा प्रारम्भ हुई, सतीजी संशय के आसन पर बैठ गईं और शिवजी श्रद्धा के आसन पर। कथा श्रवणोपरान्त जब शिव–सती लौट रहे थे उसी समय श्रीरामजी विरह लीला कर रहे थे जिसे देखकर सतीजी को संशय हो गया। वास्तव में संशय रोग का एकमात्र उपचार है 'बहुकाल सत्संगा' –

तबहिं होइ सब संसय भंगा। जब बहु काल करिअ सतसंगा॥

(7 / 61 / 4)

शिवजी ने बहुत समझाया कि ये वही श्रीराम हैं जिनकी कथा कुंभज ऋषि ने सुनाई। जब सती नहीं मानी तब उन्हें परीक्षा लेने की सलाह दी गई। परीक्षा लेते समय सतीजी ने सीताजी का वेश धारण कर लिया जिसके कारण शिवजी ने उनका मानसिक त्याग कर दिया। इस घटना से दुखित हो सतीजी ने शिव अपमान न सह सकने के कारण अपने पिता के घर यज्ञ भूमि में ही अपना शरीर त्याग दिया।

(2) जब महारानी कैकेई ने महाराज दशरथ से श्रीरामजी को चौदह वर्ष का वनवास, एक वरदान के रूप में माँग लिया तब उन्होंने बहुत समझाया, हर प्रकार से समझाया। यहाँ तक कि उन्होंने कैकेई के पैर पकड़ कर विनती की –

गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी। जनि दिनकर कुल होसि कुठारी॥
मागु माथ अबहीं देउँ तोही। राम बिरहँ जनि मारसि मोही॥
राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती। नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती॥

(2 / 34 / 6–8)

महाराज दशरथ के हर संभव प्रयास के बावजूद महारानी कैकेई अपनी बात पर अड़ी रहीं जिसके परिणाम स्वरूप श्रीराम–विरह में दशरथजी ने अपने प्राण त्याग दिए –

राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम॥

(2 / 155)

(3) जब सुग्रीव ने श्रीरामजी के साथ जाकर बालि को युद्ध के लिए ललकारा तब बालि की पत्नी तारा ने उन्हें समझाया कि आज सुग्रीव अकेला नहीं आया है, उसके साथ श्रीराम–लक्ष्मण हैं जो काल को भी जीतने में समर्थ हैं –

तब रघुपति सुग्रीव पठावा। गर्जेसि जाइ निकट बल पावा॥
सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहि कर चरन नारि समुझावा॥

सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा। ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा।।
कोसलेस सुत लछिमन रामा। कालहु जीति सकहिं संग्रामा।।

(4/7/26–29)

पत्नी के बहुत प्रकार से समझाने पर भी बालि नहीं माना और रणभूमि में चला गया। इस बार तो उसने सुग्रीव को परास्त कर दिया पर पुनः वह श्रीरामजी से विशेष बल एवं कृपा प्राप्त करके आया तब घमासान मल्ल युद्ध हुआ और जब सुग्रीव ने मन ही मन हार मान ली तब श्रीराम ने छिपकर बालि को वाण मारा जिससे उसका देहान्त हो गया।

(4) जब श्रीहनुमानजी ने लंका जला दी तब मंदोदरी ने रावण को समझाया कि जिसके दूत का इतना पुरुषार्थ है उसे आप युद्ध में कैसे जीत सकेंगे –

दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी।।
रहसि जोरि कर पति पग लागी। बोली बचन नीति रस पागी।।
कंत करष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरहू।।
X X X X X
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।

(5/36/4–10)

जब भी कोई विशेष घटना घटित हुई मंदोदरी ने रावण को समझाने का प्रयास किया। समुद्र पर पुल बनने की सूचना से मंदोदरी ने अपना आँचल रावण के चरणों में रखकर समझाया कि बैर उसी से करना चाहिए जिसको अपनी बुद्धि और बल से जीता जा सके –

मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीं पाथोधि बँधायो।।
कर गहि पतिहि भवन निज आनी। बोली परम मनोहर बानी।।
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा। सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा।।
नाथ बयरु कीजे ताही सों। बुधि बल सकिअ जीति जाही सों।।

(6/6/2–5)

जब श्रीरामजी ने एक ही बाण से रावण के अखाड़े के रंग में भंग कर दिया, रावण के मुकुट जमीन पर गिरा दिए और मंदोदरी का कर्णफूल काटकर गिरा दिया तब एक बार फिर मंदोदरी ने समझाया कि श्रीराम को मनुष्य समझकर हठ मत करिए क्योंकि वे अखिल ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमात्मा के अवतार हैं।

मंदोदरी सोच उर बसेऊ। जब ते श्रवनपूर महि खसेऊ।।
सजल नयन कह जुग कर जोरी। सुनहु प्रानपति बिनती मोरी।।
कंत राम बिरोध परिहरहू। जानि मनुज जनि हठ मन धरहू।।

(6/14/6–8)

जब अंगद जी ने दूत बनकर रावण से संधि प्रस्ताव की वार्ता की और अपने स्वामी की शक्ति के प्रदर्शनार्थ अपना पैर रावण की सभा में रखकर उसे उठाने की चुनौती दी और जब कोई भी उसे हिला तक नहीं सका तब उस घटना से प्रभावित होकर मंदोदरी ने पुनः समझाया कि जिसके दूत की बहादुरी की यह पराकाष्ठा है, उसे आप कैसे जीत सकेंगे?

पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा। जाके दूत केर यह कामा।।

(6/36/3)

इस प्रकार से पत्नी के बारम्बार समझाने पर भी रावण अपनी हठ पर कायम रहा तो उसका भी वही हाल हुआ जो बालि का हुआ था।

(5) राजा मनु ने दीर्घकाल तक राज्य किया और जब वे वृद्धावस्था की ओर अग्रसर हुए तब उनके मन में अपार दुःख हुआ कि भगवत् भजन बिना पूरा जीवन बीता जा रहा है।

होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथपन।
हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभगति बिनु।।

(1/142)

उन्होंने अपने पुत्र को जबरदस्ती राज्य सौंपा और वन जाने को तैयार हो गए। यह समाचार सुनकर महारानी सतरूपा ने भी पति की बात मानते हुए उनके साथ चलने का निर्णय लिया।

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा। नारि समेत गवन बन कीन्हा।।

(1/143/1)

इस प्रकार श्रीरामचरितमानस के ये प्रसंग यह शिक्षा देते है कि पति–पत्नी को एकमत होकर गृहस्थी चलानी चाहिए। इस प्रकार के आचरण से, जीवन का परम लक्ष्य, परमात्मा की प्राप्ति उसी प्रकार से संभव है जैसे मनु–सतरूपा ने एकमत होकर, तप के द्वारा भगवान को पुत्र के रूप में पाया।

समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व आई0ए0एस0 अधिकारी श्री गणेश शंकर त्रिपाठी ने बताया कि जिस गाय की रक्षा हेतु भगवान अवतार लेते है आज उसी गोवंश की दुर्दशा हो रही हैं। हम सबका परम कर्त्तव्य है कि गोरक्षा एवं गो–संवर्धन हेतु कृत संकल्प हों। इस कार्यक्रम में श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष पं0 दिनेश चंद्र शर्मा एवं महासचिव डॉ0 भगवानदास पटैरया तथा गीता रामायण समिति के कार्यकारी सदस्य श्री सी0 एस0 भोगल एवं मंदिर के प्रधान पुजारी श्री योगेन्द्र पांडे आदि उपस्थित थे। दोनों समितियों के सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु भरपूर सहयोग किया। श्रीराम जी की आरती और भोजन–प्रसाद के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

धन से क्लेश, मद, हिंसा उत्पन्न होती है और धर्म की भी हानि होती हैं, इसलिये भक्त भवेश्वर से धन नहीं माँगता, केवल भक्ति ही माँगता है।

दोहे शबरी भक्त के

सरल शास्त्री

ऋषि–सेवा करते किया शबरी ने सत्संग।
निश्छल सेवा से हुए ऋषिवर मुदित मलंग।।

बोले रहना इस कुटी आशा–डोरी थाम।
दर्शन देने एक दिन आयेंगे श्रीराम।।

गुरुवर के वचनों 'सरल कर मन दृढ़ विश्वास।
रही सजग अपनी कुटी ले प्रभु दर्शन आस।।

पथ को झाड़–बुहार कर पलक–पाँवड़े डाल।
बाट जोहती राम की सजा भक्ति का थाल।।

भनक पड़ी जब भक्तिमय उर–वीणा की तान।
एक दिवस आए स्वयं भक्त निकट भगवान।।

कंद मूल फल भोग को लाई श्रद्धा भाव।
भक्ति भाव लख खा लिए रघुनन्दन अति चाव।।

क्या बोले मुख स्वर नहीं मौन खड़ी कर जोड़।
अब न रही कुछ चाह मन जग से नाता तोड़।।

रघुनन्दन की दिव्य छवि अपलक रही निहार।
शबरी रसमग्ना भयी भर जीवन–रस धार।।

नीच जाति अति मंदमति मलिनमना मैं नारि।
आप परम पावन पतित–तारणहार अघारि।।

दीनबंधु बोले 'सरल शीतल शब्द सुगंध।
सुन शबरी मैं मानता एक भक्ति–संबंध।।

उच्च वर्ण कुल सद्गुणी धर्मधुरी रणधीर।
भक्तिहीन लगता मनुज ज्यों बादल बिन नीर।।

शबरी नवधा भक्ति सुन प्रथम भक्ति सत्संग।
भक्ति दूसरी 'सरल सुन ईश्वर कथा प्रसंग।।

गुरु–पद सेवा तीसरी करे त्याग अभिमान।
चौथी निश्छल मन करे 'सरल' राम–गुणगान।।

मंत्र जाप विश्वास कर भामिनि पंचम भक्ति।
धर्मशील वैराग्य रत 'सरल' छठी यह भक्ति।।

हर्ष–विषाद न, सरलता कपटरहित–व्यवहार।
नवम भक्ति पाता वही राम–प्रेम उपहार।।

धन्य धन्य शबरी हुयी दिया धाम उपदेश।
सफल हुआ जीवन गयी धर कर अद्भुत वेश।।

यह सारा संसार जब मायिक झूठ असार।
फिर रघुवर को छोड़ क्यों करो जगत से प्यार।।

तीन रत्न संसार में भक्त भक्ति भगवंत।
'सरल' भक्त बन भक्ति कर नित्य संग कर संत।।

तीन मार्ग कल्याण के ज्ञान कर्म और भक्ति।
ज्ञान–कर्म पथ अति कठिन सरल राम–अनुरक्ति।

कर्म धर्म मत पथ सकल करते शोक प्रदान।
त्याग इन्हें विश्वास कर करो प्रेम भगवान।।

सुत होकर करता नहीं जगत्पिता से प्रेम।
जगज्जाल में फँस 'सरल' चाह रहा निज क्षेम।।

आता सम्मुख जीव जब मिलता सुफल अनूप।
हरि–दर्शन कर जीव निज पाता सहज स्वरूप।।

ऐसे प्रभु को भूल क्यों भटक रहा नादान।
'सरल' राम की भक्ति कर कर उनका गुणगान।।

❖●❖

एक दिवसीय श्रीरामकथा

कथा व्यास : **डॉ0 रामगोपाल तिवारी, 'मानस रत्न'**
फोन : 9621260667

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति एवं गीतारामायण समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनाँक 27–8–2016 को सैक्टर–36, नोएडा के श्रीराम मंदिर में संगीतमय श्रीरामकथा का आयोजन हुआ। कथा व्यास मानस मर्मज्ञ पं0 रामगोपाल तिवारी ने अपने भावपूर्ण प्रवचन से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। प्रवचन के कुछ अंश पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

श्रीरामकथा के पूर्व भगवान्नाम कीर्तन कराया जाता है। इसका लाभ यह है कि हमारा मन कुछ समय के लिए कथा में टिक जाए, यदि भगवन्नाम कीर्तन न करके सीधे कथा प्रारंभ की जाए तो उसका परिणाम वही होता है जो अंक के पहले शून्य लगाने पर होता है। यदि अंक के बाद शून्य लगाया जाए तो उसका मान दस गुना हो जाता है पर वही शून्य यदि अंक के पहले लगाएँ तो उसका कोई मूल्य नहीं होता। इस संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास जी दोहावली में लिखते हैं –

नाम राम को अंक है सब साधन हैं सून।
नाम बिना कछु हाथ नहिं नाम रहे दस गून।।

भगवान के 10 अथवा 24 अवतारों में से 2 अवतारों नामशः श्रीराम और श्रीकृष्ण पर विशेष कथाएँ प्रचलित हैं। श्रीरामजी का जन्म दिन में मध्याह्न के समय और श्रीकृष्णजी का जन्म मध्य रात्रि में हुआ। इसका एक विशेष कारण है जिस पर विचार करना है। दिन कार्य करने का और रात्रि विश्राम की प्रतीक है। श्रीरामजी का चरित्र हमें कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करता है और श्रीकृष्णजी का चरित्र हमें समर्पण की भावना प्रदान करता है। श्रीरामजी मर्यादापुरुषोत्तम हैं। श्रीरामजी ने जो चरित किया, जो आचरण किए वे अनुकरणीय है और श्रीकृष्णजी ने जो 'श्रीमद्भगवतगीता' में कहा वह अनुकरणीय है। कलियुग में समर्पण के अलावा भवसागर पार जाने का और कोई उपाय नहीं है। सतयुग में ध्यान अथवा योग से, त्रेता में यज्ञ अर्थात् कर्म से और द्वापर में पूजा अर्थात् भक्ति से प्राणी भवसागर से पार हो जाते थे, किन्तु कलियुग में केवल 'हरि' नाम अर्थात् भगवत् समर्पण ही एक मात्र साधन है भव सागर से पार जाने का। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

कृतजुग सब जोगी बिग्यानी। करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी।।
त्रेताँ बिबिध जग्य नर करहीं। प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं।।
द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भव तरहिं उपाय न दूजा।।
कलिजुग केवल हरि गुन गाहा। गावत नर पावहिं भव थाहा।।

(7 / 103 / 1–4)

कलियुग का वर्णन करते हुए काक भुसुंडिजी गरुडजी को बताते हैं कि जब उनसे गुरु अपमान हो गया और इस कारण शिवजी ने उन्हें श्राप दे दिया तब उनके गुरुजी ने शिवजी को प्रसन्न करने हेतु 'रुद्राष्टक' स्तोत्र के द्वारा प्रार्थना की। इस स्तोत्र में भी समर्पण का महत्व बताया गया है –

न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं॥

(7 / 108 / स्तोत्र)

इस स्तोत्र में प्रार्थना की गई है कि मैं न योग जानता हूँ और न पूजा जानता हूँ। अतः आपको प्रणाम करता हूँ अर्थात् मैं आपके शरणागत हूँ। इस प्रकार से कलियुग में ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना से ही भवसागर पार जाना संभव है। श्रीरामजी के तीन परम भक्त; लक्ष्मणजी, हनुमानजी और भरतजी के समर्पण की कथा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन भक्तों के समर्पण में थोड़ी सी त्रुटि के कारण उन्हें कष्ट उठाना पड़ा। 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार इन तीनों परम भक्तों के समर्पण की कथा इस प्रकार से है –

(1) श्रीरामजी के चौदह वर्ष के वनवास का समाचार सुनकर श्रीलक्ष्मणजी व्याकुल हो गए और इस प्रकार से श्रीरामजी के समक्ष खड़े हो गए –

राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेह सब सन तृनु तोरें॥

(2 / 70 / 6)

श्रीरामजी ने देखा कि भाई लक्ष्मण मानो अपने घर और शरीर से नाता तोड़कर उनके सम्मुख समर्पण की मुद्रा में खड़े हैं कि उनको छोड़ना संभव नहीं होगा। श्रीरामजी ने नीति धर्म के संबंध में समझाया पर लक्ष्मणजी ने साफ शब्दों में कह दिया कि उन्हें केवल आपका साथ चाहिए। श्रीरामजी ने कहा कि अपनी माता से आज्ञा लेकर आओ। लक्ष्मणजी सशंकित थे कि कहीं माताजी उन्हें रोक न लें पर उनकी माता सुमित्रा ने यह उपदेश दिया –

रागु रोषु इरिषा मद मोहू। जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई॥

(2 / 75 / 5–6)

इस प्रकार से अपनी सच्ची समर्पण की भावना से ही श्रीलक्ष्मणजी श्रीरामजी के साथ वन जा सके। उनके समर्पण और पुरुषार्थ का वर्णन श्रीरामजी ने वानराज सुग्रीव से विभीषण की शरणागति के समय इस प्रकार किया था –

जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते॥

(5 / 44 / 7)

अर्थात् हे सखा सुग्रीव! संसार में जितने भी राक्षस है लक्ष्मण जी उन्हें एक निमेष (पल भर से भी कम समय) में नष्ट करने की सामर्थ्य रखते है। इसका प्रमाण भी मारीच – सुबाहु से हुए युद्ध के समय का है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने डेढ़ चौपाई में श्रीराम जी द्वारा डेढ़ राक्षसों के वध का वर्णन किया अर्थात् एक को मारा और दूसरे को सतयोजन पार फेंक दिया किन्तु लक्ष्मण जी द्वारा राक्षस कटक के संहार का वर्णन आधी चौपाई में किया है।

होम करन लागे मुनि झारी। आप रहे मख कीं रखवारी।।
सुनि मारीच निसाचर क्रोही। लै सहाय धावा मुनिद्रोही।।
बिनु फर बान राम तेहि मारा। सतजोजन गा सागर पारा।।
पावक सर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निसाचर कटकु सँघारा।।

(1/210/2–5)

संभवतः अपनी इस प्रकार की प्रशंसा सुनकर लक्ष्मणजी को अभिमान हो गया होगा। इस कारण जब वे प्रथम बार मेघनाद से युद्ध करने गए तब उन्होंने श्रीरामजी के चरणों में अपना सिर नहीं झुकाया। इस प्रकार से जो क्षणिक अभिमान उनके मन में पैदा हुआ उसका शमन नहीं हो पाया। एक सिद्धान्त है कि अभिमान हमारे मस्तक में रहता है और यदि किसी पूज्य के चरणों में सिर झुका दिया जाए तो अभिमान दूर हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण सुन्दरकाण्ड में मिलता है। श्रीहनुमानजी ने लंका जाते समय कुछ ऐसे शब्द कहे थे जिनसे संभवतः अभिमान झलकता था। अतः जब वे प्रस्थान करने लगे तब उन्होंने सभी वानरों के समक्ष अपना मस्तक झुकाया –

यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा।।

(5/1/4)

लक्ष्मणजी ने प्रथम बार श्रीरामजी से सिर्फ आज्ञा ली –

आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ।।

(6/52)

श्रीलक्ष्मणजी की इस भूल का दुष्परिणाम यह हुआ कि मेघनाद द्वारा चलाई गई शक्ति से वे मूर्छित हो गए और तब संजीवनी बूटी से उनके प्राणों की रक्षा हुई। दूसरी बार जब लक्ष्मणजी मेघनाद से युद्ध करने जाते हैं तब उन्होंने पिछली भूल का सुधार करते हुए श्रीरामजी के चरणों में सिर झुकाया और इस बार वे विजयी हुए –

रघुपति चरन नाइ सिरु चलेउ तुरंत अनंत।
अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत।।

(6/75)

(2) सदैव श्रीरामजी के समीप ही रहने वाले दूसरे भक्त हैं श्रीहनुमानजी। सीता माता की खोज में लंका जाते समय सभी वानरों के समक्ष अपना सिर झुकाकर उन्होंने अपने क्षणिक अभिमान का शमन किया था किंतु श्रीलक्ष्मणजी के लिए संजीवनी बूटी लाने के लिए जाते समय श्रीरामजी के चरणों को अपने हृदय में तो धारण कर लिया किंतु उनके चरणों में अपना मस्तक नहीं झुकाया तथा अपने पुरुषार्थ का भी बखान करते हुए गए –

राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभंजन सुत बल भाषी।।

(6/56/1)

श्रीहनुमानजी द्वारा जाते समय श्रीरामजी के चरणों में सिर न झुकाने के कारण प्रथम तो उन्हें राक्षस कालनेमि की बाधा का सामना करना पड़ा और लौटते समय श्रीभरतजी के बाण से घायल होकर नीचे गिर पड़े। सम्पूर्ण वृतांत जानने के बाद श्रीभरतजी ने अपने बाण से तुरंत ही श्रीरामजी के पास पहुँचाने की बात कही, तब हनुमानजी ने विचार किया –

सुनि कपि मन उपजा अभिमाना। मोरें भार चलिहि किमि बाना।।
राम प्रभाव बिचारि बहोरी। बंद चरन कह कपि कर जोरी।।

तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत।।

(6/60 क)

(3) तीसरे विरही परम भक्त हैं श्रीभरतजी। जब श्रीहनुमानजी संजीवनी बूटी लेकर अयोध्या के ऊपर से जा रहे थे तब श्रीभरतजी ने उन्हें कोई राक्षस समझकर बिना फर का बाण मार दिया जिससे वे 'राम–राम' कहते हुए जमीन पर गिर पड़े। श्रीभरतजी ने उन्हें होश में लाने के अथक प्रयास किए किंतु श्रीहनुमान जी को होश नहीं आया।

बिकल बिलोकि कीस उर लावा। जागत नहिं बहु भाँति जगावा।।

(6/59/3)

इस प्रकार जब अपना पुरुषार्थ काम नहीं आया तब समर्पण की भावना से श्रीभरतजी ने श्रीरामजी का इस प्रकार से स्मरण किया –

जौं मोरें मन बच अरु काया। प्रीति राम पद कमल अमाया।।
तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला। जौं मो पर रघुपति अनुकूला।।
सुनत बचन उठि बैठि कपीसा। कहि जय जयति कोसलाधीसा।।

(6/59/6–8)

इस प्रकार से जब श्रीरामजी के इन परम भक्तों से भी यदि कोई भूल हो सकती है तब हम सामान्य जनों की तो कहीं कोई गिनती ही नहीं है। अतः अपने भरपूर पुरुषार्थ से कार्य संपादन के पश्चात् भी यदि सफलता नहीं मिलती है तब भगवान के प्रति सम्पूर्ण समर्पण की भावना से युक्त होकर कार्य करना चाहिए फिर जो भी परिणाम होगा हमारे हित में ही होगा।

इस कार्यक्रम के आयोजन में श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष पं॰ दिनेश चंद्र शर्मा, महासचिव डॉ॰ भगवान दास पटैरया तथा गीता रामायण समिति के कार्यकारी सदस्य श्री सी0एस0 भोगल तथा मंदिर के प्रधान पुजारी श्री योगेन्द्र पाण्डे आदि उपस्थित थे। श्रीरामजी की आरती एवं भोजन–प्रसाद (भण्डारे) के साथ ही कार्यक्रम, जो प्रातः 9:30 पर प्रारम्भ हुआ था, अपराह्न 2:30 पर सम्पन्न हुआ।

सद् विचार

भक्त सर्वदा इस प्रकार भगवान् से प्रार्थना करता है– हे भगवान्! मेरी वाणी सर्वदा आपके पवित्र नाम का कीर्तन करे, मेरे हाथ निरन्तर आपके पाद–कमलों का स्पर्श करें, मेरे श्रोत्र नित्य आपके कथामृत का पान करें, मेरा मन आपके शान्तिमय चरणों का ही सदा स्मरण करे, मेरे हृदयाकाश में कोटि सूर्य सम प्रभावाले आप निवास करें, हे जनार्दन! जब भी मेरा चित्त आपके चरणों से विमुख हो, तब हे दयासागर! उसे अपने चरणों में ही लगा लीजिये। हे महेश्वर! मैं सदा आपका ही ध्यान करूँ, आपको ही सर्वत्र देखूँ, आपको ही नमस्कार करूँ, ऐसा कीजिये। हे जगत्–बन्धों! आपको नमस्कार है। हे परमात्मन्! आपको नमस्कार है। हे विश्वेश्वर! आपको नमस्कार हैं। हे देवादिदेव, हे परिपूर्णस्वरूप! आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

शोक समाचार

हमें अत्यंत दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि इस समिति के वरिष्ठ सदस्य डॉ0 इंद्रजीत चौबे, बुधवार श्रावण शुक्ल चतुर्दशी विक्रमी संवत् 2073 तदनुसार 17 अगस्त सन् 2016 को चिर निद्रा में लीन हो गए। वे इस समिति की स्मारिका के लिए प्रतिवर्ष सारगर्भित लेख का योगदान करते थे तथा विशेष कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण परामर्श भी प्रदान करते थे। इस समिति की ओर से हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिए तथा उनके परिजनों एवं मित्रों को धैर्य प्रदान करने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

जय रघुनन्दन जय श्रीराम

श्रीमती मंजु बंसल, 299 सैक्टर-28, नोएडा
www.vedvriksh.com, फोन : 9810608411

जय रघुनन्दन जय श्रीराम।
पतित पावन सीता राम॥

अयोध्या को जन्म भूमि बनायो।
दशरथ, कौशल्या के पुत्र कहलायो।।
पिता की आज्ञा पै त्यागा धाम।
जय रघुनन्दन......... ।।

विश्वामित्रजी की आज्ञा पाई।
शिवधनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई।।
सिया ने वरमाला डाली, मेरे राम।
जय रघुनन्दन......... ।।

लक्ष्मण जैसा भाई पायो।
जिसने यश का दंड उठायो।।
सीता जैसी पाई बाम।
जय रघुनन्दन......... ।।

भरत ने माथे तिलक लगायो।
साधु जैसा वेष बनायो।।
चौदह बरस रहे नन्दग्राम।
जय रघुनन्दन......... ।।

मैं छल कपट काम की चेरी।
नैया पार लगे कब मेरी।।
तुम ही पार लगाओ राम।
जय रघुनन्दन......... ।।

तुम ही हो घट-घट के वासी।
साधु-सन्त हो या अभिलाषी।।
सबके पूरन कीजो काम।
जय रघुनन्दन......... ।।

अपनी शरण लगाओ राम।
पाप से हमें बचाओ राम।।
हम है तुमरे सेवक राम।
जय रघुनन्दन......... ।।

कभी किसी का बुरा न चाहूँ।
ना किसी को चोट पहुँचाऊँ।।
ऐसी किरपा कीजो राम।
जय रघुनन्दन......... ।।

छलकपट से मुझे बचाना।
भवसागर से पार लगाना।।
अपनी भक्ति दीजो राम।
जय रघुनन्दन......... ।।

घर-घर तेरा नाम पहुँचाऊँ।
तुझमें ही मैं जीवन पाऊँ।।
हरदम सिमरूँ तेरो नाम।
जय रघुनन्दन......... ।।

तुम दाता, तुम अन्तर्यामी।
जग-जीवन के तुम ही स्वामी।।
जगजननी के पति हो राम।
जय रघुनन्दन......... ।।

जिसने तुमरी भक्ती कीनी।
सब विपदा तुमने हर लीनी।।
बेड़ा पार लगायो राम।
जय रघुनन्दन......... ।।

जय रघुनन्दन जय श्रीराम।
पतित पावन सीता राम॥

सप्त दिवसीय श्रीरामकथा

कथा व्यास : **श्रीमती अखिलेश्वरी देवी**, 'मानस माधुरी'
फोन. : 9651064079

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति एवं गीता रामायण समिति के तत्वावधान में नोएडा के सैक्टर–36 के 'सी' ब्लॉक स्थित श्रीराम मंदिर में दिनांक 15.12.16 से 21.12.16 तक संगीतमय श्रीरामकथा का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। सप्त दिवसीय श्रीरामकथा का शुभारंभ सैक्टर–31, नोएडा के सर्व हितकारी शिक्षा निकेतन की बालिकाओं द्वारा सरस्वती वंदन, पंडितों द्वारा वेदपाठ तथा गणमान्य अतिथियों (उ0प्र0 के पूर्व मुख्य सचिव श्री प्रशांत मिश्रा, भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी श्री गणेश शंकर त्रिपाठी एवं नोएडा लोक मंच के महासचिव श्री महेश सक्सेना द्वारा मंगल दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस पावन बेला में कथा व्यास मानस माधुरी श्रीमती अखिलेश्वरी देवी ने श्रीरामकथा का महत्व बताते हुए कहा कि जिस प्रकार आज तक किसी ने अंतरिक्ष का अंत नहीं पाया है इसी प्रकार श्रीरामकथा अनंत है। श्रीरामचरिमानस के अनुसार –

हरि अनंत हरिकथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।

(1 / 140 / 5)

श्रीरामचरितमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम ने अपने आचरण से जो शिक्षा दी है, उसका विशद वर्णन है। इसका अनुसरण करने से समाज के हर वर्ग के जीवन में सुख–शान्ति छा जाएगी। ऐसी ही कुछ शिक्षाओं का वर्णन किया गया जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है –

(1) श्रीराम कथा श्रवण करने के उपरान्त जब शिव–सती लौट रहे थे तब भगवान श्रीराम सीता हरण के पश्चात् विरह लीला कर रहे थे। वह दृश्य देखकर सतीजी को मोह हो गया कि ये राजकुमार ब्रह्म नहीं हो सकते। शिवजी ने बहुत समझाया पर वे नहीं मानीं और परीक्षा लेने चल पड़ीं तब शिवजी ने विचार किया कि अब तो वही होगा जो श्रीरामजी ने रचा होगा ।

होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा।।

(1 / 52 / 7)

कुछ आलसी लोग इसका गलत अर्थ लगा लेते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि कर्म की प्रधानता है जो जैसा करेगा वैसा फल पाएगा। उदाहणार्थ – यदि विद्यार्थी अध्ययन न करें, कर्मचारी अपनी ड्यूटी ठीक से न करे, किसान समय पर खेत में बीज न बोए और देखभाल न करे और सोचे कि **'होइहि सोइ जो राम**

रचि राखा' तब इसका क्या परिणाम होगा, हम सभी समझ सकते हैं। यदि किसान ने समय पर बीज बोया, निराई की और खाद–पानी समय पर दिया तथा जब फसल पककर तैयार हुई, उस समय यदि ओला वृष्टि हो जाए तब कहा जा सकता है कि **'होइहि सोइ जो राम रचि राखा'।** अपना कर्तव्य पालन करने के पश्चात् यदि अनहोनी हो जाए, तब कहना चाहिए कि अब तो **'होइहि सोइ जो राम रचि राखा'।** कर्म की प्रधानता है। इसका उल्लेख श्रीरामचरितमानस में इस प्रकार से है –

करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।।

(2 / 219 / 4)

(2) शिव विवाह की कथा में यह प्रसंग आता है कि शिव जी के गणों ने उनके सिर पर सर्पों का मुकुट बनाया। सर्प काल का प्रतीक है। इससे यह संदेश मिलता है कि काल अर्थात् मृत्यु सदैव हमारे सिर पर मंडराती है। यदि यह स्मरण में रहे तो फिर कभी कोई किसी का हक नही छीनेगा और गरीबों का हक छीनकर काली कमाई नहीं करेगा। दो बातों को सदा ध्यान में रखना चाहिए, एक ईश्वर को जो सदा हमारे कर्मानुसार हमें सुख – दुख देते हैं और दूसरे अपनी मृत्यु को, जो किसी भी क्षण आ सकती है। एक कवि ने लिखा है –

दो बातों को याद रख, जो चाहे कल्यान।
नारायण इक मौत को, दूजे श्री भगवान।।

क्या हमने कभी विचार किया है कि यह शरीर किस उद्देश्य से मिला है। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करके ईश्वर की करुणा से ही यह मानव तन मिला है –

आकर चारि लच्छ चौरासी। जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी।।
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा।।
कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही।।

(7 / 44 / 4–6)

इस मानव देह को स्वयं अखिल ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म ने करुणा करके जीव के कल्याणार्थ सृजित किया है, अतः यह उनको अन्य सभी जीवों से अधिक प्रिय है। स्वंय श्रीराम जी इसका उल्लेख इस प्रकार करते हैं –

मम माया संभव संसारा। जीव चराचर बिबिध प्रकारा।।
सब मम प्रिय सब मम उपजाए। सब ते अधिक मनुज मोहि भाए।।

(7 / 86 / 3–4)

इस दुर्लभ मानव देह की सफलता बहुत धन संपत्ति अर्जित करने, ऊँचा पद या नाम प्राप्त करने, बहु संतति उत्पन्न करने आदि किसी में भी नहीं है। इसकी सफलता और इसका सुफल यही है कि समस्त

कामनाओं का त्याग करके भगवत् भजन किया जाए। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

देह धरे कर यह फलु भाई। भजिअ राम सब काम बिहाई॥

(4/23/6)

(3) एक दिन महाराज दशरथ को जब यह ज्ञात हुआ कि उनके घर संतान न होने से प्रजा अपने घर संतान होने पर बाजे नहीं बजवाते और न ही किसी प्रकार की खुशियाँ मनाते हैं ताकि महाराज को संतान न होने का कष्ट न हो, तब दशरथ जी तुरंत अपने कुल गुरु वशिष्ठ जी के घर जाकर उनको अपना दुख सुनाते हैं। गुरुजी पुत्रेष्टि यज्ञ करवाते हैं जिसके प्रसाद से उनके चार पुत्र, राम – भरत – लक्ष्मण – शत्रुघ्न हुए। तब महाराज दशरथ ने सबसे पहले प्रजा जनों के दरवाजों पर बाजे बजवाए और फिर राज महल में।

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना॥
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजाबहु बाजा॥

(1/193/3 एवं 6)

सामान्यतया हम अपने सुख से सुखी और अपने दुख से दुखी होते हैं पर संत जन पराए दुख से दुखी होते हैं और दुष्ट जन दूसरे के सुख से दुखी होते हैं। संत–असंत का यही एक प्रमुख भेद है।

संत सहहिं दुख पर हित लागी। पर दुख हेतु असंत अभागी॥

(7/121/15)

एक तरफ राजा प्रजा का इतना हितैषी है कि प्रजा का पालन अपनी संतान की तरह करता है और दूसरी तरफ प्रजाजन राजा के प्रति इतना अधिक आदर–स्नेह रखते है कि अपने घर में संतान होने पर भी इसलिए खुशियाँ नहीं मनाते है कि निःसंतान राजा को इससे कष्ट न पहुँचे। प्रजा के इस भाव को समझकर ही महाराज दशरथ को ग्लानि हुई और पुत्र प्राप्ति के लिए गुरु जी से अपना दुख–सुख सुनाया।

एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं॥
गुरु गृह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि कर बिनय बिसाला॥
निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ॥

(1/189/1–3)

राजा और प्रजा का यह पारस्परिक प्रेम–विश्वास ही राम–राज्य की स्थापना में सहायक हुआ। आज हमारे राजनेता और जनता यदि इस शिक्षा को ग्रहण करके आपसी सद्भाव का परिचय दें तो राम राज्य की तरह देश में ही नहीं पूरे विश्व में सुख–शांति का समावेश हो जायेगा।

(4) जब मुनि विश्वामित्र राक्षसों के संहार हेतु श्रीराम–लक्ष्मण को लेने अयोध्या जाने लगे तब उनके शिष्यों ने प्रश्न किया कि आप स्वयं राक्षसों का संहार करने में सक्षम हैं फिर अभी तक उनका अत्याचार क्यों

सहन कर रहे थे। विश्वामित्र जी ने बताया कि वे राक्षसों को केवल मार सकते हैं, तार नहीं सकते। यदि राक्षस तरेंगे नहीं तो फिर राक्षस योनि में जन्म लेकर हमें कष्ट देते रहेंगे। श्रीराम जी राक्षसों को मार कर उन्हें तार देंगे तब फिर उनका समूल संहार होगा जिससे राष्ट्र सदा के लिए उनके आतंक से मुक्त हो जाएगा। जिन–जिन राक्षसों का संहार श्रीरामजी ने किया उन सभी को मोक्ष मिल गया। इसका प्रमाण रावण वध के पश्चात् इन्द्र द्वारा समरभूमि में अमृत वर्षा से स्पष्ट रूप से मिलता है। जब श्रीरामजी ने समरभूमि में सुधा वृष्टि की आज्ञा दी और तब सुधा वृष्टि के पश्चात् केवल वानर भालू ही जीवित हुए। सभी राक्षसों का मन रामाकार हो गया था और उनके भव–बंधन टूट चुके थे।

सुधाबृष्टि भै दुहु दल ऊपर। जिए भालु कपि नहिं रजनीचर।।
रामाकार भए तिन्ह के मन। मुक्त भए छूटे भव बंधन।।

(6 / 114 / 5–6)

इससे यह शिक्षा मिलती है कि आज भारत को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को संयुक्त रूप से आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने का संकल्प लेना चाहिए।

(5) सीता जी की खोज करने के लिए जाते समय श्रीराम जी ने श्री हनुमान जी से कहा कि सीताजी का पता तो पहले ही लग चुका है कि वे लंका में हैं, तुम्हारा मुख्य कार्य रावण के भाई विभीषण को समझाना है कि वह राम का भजन तो कर रहा है पर राम का काम नहीं कर रहा। वह अन्याय को सहन कर रहा है। रावण के आतंकवाद का विरोध नहीं कर रहा है। अन्याय का विरोध न करना भी अन्याय करने के समान है। हनुमान जी के समझाने पर विभीषण ने अपने भाई रावण को समझाया किंतु कुछ समझने के बजाय रावण ने उन्हें लात मार कर भगा दिया। विभीषण के लंका से निकलते ही सभी राक्षस मानो आयुहीन हो गए और रावण वैभव–विहीन अभागा हो गया क्योंकि साधु अर्थात् सज्जन पुरुष का अनादर करने से सम्पूर्ण प्रकार से 'कल्याण' की हानि होती है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार–

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं। आयूहीन भए सब तबहीं।।
साधु अवग्या तुरत भवानी। कर कल्यान अखिल कै हानी।।
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा। भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा।।

(5 / 42 / 1–3)

इस प्रसंग से यह सूत्र निकलता है कि हमारे सामने जो कुछ घटित हो रहा है उसके प्रति हमें उदासीन न होकर देश–काल–परिस्थिति एवं अपने सामर्थ्य के अनुसार अत्याचार का विरोध करना चाहिए। यही राम का काम है। श्री हनुमान जी द्वारा हृदय परिवर्तन हो जाने पर विभीषण जी ने रावण को नीतिमय वचन सुनाए तब रावण ने उन्हें लात मारकर भगा दिया। वे श्रीराम जी की शरण में आ गए। श्रीराम जी ने अंगद को दूत के रूप में भेज कर रावण को समझाने का प्रयास किया किंतु वह नहीं माना, तब भयंकर युद्ध हुआ जिसमें कुंभकरण, मेघनाद एवं रावण समेत सभी राक्षसों का संहार हो गया। तत्पश्चात् विभीषण

को लंका का राज्य सौंपकर उनके साथ अन्य प्रमुख वानर–भालुओं सहित, श्रीराम जी अयोध्या आए। शुभ मुहुर्त में श्रीसीतारामजी का राज्याभिषेक हुआ।

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।
सिंघासन पर त्रिभुअन साईं। देखि सुरन्ह दुंदुभीं बजाईं।।

(7/12/5 एवं 8)

समापन के समय श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा एवं महासचिव डॉ0 भगवानदास पटैरया तथा गीता रामायण समिति के कार्यकारी सदस्य श्री सी0एस0 भोगल एवं मंदिर के प्रधान पुजारी आचार्य योगेन्द्र पाण्डे ने अपने विचार रखे। अपने उद्गार व्यक्त करते हुए पत्रकार श्री राजेश वैरागी ने बताया कि वे बचपन से श्रीराम कथा श्रवण करते आ रहे हैं। उनका मानना था कि श्री विजय कौशल जी महाराज से अच्छी कथा कोई नहीं सुना सकता किंतु मानस माधुरी श्रीमती अखिलेश्वरी देवी से राम कथा सुनने के पश्चात् उनका वह भ्रम टूट गया। उन्होंने कहा कि इस कथा से समाजोपयोगी अनेक सूत्र हमें प्राप्त हुए हैं, उनका पालन करके हमें मानव जीवन को सफल बना लेना चाहिए। इस कार्यक्रम में श्री रामचरितमानस राष्ट्रीय समिति एवं गीता रामायण समिति के पदाधिकारी गण एवं सदस्य, सातों दिनों के यजमान नामशः सर्व श्री ब्रह्मसिंह पायलेट, ओमबीर सिंह राणा, रविन्द्र कुमार शर्मा, भीम सिंह, बिजेन्द्र सिंह अवाना, बाबूराम अम्बावता तथा बाली सिंह अम्बावता आदि उपस्थित थे।

मानव जीवन की धन्यता

साभार : कल्याण, दिसम्बर 2016

ए मन तुम गाओ गान यही, हरिः शरणम् हरिः शरणम्।
दिखता है भाव महान यही, हरिः शरणम् हरिः शरणम्।।
चाहे कितना दुःख सुख होवे, तू कर्मों से ना विमुख होवे।
निकले अन्तर में तान यही, हरिः शरणम् हरिः शरणम्।।
रहना हो घर में या वन में, चिन्ता न रहे कोई मन में।
है सहज सुलभ सद् ज्ञान यही, हरिः शरणम् हरिः शरणम्।।
सुख साम्राज्य पाये तो क्या, या सर्वस खो जाये तो क्या।
भक्तों को तो अभिमान यही, हरिः शरणम् हरिः शरणम्।।
फल ये ही मानव जीवन का, सम्बन्ध छोड़ धन वैभव का।
पा जाये परम स्थान यहीं, हरिः शरणम् हरिः शरणम्।।
मिलती इससे सच्ची सद्गति है, यह कितनी सुन्दर सम्मति है।
बस रहें 'पथिक' का ध्यान यही, हरिः शरणम् हरिः शरणम्।।

राम नाम महिमा

सुश्री शारदा मिश्रा (चेतन),
सरस्वती मन्दिर, चैतन्य विहार बुर्जा रोड़, वृन्दावन मथुरा, फोन : 9897162687

मथुरा शब्द विलोमेन, मध्यमाक्षर वर्जितं।
यन्मुखे तद्द्वयं नास्ति, तन्मुखे मध्यमाक्षरं॥

मथुरा शब्द का विलोम (राथुम) करने से, मध्यम अक्षर वर्जित कर देने के बाद 'राम' पद बनेगा। ये दो अक्षर 'राम' जिसके मुख में नहीं है, ऐसे व्यक्ति के मुख में मध्यम अक्षर प्राप्त हो वे। उपर्युक्त श्लोक का यह भाव है।

वस्तुतः राम का नाम राम से भी बढ़कर है। गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है –

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।

(1/25)

राघवेन्द्र भगवान श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन अनुकरणीय है। त्रेतायुग में अवतार ग्रहण कर भगवान श्रीराम ने मर्यादा की स्थापना कर धर्म की रक्षा की। उनके अवतार का उद्देश्य है –

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

(1/121/6 एवं 8)

जब भगवान श्रीराम राजा हुए तब तीनों लोक हर्षित हो गये और आनन्द विभोर होकर उनका गुणगान करने लगे –

राजा राम जानकी रानी। अवधपुरी सुन्दर रजधानी॥
सभी प्रजाजन गावे गान। श्रीराम जय राम जय जय राम॥
श्रीराम हमरे भगवान। श्रीराम जयराम जय जय राम॥

एवं

अवध के चन्द, वो तो है रामचन्द्र
उनकी महिमा अनन्त, गुण गाये सब सन्त
जो रहे संग अनन्त, वो तो भूमिजा के कन्त
कोई पाये न उनका अन्त, वो तो बड़े ही महन्त।

इस प्रकार से श्रीरामराज्य में सभी वर्ग के लोग हर प्रकार से सुखी थे और उनके पावन चरित्रों एवं नाम का गुणगान करते थे –

नर अरु नारि राम गुन गानहिं। करहिं दिवस निसि जात न जानहिं॥

(7/26/8)

नामु राम को कलपतरु

श्रीदेवेन्द्रजी शर्मा, 963 सैक्टर 12, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली, फोन. : 9810199441

स्मारिका के 23 वें अंक के पृष्ठ 31 से आगे ....

श्रीगोस्वामीजी 'श्रीराम–नाम' के दोनों श्रेष्ठ वर्णों 'रा' और 'म' की महिमा के विषय में कहते हैं कि भगवान् श्रीराम की भक्तिरूपी वर्षा–ऋतु के लिये 'श्रीराम–नाम' के ये दोनों 'वर्ण' सावन–भादों के महीनों के समान हैं अर्थात् यदि श्रीभगवान् की भक्तिरूपी वर्षा का परम लाभ लेना है तो 'श्रीराम–नाम' जपना चाहिये। बृजरानी श्रीयशोदारूपी जिह्वा के लिये ये दोनों अक्षर 'रा' और 'म', उन्हें परम प्रिय लगने वाले दोनों पुत्रों–श्रीकृष्णजी और श्रीबलरामजी की भाँति हैं।

कहने, सुनने तथा स्मरण करने में सुन्दर और मधुर लगने वाले ये दोनों अक्षर 'रा' और 'म' तुलसीदासजी को भगवान् श्रीराम और श्रीलक्ष्मणजी की भाँति सदा ही प्रिय हैं –

कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के।।

(1/20/3)

इस कलियुग में इच्छित पदार्थों को प्रदान करने वाले, लोक और परलोक दोनों को सुधारने वाले, 'श्रीराम–नाम' के ये दोनों अक्षर– 'रा' और 'म', इस लोक में तो भक्तरूपी नन्हें शिशु की रक्षा और पालन–पोषण करने वाले माता–पिता के समान ही हैं –

राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।।

(1/27/6)

संसार में आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी–ये चार प्रकार के श्रीभगवान् के भक्त होते हैं और इन चारों का काम 'श्रीरामनाम' के सहारे से ही चलता है। वैराग्य, ब्रह्मसुख, परमात्मा के गूढ़ रहस्य,अणिमादिक सिद्धियों की प्राप्ति और प्राकृत संकटों से मुक्ति श्रीभगवान् के 'श्रीनामजप' के सहारे से ही होती है –

साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।।
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।

(1/22/4–5)

श्रीगोस्वामीजी 'नाम' का महत्त्व और इसकी आवश्यकता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए कहते हैं कि किसी भी पदार्थ अथवा प्राणी की पहचान 'नाम' के बिना नहीं हो सकती। निर्गुण–निराकार–ब्रह्म को मानने वालों को भी 'नाम' का सहारा लेना ही पड़ता है क्योंकि 'निर्गुण–निराकार–ब्रह्म' का ज्ञान

कराने वाला शब्दों का समूह भी अपने आप में एक 'नाम' है, जो सर्वव्यापी, सर्वसत्तामय और केवल अनुभवगम्य परमात्मा का परिचायक है। विभिन्न रूपों में पूजित अथवा अवतरित हुए सगुण–ब्रह्म जैसे–भगवान् श्रीब्रह्माजी, श्रीविष्णुजी, श्रीशंकरजी, श्रीगणेशजी, श्रीरामजी, श्रीकृष्ण जी अथवा भगवती श्रीदुर्गाजी आदि ये सब तो अपने–अपने 'श्रीनाम' (और स्वरूप) से ही जाने पहचाने जाते हैं।

श्रीगोस्वामीजी आगे कहते हैं कि विरोधाभासी प्रतीत होने वाले 'निर्गुण और सगुण' ब्रह्म के बीच 'नाम' ही दोनों का बोध कराने वाले एक चतुर दुभाषिए का अथवा 'निर्गुण एवं सगुण' साधनारूपी नदी के दोनों किनारों को मिलाने के लिये एक सुन्दर और सशक्त पुल का काम करता है। इसीलिए योगी–वैरागी–ज्ञानी साधक भी अपनी जिह्वा से कोई–न–कोई 'नाम' ही जपते हुए अपने आपको इस मोहरूपी अन्धकारमय संसार में सदा जागृत रखते हैं। वे भी 'श्रीनाम–जप' के प्रभाव से ही परमात्मा की गूढ़ गति को जान पाते हैं और ब्रह्म–सुख का अनुभव करते हैं। श्रीगोस्वामीजी पूरे विश्वास से कहते हैं – **'उभय अगम जुग सुगम नाम तें'** अर्थात् सर्वव्यापी और सर्वसत्तामय परमात्मा को निर्गुण और सगुण केवल दो ही 'नाम' अथवा 'स्वरूपो' में जाना जाता है। निर्गुण–अवस्था में अत्यधिक कठिनता से अनुभव में आने वाले और सगुण रूप में भी कठिनता से प्राप्त होने वाले दोनों ही प्रकार के ईश्वर की प्राप्ति को केवल 'श्रीनाम' ही सुगम बनाता है।

श्रीभगवान भक्तों, पृथ्वी, ब्राह्मणों, गायों और देवताओं के संकट–हरण और कल्याण के लिये अवतार लेते हैं और अपने अवतार का निश्चित हेतु पूरा होने पर वापस अपने श्रीधाम पधार जाते हैं, लेकिन श्रीभगवान् का 'श्रीराम–नाम' तो उनसे भी बढ़कर अनन्त और अधिक प्रभावशाली है। कभी न लुप्त होने वाले 'श्रीराम–नाम' के अवतार–स्थान तो भक्तों/साधको के अन्तःकरण–चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार) तथा उनके कान, नेत्र, जिह्वा और हृदय हैं –

भक्तों/साधकों के 'मन' में अवतार - कहते हैं कि भक्ति 'मन' के बिना, यानी कि 'मन' को श्रीभगवान में लगाए बिना नहीं हो सकती। यह भी कहा जाता है कि श्रीभगवान की भक्ति उनके प्रति पूर्ण समर्पण के बिना अधूरी रहती है, जो 'बुद्धि' के बिना नहीं होता। इसीलिए श्रीभगवत् कहते हैं– **'मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्'** (गीता 8/7) अर्थात् यदि तुम अपने 'मन और बुद्धि' दोनों को मुझे अर्पण कर दोगे तो तुम 'मुझे' (श्रीभगवान को) प्राप्त हो जाओगे– यहाँ पर मन और बुद्धि दोनों को श्रीभगवान को अर्पण कर देना और अपने 'मन और बुद्धि' दोनों में उनको (श्रीभगवान् को) अवतरित कर लेना या बसा लेना – एक ही बात है, जो उनके 'श्रीनाम' के पूर्ण श्रद्धा–विश्वास से जप के सहारे से ही होना सम्भव बताया गया है। श्रीगोस्वामीजी श्रीरामचरितमानस का समापन करते हुए लिखते हैं –

जासु पतित पावन बड़ बाना। गावहिं कबि श्रुति संत पुराना।।
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई। राम भजें गति केहिं नहिं पाई।।

(7/130/7–8)

भक्तों/साधकों की 'बुद्धि' में अवतार -

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।।
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा।।
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ।।

(1/22/1–3)

नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें।।

(1/23/8)

अर्थात् श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि ब्रह्म–सुख के आनन्द में सदा मग्न रहने वाले ज्ञानी–बैरागी साधकजन भी अपनी इस परमानन्दमयी अवस्था को प्राप्त करने के लिये 'श्रीनाम' को पहले अपनी 'बुद्धि' में अवतरित करके उसका निरूपण करते हैं यानी उसकी महिमा और महत्ता को भली–भाँति जानते, समझते हैं, जो 'बुद्धि' के बिना नहीं हो सकती, फिर पूर्ण श्रद्धा–विश्वास से उसके (श्रीनाम के) जप के सहारे से ब्रह्मसुखरूपी, ज्ञानरूपी और वैराग्यरूपी फल को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

भक्तों/साधको के 'चित्त' में अवतार- 'चित्त' का सम्बन्ध चेतना से है और चेतना का सम्बन्ध किसी विषय वस्तु के ज्ञान को जागृत रखने से बताया गया है। 'चित्त' को दैविक, प्राकृतिक और धार्मिक वृत्तियों का संचय–स्थान भी कहते हैं, जिसमें ईश्वर का वास होता है –

ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी।।

(7/117/2)

इस कलिकाल में योग, यज्ञ, जप, तप, व्रत और पूजा जैसे कठिन नियमों वाले कर्म/साधनों द्वारा भगवत्प्राप्ति कर लेना अथवा अपना लोक–परलोक सुधार लेना आसान नहीं है। अतः श्रीभगवान के परम पावन 'श्रीनाम' के निरन्तर स्मरण, उनके 'परम पावन गुणों' के निरन्तर गायन–श्रवण के अलावा जीव के कल्याण का और कोई दूसरा साधन नहीं है–

एहिं कलिकाल न साधान दूजा। जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा।।
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि।।

(7/130/5–6)

चेतना को 'चित्त' में जागृत कर लेना, संचय कर लेना अथवा बसा लेना ही, 'चित्त' में श्रीभगवान और उनके श्रीनाम–स्वरूप' का अवतरण/अवतार माना जाता है।

भक्तों/साधकों के 'अहंकार' में अवतार-

अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे।।

(3/11/21)

महर्षि सुतीक्ष्ण श्रीभगवान से कहते हैं– प्रभो! मेरे मन–बुद्धि से एक 'अभिमान' कभी न जाय कि श्रीरघुपति मेरे स्वामी हैं और मैं उनका सेवक हूँ। इसी स्थिति को भक्तों/साधकों के 'अहंकार' में 'श्रीभगवान तथा उनके श्रीनाम–स्वरूप' का अवतार माना जाता है।

भक्तों के 'श्रवण (कानों)' में अवतार–

जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे॥

(2/128/4–5)

भक्तो के 'कान' समुद्र के समान होते हैं और 'श्रीनाम' से युक्त श्रीभगवान की आनन्ददायक नाना प्रकार की कथा रूपी नदियाँ आकर निरन्तर उनमें लीन होती रहती हैं, फिर भी उनके 'कान' कभी तृप्त नहीं होते हैं। भक्तों द्वारा श्रीभगवान की 'श्रीनाम' से युक्त कथाओं को और अधिकाधिक सुनते रहने की सदैव ही बनी रहने वाली लालसा को ही उनके 'कानों' (श्रवण) में श्रीभगवान के परम पावन 'श्रीनाम–स्वरूप' का शाश्वत अवतार माना जाता है।

भक्तों के 'लोचन (नेत्रों)' में अवतार–

लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे॥
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी॥

(2/128/6–7)

भक्तों की एक बड़ी प्रबल लालसा रहती है कि उन्हें उनके इष्टदेव के दर्शन यथाशीघ्र हो जाए। इसलिये, जैसे चातक पक्षी मेघों (बादलों) के दर्शन के लिये सदैव आकाश की ओर टकटकी लगाए देखता रहता है, वैसे ही भक्तजन भी श्रीभगवान के दर्शनों के लिये सदैव पलक पावँड़े बिछाये रहते हैं। 'श्रीनाम' से चिह्नित श्रीभगवान् के इष्ट स्वरूप को नेत्रों में सदैव बसाये रखना ही भक्तों के 'नेत्रो' में 'श्रीनाम–स्वरूप' का अवतार माना जाता है।

भक्तों की 'जीहा (जिह्वा)' में अवतार–

जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु॥

(2/128)

श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि श्रीभगवान का यश/कीर्ति एक विमल सरोवर के समान है और भक्तों की जीहा (जिह्वा) रूपी हंसिनी इस सरोवर में से श्रीभगवान के 'श्रीनाम' और उससे युक्त उनके श्रीरूप, श्रीलीला और श्रीधाम के महिमा–कथारूपी मुक्ताहल (मोतियों) को निरन्तर चुनती रहती है, अर्थात् उनका निरन्तर

गायन करती रहती है। यह 'श्रीनाम' रूप लीला धाम का निरन्तर गायन ही उनकी जिह्वा पर 'श्रीनाम–स्वरूप' का अवतार माना जाता है।

भक्तो के 'उर (हृदय)' में अवतार–

जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई।।
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई। तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई।।

(2/131/5–6)

भक्तजन सांसारिक सुख देने वाले जाति–पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, प्रिय और परिवारजन तथा घरबार–इन सबको त्यागकर केवल एक विशेष 'श्रीनाम' से युक्त अपने इष्ट–देव के स्वरूप को ही सदैव अपने 'उर यानी हृदय' में बसाकर रखते हैं। यहाँ पर भक्तों द्वारा विशेष 'श्रीराम' से युक्त अपने इष्टदेव के स्वरूप को सदैव अपने 'हृदय' में बसाये रखना ही उनके 'हृदय' में 'श्रीनाम स्वरूप' का अवतार माना जाएगा।

श्रीगोस्वामीजी 'श्रीनाम–वन्दना–प्रसंग' में कहते हैं –

नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।।
देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना।।
रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतल गत न परहिं पहिचानें।।
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखे। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें।।

(1/21/2ए 4–6)

समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी।।

(1/21/1)

अर्थात् भगवान और उनका 'श्रीनाम' ये दोनों उन (ईश्वर) की ही उपाधियाँ हैं, जो अनादि, अविनाशी, दिव्य और सुन्दर हैं। इनकी अकथनीय महिमा को शुद्ध भक्तियुक्त बुद्धि द्वारा ही थोड़ा–बहुत समझा जा सकता है। किसी भी स्वरूप में, यदि बिना नाम की कोई वस्तु अपनी हथेली पर भी रखी हो तो भी उसकी पहचान के लिये उस वस्तु को कोई न कोई नाम तो देना ही होता है; क्योंकि किसी भी रूप–स्वरूप की पहचान तो उसके 'नाम' से ही होती है। श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि 'नाम' की महिमा ही ऐसी है कि यदि स्वरूप को जाने बिना भी 'नाम' का स्मरण किया जाए तो भी 'नाम' का स्मरण उस अनजाने स्वरूप के प्रति हृदय में स्नेह उत्पन्न कर देता है और अन्त में उस स्वरूप को हृदय में प्रकट भी कर देता है।

श्रीभगवान का स्वरूप उनके 'श्रीनाम' के अधीन बताया गया है। श्रीगोस्वामीजी तो श्रीभगवान के 'श्रीनाम' और श्रीभगवान में 'स्वामी' और 'सेवक' का सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं कि जैसे 'स्वामी' के पीछे 'सेवक' चलता है, वैसे ही 'नाम' के पीछे 'नामी' अर्थात् श्रीभगवान चलते हैं, अर्थात् जहाँ–जहाँ श्रीभगवान

के 'श्रीनाम' का सुमिरन – कीर्तन होता है, वहाँ–वहाँ श्रीभगवान स्वंय पहुँच जाते हैं।

श्रीभगवान स्वयं कहते हैं –

बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम॥

(3 / 16)

हे प्रिय लक्ष्मण! जो जन मन, वचन और कर्म तीनों प्रकार से मेरे प्रति ही समर्पित रहकर निष्काम भाव से मेरा भजन करते हैं, मैं तो ऐसे भक्तों के हृदयरूपी कमल में सुख पूर्वक विश्राम करता हूँ अर्थात् सुख पूर्वक निवास करता हूँ।

इस प्रकार, जैसे श्रीभगवान और उनके 'श्रीनाम' में अभिन्न सम्बन्ध है, वैसे ही श्रीभगवान से भक्त का सम्बन्ध भी अभिन्न ही है और 'श्रीनाम' रूप में श्रीभगवान के ये उपर्युक्त अवतार भी शाश्वत हैं, जो कभी लुप्त नहीं होते, इनका नित्य–धाम तो अनन्य भक्तों के मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, कान, नेत्र, जिह्वा और हृदय ही होते हैं।

राहु काल

- शुभ कार्यों में विशेष रूप से त्याज्य है।
- इस विशेष काल में 1 घंटा 30 मिनट के लिये राहुकाल का अनिष्कारी समय होता है। किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ में यथा संभव इस समय को टाल देना चाहिए।

● सोमवार	–	प्रातः	7:30	से	9:00	बजे तक
● मंगलवार	–	दोपहर बाद	3:00	से	4:30	बजे तक
● बुद्धवार	–	दोपहर	12:00	से	1:30	बजे तक
● गुरुवार	–	दोपहर	1:30	से	3:00	बजे तक
● शुक्रवार	–	प्रातः	10:30	से	12:00	बजे तक
● शनिवार	–	प्रातः	9:00	से	10:30	बजे तक
● रविवार	–	सायं	4:30	से	6:00	बजे तक

भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ

डॉ० रामगोपाल तिवारी, 'मानस रत्न'
ग्रा० पो० निवादा, बाँदा (उ०प्र०) पिन - 210220 फोन : 09451142792

सप्त सागर से मेखलावत परिवृत सम्पूर्ण धरित्री के सर्वाधिकृत शासक के रूप में विराजित त्रिभुवन स्वामी प्रभु श्रीरामचन्द्र एक बार अपने अनुजों तथा भाग्य–भाजन परमप्रिय मारुति नंदन से परिकृत प्राकृतिक सौन्दर्य युक्त उपवन में सुशोभित हो रहे थे। उसी अवसर पर श्रीभरतजी के मन में प्रभु श्रीरामजी के श्री मुख से कुछ सुनने की इच्छा उत्पन्न हुई, परन्तु संकुचित स्वभाव के कारण प्रभु के समक्ष प्रत्यक्ष प्रस्ताव प्रस्तुति का साहस नहीं कर सके। तब श्रीरामजी ने श्रीहनुमानजी से पूछा कि भरत का दृष्टि संकेत क्या है?

श्रीहनुमानजी ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहा– हे प्रभु! श्रीभरतजी आपसे कुछ पूछना चाहते हैं पर संकोच वश हृदय की जिज्ञासा को प्रकट नहीं कर पा रहे –

नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं। प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं।।

(7 / 36 / 6)

तब प्रभु श्रीरामजी कहते हैं कि हनुमान तुम तो मेरा स्वभाव जानते हो। क्या भरत में और मुझमें कोई अन्तर है? अर्थात् श्रीरामजी का कथन है कि मुझ (राम) में और भरत में किंचिन्मात्र भी अन्तर नहीं है –

तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ। भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ।।

(7 / 36 / 7)

श्रीरामजी के कथनानुसार श्रीराम और श्रीभरत में बाह्यान्तर समानता मानस में सैद्धान्तिक है तथा बाहर से एकरूपता –

भरतु रामही की अनुहारी। सहसा लखि न सकहिं नरनारी।।

(1 / 311 / 6)

उम्र, शरीर, वर्ण, रूप, स्वभाव, चाल भी समान है –

बय बपु बरन रूपु सोइ आली। सीलु सनेहु सरिस सम चाली।।

(2 / 222 / 2)

जनकपुर में भी राम–लक्ष्मण की तरह भरत–शत्रुघ्न की जोड़ी कही गई –

सखि जस राम लखन कर जोटा। तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा।।

(1 / 311 / 3)

श्रीराम और श्रीभरत की आन्तरिक एकात्मता –

(1) जड़ पंच तत्व निर्मित शरीर में श्रीरामजी अपने अंश चेतन जीव के संचार से, जड़ को चेतन तथा जीवित चेतन शारीरिक जीवन से अपने अंश आत्मा को अलग करके शरीर को प्राणहीन मृत व जड़ बना देते हैं। जड़–चेतन के इस परिवर्तन को करने में केवल श्रीरामजी ही समर्थ हैं –

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हिं करइ चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य।।

(7 / 119)

जड़ चेतन का यह परिवर्तन अन्य किसी जीव द्वारा सम्भव नहीं है परन्तु चित्रकूट की ओर जाते हुए श्रीभरत के प्रेमोच्छवास से बज्र और पत्थर पिघल कर चेतन की तरह प्रवाहित होकर चलायमान हो गए तथा खग–मृग चेतन जीव मूर्तिवत् जड़ हो गए। गोस्वामीजी कहते हैं –

होत न भूतल भाउ भरत को। अचर सचर चर अचर करत को।।

(2 / 238 / 8)

(2) ईश्वर और जीव में यही अन्तर है कि ईश्वर सदैव एकरस रहता है जबकि जीव परिवर्तन शील है–

जौं सब कें रह ग्यान एकरस। ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस।।

(7 / 78 / 5)

इसीलिए ज्ञानी श्रीजनकजी ने श्रीरामजी को एकरस कहा –

महिमा निगमु नेति कहि कहई। जो तिहुँ काल एकरस रहई।।

(1 / 341 / 8)

लेकिन श्रीभरतजी को भी गोस्वामीजी एकरस सिद्ध करते हैं –

भरत सुभाउ सुसीतलताई। सदा एकरस बरनि न जाई।।

(1 / 42 / 8)

यदि रामजी (भूत, भविष्य, वर्तमान) 'तिहुँ काल' एक रस है तो श्रीभरतजी भी सदा एकरस हैं।

(3) श्रीभरतजी जापक हैं अपने जाप्य राम का जप करते हैं –

बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात।
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जल जात।।

(7 / 1)

पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू। जीह नामु जप लोचन नीरू।।

(2 / 326 / 1)

दूसरी ओर श्रीरामजी भी जापक हैं अपने जाप्य भरत का जप करते हैं –

यह बड़ि बात भरत करइ नाहीं। सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं।।

(2 / 217 / 3)

भरत सरिस को राम सनेही। जगु जप राम रामु जप जेही।।

(2 / 218 / 7)

(4) श्रीराम जी वेद की वाणी से परे हैं, ज्ञान की पहुँच से बाहर हैं –

राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह।।

(2 / 126)

बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन।

(2 / 136)

नेति नेति जेहि बेद निरूपा। निजानंद निरुपाधि अनूपा।।

(1 / 144 / 5)

सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहि जाना।।

(1 / 186 / छंद)

इस प्रकार श्रीभरतजी का भाव भी वेदों के लिए सुगम नहीं है –

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ। लघु मति चापलता कबि छमहूँ।।

(2 / 304 / 1)

(5) श्रीरामजी ब्रह्म हैं –

राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना।।

(1 / 116 / 8)

और ब्रह्म – अनिर्बचनीय, अनुभवगम्य, सूक्ष्मातिसूक्ष्म होता है –

ब्रह्म के समान भरतजी भी अनिर्बचनीय हैं –

भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुखु अह मम मलिन जनेषु।।

(2 / 225)

प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना। जासु नेम ब्रत जाइ न बरना।।

(1 / 17 / 3)

श्रीभरत जी, श्रीरामजी के प्रेम की मूर्ति हैं –

भरतहिं कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही।।

(2 / 184 / 4)

तुम्ह तौ भरत मोर मत एहू। धरें देह जनु राम सनेहू।।

(2 / 208 / 8)

नारद भक्ति सूत्र में प्रेम के भी वही लक्षण बताए गये हैं जो ब्रह्म के हैं – **गुणरहितं, कामना रहितं, अनुभवरूपं, अनिर्बचनीयम्, प्रतिक्षणवर्धमानम्, सूक्ष्मतरं, अविच्छिन्नम् .... इति प्रेमस्वरूपं।।**

मनुजी महाराज ने जब श्रीरामजी से उनके समान पुत्र होने का वर माँगा –

चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।

(1 / 149)

तब श्रीभरतजी की अनुपस्थिति में श्रीरामजी को कहना पड़ा, कि मेरे समान नहीं प्राप्त है, कहाँ ढूँढू?

आपु सरिस खोजौं कहँ जाई

(1 / 150 / 2)

यदि उस समय रामजी के पास भरतजी होते, तो मनुजी को अपने समान का (भरत) दे देते।

जैसे रावण वध के बाद श्रीरामजी ने विभीषण से कहा –

पिता बचन मैं नगर न आवउँ। आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ।।

(6 / 106 / 4)

वन यात्रा पथ में तीर्थराज प्रयाग स्थित महर्षि भरद्वाज जी ने रामजी से माँगा कि आप अपने चरण कमलों में प्रेम का वरदान दे दीजिए –

अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू।।

(2 / 107 / 8)

श्रीराम जी महर्षि की याचना पूर्ति में एवमस्तु कहने का साहस नहीं कर पाए बल्कि संकुचित मुद्रा की मूक भाषा ने स्वीकार किया कि इसका भण्डारी तो भरत ही है –

सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने।।

(2 / 108 / 1)

जबकि श्रीभरत को पाकर त्रिवेणी–ध्वनि और महर्षि भरद्वाज ने उनको राम चरण का प्रेम और भक्ति सुधा सागर की प्राप्ति की घोषणा कर दी –

तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू। राम चरन अनुराग अगाधू।।

(2 / 205 / 7)

राम भगत अब अमिअँ अघाहूँ। कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ।।

(2 / 209 / 6)

इसी प्रकार श्रीराम का यश (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) केवल चार फल ही देता है –

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।

(अयोध्याकाण्ड प्रारम्भ)

यदि हम रामजी के यश से चार फलों से परे कुछ ऐसी याचना करें –

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन।।

(2 / 204)

तो श्रीराम या उनका विमल यश यह वरदान देने में असमर्थ होगा क्योंकि निर्मल राम यश केवल चार फल दायक ही है। तब राम चरन रति प्राप्त करने के लिए भरत चरित्र का आश्रय लेना पड़ेगा –

कहत सुनत सति भाउ भरत को। सीय राम पद होइ न रत को।।
सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को। जेहि न सुलभु तेहि सरिस बाम को।।

(2 / 304 / 2–3)

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति।।

(2 / 326)

अर्थात् श्रीरामजी के कथन से तो श्रीभरत, स्वयं रामजी के समान हैं ही –

तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ। भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ।।

(7 / 36 / 7)

परन्तु गोस्वामीजी की भावना से श्रीभरतजी, श्रीरामजी के पूरक भी है, क्योंकि भगवान शंकर के मत से व्यापक ब्रह्म (राम) के सगुण साकार रूप में प्रकट होने का एक मात्र आधार प्रेम ही है –

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहि मैं जाना।।
अग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी।।

(1 / 185 / 5 एवं 7)

जबकि श्रीभरत ही मूर्तिमान राम प्रेम है (इसी लेख में ऊपर उल्लिखित)। अतः राम को प्राप्त और प्रकट करने के लिए श्रीभरत का ही आश्रय आवश्यक है। इसका कोई अन्य विकल्प नहीं है।

विज्ञापन

NTPC

असि रघुपति लीला उरगारी

आचार्य बैजूनाथ जी महाराज, "मिथिला", फोन : 9212033198

कर्म, क्रिया और लीला को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। जो कर्त्तापन के अभिमान पूर्वक किया जाय तथा जो परिणाम में अनुकूल अथवा प्रतिकूल फल देने वाला हो, वह कर्म कहलाता है। जो कर्त्तापन के अभिमान और फल दोनों से रहित हो वह "क्रिया" कहलाती है, लेकिन जो कर्त्तापन के अभिमान और फलेच्छा से रहित होने के साथ ही दिव्य और लोक कल्याण के निमित्त हो वह लीला कहलाती है। सांसारिक लोगों के द्वारा कर्म होता है। मुक्त महापुरूषों के द्वारा जो होता है वह है क्रिया और जो भगवान के द्वारा होता है वह है लीला। **"लोकवत्तु लीला कैवल्यम्"** रचना पालन और संहार भगवान की लीला है। सच्चिदानन्द के अपने गुणों में क्षोभ की लीला फलीभूत हुई तब सत् चित् आनन्द तत्व की ब्रह्मा विष्णु रूद्र के रूप में क्रमशः ब्रह्माण्ड की सृष्टि, पालन और संहार लीला के लिए प्रगट हुए। कार्य ब्रह्म के रूप में कारण ब्रह्म के लीला की परिणति हो गई। लीला में भगवान साधारण मनुष्यों की तरह क्रिया करके भी निर्लिप्त रहते हैं। भगवान के प्रत्येक कर्म में दिव्यता और लोक कल्याण छिपा होता हैं। **"जन्म कर्म च मे दिव्यम्"** गीता में भगवान का दिव्य उद्‌घोष है। दूसरे शब्दों में जन्म और कर्म की दिव्यता ही भगवान का लीला वैचित्र्य है। भगवान कहते हैं कि कर्मों के फल में मुझे स्पृहा नहीं है, इसलिए मुझे कर्म लिप्त नहीं करते।

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।

(गीता 4/14)

वैष्णव ग्रन्थों के अनुसार –

सच्चिदानन्द धन परमात्मा अनवरत नित्य लीला में संलग्न रहते है। इसी लीला के अन्तर्गत विश्व का समस्त व्यापार चल रहा है। भगवान की लीला दो प्रकार की होती है, अन्तरंग और बहिरंग लीला है। गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराज ने उत्तरकाण्ड में बड़ी सूक्ष्मता से भगवान की इन लीलाओं का चित्रण किया है।

जथा अनेक बेष धरि नृत्य करइ नट कोइ।
सोइ सोइ भाव देखावइ आपुन होइ न सोइ।।

(7/72 ख)

इसी प्रसंग में भगवान श्रीराम की अद्‌भुत लीला का चित्रण है उनकी सेतुबन्ध लीला भगवान श्रीराम अपनी सेना सहित समुद्र तट पर खड़े हैं, तीन दिवस बीत गये, मर्यादा की लीला करते हुए किंतु –

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति॥

(5 / 57)

अब शुरू होती है भगवान की पराक्रम लीला वे भाई लक्ष्मण से कहते हैं – ।

लछिमन बान सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू॥

(5 / 58 / 1)

समुद्र इस लीला से आज शरणागत हो गया, चेतन की बात कौन करे, जड़ भी भगवान के शरणागत हैं समुद्र अपने बन्धन का उपाय स्वयं बताता है। बालपन में ऋषियों के द्वारा नल–नील को दिया गया वरदान आज सहयोग और सेवा का रूप लेता है।

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाई रिषि आसिष पाई॥
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहउँ बल अनुमान सहाई॥

(5 / 60 / 1–3)

"प्रताप तुम्हारे" और **"प्रभु प्रभुताई"** पद इस बात के द्योतक हैं कि सेतुबन्ध श्रीराम के ही प्रताप और प्रभुताई की ही लीला है। एक आश्चर्य भय लीला, इतना लम्बा–चौड़ा सेतु जो पर्वत खण्डो से बना है, जल पर स्थिर खड़ा है। जब भगवान श्रीराम ने जामवंत को सेतुबन्ध की आज्ञा दी तब ऋक्ष राज ने कहा कि प्रभु आपका नाम ही सेतु है जिस पर चढ़कर आपके भक्त दुस्तर अगाध संसार सागर से पार जाते हैं।

सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह।
नाथ नाम तब सेतु नर चढ़ि भव सागर तरहिं॥

(6 / मंगल चरण)

बालपन की चंचलता में नल नील ऋषियों के शालिग्राम जल में फेंक देते। बिना शालिग्राम के संतो की दिनचर्या कैसे शुरू हो पर चंचल बालक माने नहीं तब विवश हो ऋषियों ने शाप दिया कि तुम्हारे द्वारा फेंके गये पत्थर पानी में तैरते रहेंगे। इस प्रकार से नल नील द्वारा फैंके गये पत्थर पानी में तैरते तो थे पर बिखर जाते थे। अब बिखरे पत्थरों के संयोजन के बगैर सेतु निर्माण संभव न था। इस अवस्था में श्रीहनुमान एक पर्वत खण्ड पर "रा" और दूसरे पर "म" लिखते जिससे पत्थर एक दूसरे से जुडने लगे। **"ब्रह्म जीव इव सहज संघाती"** के अनुसार वे जल पर स्थिर भी हो गए। सेतु कार्य आगे बढ़ने लगा, सेतुबन्ध के समय जामवन्त ने नल नील से कहा ।

राम प्रताप सुमिरि मन माहीं। करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं॥

(6 / 1 / 6)

इतना ही नहीं ऋक्षराज जी ने वानरों से भी कहा –

राम चरन पंकज उर धरहू। कौतुक एक भालु कपि करहू।।

(6/1/8)

बाँधा सेतु नील नल नागर। राम कृपाँ जसु भयउ उजागर।।

(6/3/7)

कैसी है परमात्मा की ये प्रभाव लीला। प्रस्तुत प्रसंग में सर्वत्र 'प्रभु प्रभुताई एवं राम नाम का प्रभाव ही दिग्दर्शित हो रहा है। आनन्द रामायण में एक प्रसंग है, इधर वानर भालू 'राम' नाम का उद्घोष करते हुए पत्थर ला रहे हैं। नील नल राम प्रताप का सुमिरन कर पत्थर जल में रख रहे हैं। उधर श्रीहनुमान जी पत्थरों पर 'रा' और 'म' लिखकर संयोजन कर रहे हैं। इधर एकान्त में श्री ठाकुर जी भी एक कौतुक लीला कर रहे हैं। अपने हाथ से पत्थर उठा–उठा कर जल में डाल रहे हैं, लेकिन आश्चर्य! सारे पत्थर डूबते ही जा रहे है। आश्चर्य चकित परमात्मा से श्रीहनुमान जी ने कहा– 'भगवन आप जिसे छोड़ देंगे, वह तो डूब ही जाएगा' इस प्रकार भगवान की लीला कृपा के फल स्वरूप सेतु निर्माण कार्य सम्पन्न हो गया, सेतुबन्ध की आश्चर्यमयी घटना सुनकर रावण भी चकित और भ्रमित हो गया। व्याकुलता में अपने दसों मुख से बोल उठा –

बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस।

(6/5)

रावण आश्चर्य चकित है। सेतुबन्ध की लीला से आश्चर्य चकित रावण को मन्दोदरी और प्रहस्त समझाते हैं– हे स्वामी! श्रीराम कोई साधारण मनुष्य नहीं है। श्रीराम के इस प्रभाव को समझते हुए श्रीसीता जी को लौटा कर मैत्री कर लीजिए। प्रहस्त ने भी कहा –

जेहिं बारीस बँधायउ हेला। उतरेउ सेन समेत सुबेला।।

(6/9/5)

परन्तु हठी रावण ने किसी की भी नहीं सुनी, जिसका कुफल उसे भोगना पड़ा। यहाँ संसार और समुद्र पर विचार करना आवश्यक है। संसार में देहाभिमान ही अत्यन्त दुस्तर एवं अथाह अपार समुद्र है, जिसमें राग, द्वेष ओर अनेकों कामनाएँ ही भयानक जल जन्तु, घड़ियाल और मगरमच्छ हैं, इस संसार समुद्र में आसक्ति और संकल्पों की उत्ताल तरंगे उठ रही हैं। आज के भौतिक युग में व्यर्थ की हठशीलता तथा रावण वृत्ति के कारण त्रास और तनाव इतने बढ़ गए हैं कि सामाजिक व्यवस्था बिखरती जा रही है। मानव सम्बन्ध टूट रहे हैं। इस विखण्डन को रोकने की शक्ति भारतीय सनातन धर्म में है। भगवान के लीला चरित्र टूटे एवं बिखरे समाज को जोड़ने के लिए सेतु है, जब भगवान के लीला चरित्र का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है, तब हमारे कर्म, आचरण और भाव दिव्य बन जाते हैं। कागभुसुण्डी जी उत्तरकाण्ड में श्रीगरूड़ जी को मधुर

अमृतमय वाणी में समझाते हुए कहते हैं– भगवान लीला वपु धारी हैं, लीला विहारी है और नटवर नागर हैं–

असि रघुपति लीला उरगारी। दनुज बिमोहनि जन सुखकारी॥

(7/73/1)

अर्थात् जैसे नट की लीलाओं से भिन्न–भिन्न प्रकार के लोगों पर भिन्न–भिन्न प्रकार का असर होता है, पर नट स्वयं अप्रभावित रहता है। इसी प्रकार भगवान नर–तन धारण करके अद्भुत रहस्यपूर्ण लीलाएँ करते रहते हैं। चूँकि भगवान की समस्त लीलाएँ अद्भुत एवं दिव्य हैं, अतः इसके स्मरण और अनुभूति से हमारे जीवन भी दिव्य और धन्य बनते हैं। दानवीय प्रवृत्तियाँ इन लीलाओं से विमोहित हो जाती है, लेकिन भक्तजन इन लीलाओं में अत्यन्त सुखानन्द की अनुभूति करते हैं। प्रभु की इन लीलाओं का रसास्वादन सिर्फ निज जनों को ही होता है। सर्वस्व की आसक्ति त्याग कर सर्वतोभावेन भगवद् शरणापन्न हो जाने वाला ही निज जन हैं।

इस प्रकार से भगवान का अवतार विशेषकर अपने भक्तों के लिए ही होता है –

सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी॥

(1/13/5)

वे प्रभु भक्त इस संसार में और कुछ न माँग कर केवल यही माँगते है कि हमारे सभी पुण्यों का एक ही फल मिले वह यह कि श्रीभगवान के चरणों में अनन्य प्रेम....

सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ॥

(2/129)

अनमोल बोल

भगवान के अर्चन से, भगवन्नाम के जप से, भगवन्नमूर्ति के ध्यान से, भगवद्गुण–कीर्तन से, हरि के स्मरण से, भगवान की पुण्य कथा के श्रवण से, भगवान की वन्दना करने से, शिव के सेवन से, भगवान के चरणोदक का पान करने से, भगवान को निवेदन किया हुआ भोजन करने से, भगवान को सब कर्म अर्पण करने से, ईश्वर को आत्म–निवेदन करने से, भक्तों के पुण्य संसर्ग से, पुण्यतीर्थ के सेवन करने मनुष्यों की भगवान में भक्ति उत्पन्न होती है।

रामहि केवल प्रेम पिआरा

पं0 दिनेश चंद्र शर्मा, अध्यक्ष

श्रीरामचरितमानस भारतीय जन मानस का हृदयस्पन्दन है। अन्याय और अत्याचार पर न्याय की, दुराचार एवं पापाचार पर सदाचार तथा पुण्य की विजय है श्रीरामकथा। श्रीरामचरितमानस केवल आध्यात्मिक ग्रन्थ ही नहीं है अपितु यह उत्कृष्ट कोटि का काव्यामृत एवं सामाजिक ग्रन्थ भी है। इसमें जीवन के सभी दिव्य पक्षों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। मानव के समग्र व्यक्तित्व को विकसित करने वाले बहुमूल्य तत्वरत्नों से समृद्ध है यह सूक्ति सुधाकर। व्यावहारिक आदर्शों की आधारशिला पर प्रतिष्ठित है श्रीराम कथा का विशाल भवन। अगर हम श्रीरामचरितमानस को पूरी भारतीय साधना पद्धति का निचोड़ कहें तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के परम मंगलमय लोकोपकारक एवं मानव जीवन में सम्पूर्ण रूप से अनुकरणीय चरित्रों का गोस्वामी तुलसीदास ने बड़ी ही सरल भाषा में वर्णन करके कलियुगी जीवों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके सभी कर्म समाज की मर्यादा में सीमित थे। श्रीरामजी को दीन/अनाथ प्रिय हैं। चित्रकूट आवास के समय श्रीरामजी वहाँ के कोल–भीलों से उनके निश्चल प्रेम से आविर्भूत हो ऐसे मिलते हैं जैसे कोई पिता अपनी संतान से मिलता है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि श्रीरामजी को केवल प्रेम ही प्रिय है –

रामहि केवल प्रेमु पिआरा। जानि लेउ जो जाननिहारा।।

(2/137/1)

गोस्वामी तुलसीदास मानो चेतावनी देकर कहना चाहते हैं कि हे ज्ञानी, ज्ञानमार्गीजन! यह अच्छी तरह ध्यान में रखिए कि भगवान को भक्तिहीन ज्ञान, भक्ति विहीन ज्ञानी बिल्कुल नहीं भाता, प्रिय नहीं लगता। पर ज्ञानहीन, सब साधनहीन, दीन बालकों के समान भक्त भगवान को प्यारे लगते हैं, कारण कि **रामहि केवल प्रेमु पिआरा।** ज्ञानी लोगों को तथा प्रेमी सेवकों को भी कामक्रोधादि भारी शत्रु हैं ही। पर **'बालक सुत सम दास अमानी'** दासों को प्रभु का बल रहता है जिससे माया और काम क्रोधादि शत्रु उनके पास जाते ही नहीं, बुरी दृष्टि से उनकी ओर ताकते भी नहीं है, जबकि ज्ञानियों को अपने ही बल पर निर्भर रहना पड़ता है क्योंकि माया तथा कामक्रोधादि शत्रु हरिभक्ति और भगवान के सिवा किसी से नहीं डरते।

नारदजी को समझाते हुए श्रीरामजी कहते हैं –

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा। भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा।।
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी।।
मोरे प्रौढ़ तनय सम ग्यानी। बालक सुत सम दास अमानी।।
जनहि मोर बल निज बल ताही। दुहु कहँ काम क्रोध रिपु आही।।

(3/43/4–5 तथा 8–9)

भगवान श्रीराम को केवल शुद्ध प्रेम प्यारा है अर्थात् छल कपट रहित प्रेम। गोस्वामी तुलसीदास ने 'केवल' शब्द पर अधिक जोर देकर प्रेम की महत्ता को बढ़ा दिया है। भक्ति विहीन ज्ञान, कर्म, पांडित्य, चतुराई, वित्त, जाति–पाँति आदि दूसरा उन्हें कुछ भी प्रिय नहीं है।

श्रीरामजी ने सब वनवासी कोल भीलों को संतुष्ट किया और कोमल मीठे वचन कहकर प्रेम को परिपुष्ट करने वाले वचन कहकर उनको विदा किया। यथा –

राम सकल बनचर तब तोषे। कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे।।

(2/137/2)

'जानि लेउ जो जाननिहारा' पर बल देकर गोस्वामी तुलसीदास यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जिसको यह जानने की चाह हो कि प्रभु श्रीरामजी को केवल शुद्ध प्रेम ही प्रिय है वह इतने से ही जान ले। तात्पर्य यह है कि यह समझकर और यह मानकर कि प्रभु से प्रेम करना हमारा परम कर्तव्य है, प्रभु से प्रेम करोगे तो वे पितृवत् तुम्हें प्यार करेंगे और पुत्रवत् तुम्हें मानेंगे। हमें दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि जब प्रभु कोल भीलों पर वात्सल्य रख सकते हैं तो जो वर्णाश्रम में हैं, कर्म–ज्ञान उपासना के अधिकारी हैं और प्रभु से प्रेम करते हैं, प्रभु उनकी अवश्य अधिक सुनेंगे।

श्रीराम शबरी से नवधा भक्ति की चर्चा करते हुए स्पष्ट कर देते हैं और कहते हैं कि मुझे तो केवल शुद्ध प्रेम (छल कपट रहित प्रेम) ही चाहिये –

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता।।
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।।
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।

(3/35/4–5)

प्रभु श्रीराम जब मुनि भरद्वाज के आश्रम पहुँचे तो मुनीश्वर ने कुशल पूछकर बैठने के लिये आसन दिए। यद्यपि भरद्वाज जी के सैकडों शिष्य हैं पर उन्होंने अपने हाथ से आसन बिछाए और कंदमूल फल आदि स्वयं ही लाकर दिये। इससे आदर तो स्पष्ट हुआ ही, पर लाने और देने की पद्धति तथा उस समय की उनकी मुख मुद्रा से उनका प्रेम पहचाना गया। नैवेद्य समर्पण पूजा का ही अंगभूत, एक उपचार है। तात्पर्य यह कि कंदमूलादि नैवेद्य समर्पण करते समय हृदय में आनंद उमड़ा और प्रेमानंद से रोमांच, प्रेमाश्रु आदि भाव प्रकट हुए। उन्हें लगा कि जिस भगवान को आज तक मैं केवल भावना से नैवेद्य अर्पण करता रहा वही

परमात्मा आज साक्षात् प्रकट होकर मुझ गरीब के हाथ से दिया हुआ **'पत्रंपुष्पंफलं तोयं'** ग्रहण करेगा। ये कंदमूलादि तो मानो अमृत से ही बने हुए हैं। स्वर्ग में अमृत भक्षण करने वाले देव भी मर्त्य ही हैं, पर जो कोई भी इस तरह सच्चे प्रेम से साक्षात् प्रभु का पूजन करते हैं वे ही सच्चे रूप में अमृतपान करने वाले हैं और उनके द्वारा अर्पित किया हुआ प्रत्येक पदार्थ प्रभु को अमृत तुल्य ही लगता है।

शबरी द्वारा प्रेमपूर्वक भेंट किए गये कंदमूलों की प्रभु ने बारम्बार जैसी प्रशंसा की है वैसी दूसरे किसी के दिए हुए फलों की नहीं की। सार यही है कि शबरी भीलनी होकर भी बालक सुत सम भक्त है और भरद्वाजादि तनयसम भक्त हैं। शबरी के फलों की प्रशंसा की तो भरद्वाज जी के गुणों की। भरद्वाज जी के प्रेम की यह अपूर्वता है कि वनवास काल में श्रीरामजी निवास के लिये किसी के आश्रम में ठहरे तो सिर्फ भरद्वाज जी ही के। एक बार नहीं, किन्तु दुबारा भी। वनवास का अन्तिम दिन भी सीता लक्ष्मण सहित भरद्वाजाश्रम में ही बिताया है यथा –

भए बिगतश्रम राम सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे।

(2/107/4)

तुरत पवनसुत गवनत भयऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ।।
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही। अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही।।

(6/121/3–4)

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्ण, वैभव और वाणी का विलास उन्हें रिझा नहीं पाता। उन्हें तो एक मात्र प्रेम ही प्रिय है, किन्तु गोस्वामी जी यह जानते थे कि इसे कानों के द्वारा सुनना सरल है, पर समझ पाना अत्यन्त कठिन है। व्यक्ति को जीने की जिस परम्परा का अभ्यास है, वह इससे सर्वथा भिन्न है। संसार में भी व्यक्ति को प्रेम प्रिय है; परन्तु 'केवल प्रेम' से वह सन्तुष्ट नहीं हो पाता उसे तृप्त करने के लिये प्रेम के साथ मोदक भी चाहिए क्योंकि वह यह मानता है कि मन के मोदक से भूख नही मिटती। इसीलिए 'केवल प्रेम' की बात पर विश्वास करना कठिन है। संसार में जानने के बाद भी क्रिया का आश्रय लेना पड़ता है, क्योंकि भोजन बनाने की विधि जानने मात्र से क्षुधा शांत नहीं होती है, किन्तु यहाँ तो केवल जानना मात्र है, कि प्रभु को केवल प्रेम प्रिय है, और प्रेम क्रिया न होकर भावना मात्र है। प्रभु के इस स्वभाव को जान लेना ही यथेष्ठ है। गीता में श्रीकृष्णजी भी यही घोषणा करते हैं – "मैं समस्त प्राणियों का सुहृद हूँ, इतना जान लेने से ही व्यक्ति परम शान्ति पा लेता है।"

सुहृदः सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।

गोस्वामी तुलसीदासजी भी यही दावा करते हैं;

रामहि केवल प्रेमु पिआरा। जानि लेहु जो जाननिहारा।।

भगवद् श्रीरामावतरणम्

श्री गोपाल सिंह, प्रेम सरोवर, गाजीपुर बरसाना (मथुरा), फोन **:** 8273550296

अखिल ब्रह्माण्ड नायक, कण–कण में व्याप्त निर्गुण ब्रह्म के सगुण–साकार रूप मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के गुणगान करते हुए कुछ श्लोकों का उल्लेख किया जा रहा है –

सर्वदा राम एवास्तु मे रक्षकः
रामचन्द्रं प्रभुं सर्वदाहं भजे।
नास्ति रामेण तुल्यो दयालुः परः
सर्व दैवास्तु रामायभूयो नमः॥1॥

अर्थ – भगवान श्रीराम सर्वदा मेरी रक्षा करें और मैं हमेशा प्रभु राम का भजन करूँ। श्रीराम के समान कोई अन्य दयालु नहीं है। पुनः पुनः श्रीराम को मेरा प्रणाम स्वीकार हो।

नास्ति रामात् परं तत्व मन्यत् क्वचित्
सर्वदैवास्मि रामस्य दासानुगः।
सर्वदैवास्तु रामे विलीनं मनः
आशु हे राम मामुद्धद प्रार्थये॥2॥

अर्थ – भगवान श्रीराम से परे कोई अन्य तत्व नहीं है कहीं भी। मैं हमेशा श्रीराम के दासों का अनुगामी बना रहूँ। मेरा मन सर्वदा श्रीराम में लगा रहे। हे श्रीराम में प्रार्थना करता हूँ कि भवसागर में मग्न मेरा शीघ्र ही उद्धार करें।

आदि मूलं रघोरन्वयस्यास्ति यः
ज्योतिशां यो समेशा पतिः संस्मृतः।
सर्वदेवात्मको व्योमनाथो रविः।
काल भागैक हेतुः मया नम्यते॥3॥

अर्थ – जो भगवान सूर्य, रघुकुल के आदि कारण हैं तथा समस्त प्रकाशकों के भी प्रकाशक है, जिनमें सभी देवों का वास है तथा जो आकाश के स्वामी एवं काल का विभाजन करने के एकमात्र कारण हैं, मैं उनको प्रणाम करता हूँ।

भजिअ राम सब काम बिहाई

डॉ० भगवानदास पटैरया, महासचिव

सृष्टि में चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते हुए जीव को करुणामय परम प्रभु अपनी अहैतुकी कृपा से कभी न कभी मनुष्य योनि प्रदान करते हैं। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

आकर चारि लच्छ चौरासी। जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी।।
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा।।
कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही।।

(7 / 44 / 4–6)

सभी योनियों में केवल मनुष्य योनि ही कर्म योनि है जिसमें मानव नवीन कर्म करके अपना उद्धार कर सकता है क्योंकि स्वंय के कर्तव्य के अलावा और दूसरा कोई साधन नहीं है। ईश्वर भी उन्हीं पर कृपा करते हैं जो अपने कर्तव्यमार्ग का पालन करते हुए निष्कपट भाव से उनका स्मरण करते हैं।

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई।।

(1 / 200 / 6)

मन–वचन–कर्म से निष्कपट होकर व्यवहार करते हुए भगवत् भजन करना अत्यंत कठिन है क्योंकि जन्म जन्मान्तर के कुसंस्कार यह नहीं करने देते हैं। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में साधना के अलग–अलग मार्ग हैं, पर कलियुग में केवल 'हरि नाम' का ही सहारा है।

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू।।

(1 / 27 / 7)

कलियुग जोग न जग्य न ग्याना। एक अधार राम गुन गाना।।
सब भरोस तजि जो भज रामहि। प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि।।
सोइ भव तर कछु संसय नाहीं। नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं।।

(7 / 103 / 5–7)

अब प्रश्न यह है कि भजन कैसे करें। समय ही नहीं है। पर विचारणीय तथ्य यह है कि भजन के लिए अलग से माला लेकर बैठने की आवश्यकता नहीं है, किंतु यदि प्रभु कृपा से ऐसा संयोग बन जाए तो सर्वोत्तम है। भजन मन से करना होता है और गोस्वामी तुलसीदास ने अपने अनुभव से और ईश्वर की प्रेरणा से हमें यह सूत्र दिया है कि चाहे भाव से हो, कुभाव से हो, आलस्य और बिना मन के हो तब भी

ईश्वर–स्मरण सर्वत्र मंगलकारी है।

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।

(1/28/1)

इस प्रकार से यह तो स्पष्ट है कि भगवत् भजन, विशेषकर इस कलियुग में मंगलकारी है। फिर भी हम इस कल्याणकारी, भव–बंधन छुड़ाने वाले पुनीत कार्य में क्यों नहीं लगते। इसका प्रमुख कारण वह माया है जो हमें चौरासी लाख योनियों में घुमाती है। इसलिए मानव का ध्यान इस क्षणभंगुर नाशवान शरीर के लिए सुख सुविधाएँ जुटाने, अपना नाम कमाने, ख्याति प्राप्त करने और सम्पत्ति की वृद्धि में लगा रहता है। हम सोचते हैं कि बुढ़ापे में भजन करेंगे पर बुढ़ापा किसने देखा और फिर बुढ़ापे में जब शरीर में कष्ट होगा तब भजन कैसे होगा। इसलिए हमें इस मानव शरीर के परम लक्ष्य को समझकर उसकी प्राप्ति हेतु सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। इस मानव शरीर की सफलता बहु सम्पत्ति और संतति पैदा करने, यश–कीर्ति प्राप्त करने में नहीं है। इसकी एकमात्र सफलता इसमें है कि सभी कामनाओं का त्याग करके भजन करें।

देह धरे कर यह फलु भाई। भजिअ राम सब काम बिहाई।।

(4/23/6)

मानव शरीर कर्मयोनि है। अतः कर्म तो करना ही है पर आसक्ति एवं कामनाओं का त्याग करते हुए कर्म करना श्रेष्ठ है और जब ऐसा करेंगे तभी सच्चे अर्थ में भजन हो सकेगा। यदि विषयों का चिंतन करेंगे तो उनमें आसक्ति हो जाएगी और फिर उनको प्राप्त करने में बाधा आने पर क्रोध उत्पन्न हो जाएगा और क्रोध से मूढ़भाव उत्पन्न होता है जिससे ज्ञानशक्ति का नाश होकर मानव का पतन हो जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने युद्ध न करने का संकल्प लेने वाले अर्जुन को इस प्रकार से समझाया था।

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगः तेषु उपजायते।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधः अभिजायते।।
क्रोधात् भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृति विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशात् बुद्धिनाशो बुद्धि नाशात् प्रणश्यति।।

(गीता–2/62–63)

इस प्रकार से 'मन' ही सभी उपद्रवों की जननी है। श्रीरामजी को नागपाश में बँधे देखकर उत्पन्न हुए मोह के निवारणार्थ गरुड़ जी जब काकभुसुंडि जी के पास जाकर श्रीराम कथा सुनते हैं तब उनका मोह दूर हो जाता है। तदुपरांत काकभुसुंडि जी उन्हें बताते हैं कि इस संसार में मनोरथ अर्थात् कामना ऐसा रोग है जिससे विरले ही बच पाते हैं। धन–सम्पत्ति अर्जित करने, परिवार में वृद्धि करने और यश–कीर्ति प्राप्त करने की कामना से सभी की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

कीट मनोरथ दारु सरीरा। जेहि न लाग घुन को अस धीरा।।

सुत बित लोक ईषना तीनी। केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी।।

(7 / 71 / 5–6)

इसलिए मानव का परम कर्त्तव्य यह है कि संतोषवृत्ति अपनाएँ क्योंकि बिना संतोष के कामनाएँ समाप्त नहीं होंगी और जब तक ये कामनाएँ रहेंगीं तब तक स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होगा। राम भजन के बिना ये कामनाएँ वैसे ही नहीं मिट सकतीं जैसे कि बिना थल के पेड़ नहीं उग सकता।

बिनु संतोष न काम नसाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं।।
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा। थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा।।

(7 / 90 / 1–2)

इस प्रकार से यदि कामनाएँ नहीं मिट पा रहीं है तब भी भजन तो करते रहना चाहिए। राम भजन के प्रभाव से शनैः शनैः कामनाएँ समाप्त होती जाएगी और एक ही कामना रह जाएगी कि केवल प्रभु को चाहूँ या उनकी चाह में अपनी चाह समझकर सुख–दुख द्वन्दों के ऊपर उठ जाऊँ। एक कवि ने लिखा है –

चाह यही इक मेरी भगवन् और चाह मिट जावे।
केवल तेरी चाह रहे बस एक चाह रह जावे।।

समस्त कामनाओं के त्याग के पश्चात् जो श्रीराम भक्ति में लीन हैं वे भी भजन नहीं छोड़ते हैं। वे नाम रूपी सुधा का निरंतर आस्वादन करते रहते हैं।

सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ किए मन मीन।।

(1 / 22)

ऐसे भक्तजन जिनकी कोई कामना न हो अर्थात् जिनको कभी कुछ न चाहिए और श्रीराम जी के प्रति जिनका सहज प्रेम है, उनके मन में श्रीराम जी सदा वास करें, यह महर्षि वाल्मीकि का कथन है –

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु।।

(2 / 131)

भजन करने का अर्थ सतत् भगवत् चिंतन है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध करते हुए हर समय उनका स्मरण करने का उपदेश दिया –

तस्मात् सर्वेषु कालेषु माम् अनुस्मर युध्य च।
मयि अर्पित मनोबुद्धिः मामेव एश्यसि असंशयम्।।

(गीता–8 / 7)

भगवान शंकर ने पार्वती जी को श्रीराम कथा सुनाते हुए अपना अनुभव बताया कि हरिभजन ही संसार में सत्य है बाकी सब तो सपने की तरह है –

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना। सत हरि भजनु जगत सब सपना।।

(3 / 39 / 5)

गरुड़ जी को श्रीराम कथा सुनाने के उपरांत काकभुसुंडि जी भी अपना अनुभव बताते है कि बिना हरि भजन के जीवन के दुख अर्थात् जन्म–मरण का चक्र नहीं छूट सकता है।

निज अनुभव अब कहउँ खगेसा। बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा।।

(7 / 89 / 5)

भगवत् भजन का महत्त्व बताते हुए काकभुसुंडि जी कहते हैं कि बिना भजन के मोक्ष प्राप्त करना उसी प्रकार से असंभव है जिस प्रकार बिना सूर्योदय के रात्रि का समाप्त होना। इसी प्रकार बिना भजन के जीवन के क्लेश अर्थात् जन्म–मरण का चक्र भी मिटने वाला नहीं है –

सोह न राम पेम बिनु ग्यानू। करनधार बिनु जिमि जल जानू।।

(2 / 277 / 5)

स्वयं भगवान श्रीराम ने काकभुसुंडि जी को बताया कि भक्ति विहीन ब्रह्मा भी मुझे अन्य जीवों के समान ही प्रिय हैं किंतु मेरा भक्त मुझे अत्यंत प्रिय है चाहे वह किसी भी नीच योनि में हो।

भगति हीन बिरंचि किन होई। सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई।।
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी। मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी।।

(7 / 86 / 9–10)

ज्ञानी लोग मुक्ति के लिए अर्थात् जन्म–मरण के चक्र से छुटकारे हेतु साधना करते हैं किंतु वही मुक्ति बिना प्रयास के अनायास ही राम भजन से प्राप्त हो जाती है।

अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। संत पुरान निगम आगम बद।।
राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं। अनइच्छित आवइ बरिआईं।।

(7 / 119 / 3–4)

श्रीराम कथा कथन, श्रवण, मनन–चिंतन ही राम भजन है और प्रेमपूर्वक मन लगाकर इसके कहने–सुनने से श्रीराम जी के प्रति अवश्य ही प्रेम उत्पन्न होगा, ऐसा गोस्वामी तुलसीदास जी ने शिव जी की साक्षी से घोषणा की है।

जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता।।
होइहहिं राम चरन अनुरागी। कलि मल रहित सुमंगल भागी।।

(1 / 15 / 10–11)

सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ॥

(1/15)

इस प्रकार से जब श्रीराम कथा से श्रीराम जी के चरण कमलों में अनुराग उत्पन्न हो जाएगा तब फिर संसार के विषय भोग मन को न लुभा सकेंगे। फिर वे प्रिय नहीं लगेंगे।

राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही। बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हही॥

(2/84/8)

प्रेमी भक्त विंदु महाराज ने अपनी भजनमाला 'मोहन–मोहनी' में लिखा है कि चाहे करोड़ों उपाय कर लो, बिना प्रेम के मोहन मिलने वाला नहीं है।

मोहन प्रेम बिना नहिं मिलता, चाहे कर लो कोट उपाय।
प्रेम बिंदु दृग से जब टपके, तुरत प्रगट हो जाय॥

बिना प्रेम के भगवान नहीं मिल सकते। भगवत् भजन करने से भगवत् प्रेम जागृत होगा जिससे जीवन का परम लक्ष्य भगवत् प्राप्ति होगी।

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा। किएँ जोग जप ग्यान बिरागा॥

(7/62/1)

अयोध्यावासियों को स्वयं अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम ने यह उपदेश दिया कि इस मानव शरीर का फल अर्थात् उद्देश्य विषय भोग नहीं है क्योंकि स्वर्ग भी अल्प सुख के पश्चात् पुनः दुखदाई है –

एहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई॥
नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं॥

(7/44/1–2)

अतः मानव जीवन की सार्थकता इसी में है कि हम समस्त कामनाओं का त्याग कर अपना कर्त्तव्य निर्वाह करते हुए भगवत् भजन में लीन हो जाएँ।

देह धरे कर यह फलु भाई। भजिअ राम सब काम बिहाई॥

(4/23/6)

मृत्यु और मोक्ष में अन्तर

साँसें खत्म हो जाएँ तमन्ना बाकी रह जाए यह है मृत्यु।
तमन्नाएँ खत्म जो जाएँ और साँस रह जाए यह है मोक्ष।।

विज्ञापन

कामहि नारि पिआरि जिमि

डॉ0 सहदनारायण उपाध्याय,
ए-66, आवास विकास (नंदनपुरा) झाँसी। मो॰ : 07860039496

काम शब्द बड़ा रहस्यमय व गंभीर है। अगर हम सब गौर से देखें तो संसार के मूल में ईश्वर तो है ही पर संसार के निर्माण में काम की वृत्ति ही समझ में आती है, इस वृत्ति के अनेक पक्ष हैं, कुछ काम को निंदनीय तो कुछ वंदनीय मानते हैं। श्रीरामचरितमानस में खल व निंदनीय रूप प्रदर्शित किया गया है लेकिन मनुष्य के अन्तःकरण में जो आनन्द व रस की पिपासा है उसका साकार रूप भी तो काम ही है तो वह वंदनीय हो जाता है।

संसार में जिन तीन विकारों का नाम प्रमुखता से लिया जाता है वे काम, क्रोध और लोभ हैं इनमें आप देखते होंगे कि लोग क्रोध व लोभ से जुड़ा नाम भी रखना पसंद नही करते है पर काम वाले नाम तो आम है जैसे मनोज, मदन लाल आदि। अतएव इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

मनुष्य शांति व सुख के लिए सदैव लालायित रहता है। प्राचीन काल से इनके लिए दो मार्ग निर्धारित रहे है, एक निवृत्ति दूसरा प्रवृत्ति। जहाँ तक आत्म कल्याण की बात है वहाँ निवृत्ति मार्ग की ही प्रशंसा की गई है पर संसार के निर्माण, सृजन तथा विस्तार की बात इस मार्ग से तो संभव ही नहीं है। श्रीरामचरितमानस में दोनों मार्गों पर विचार करने के लिए भगवान शंकर का प्रसंग ले सकते हैं। एक नाम उनका कामारि भी है, इससे तो वे काम के शत्रु ही लगते हैं पर जिस रूप से वर्णित है वह महत्वपूर्ण है। मानस में शंकरजी की कथा के साथ तारकासुर के नाम का उल्लेख है। तारकासुर एक भोगवादी दानव है। भोग और अमरत्व दोनों ही प्राप्त करने के लिए वह देवताओं पर नाना प्रकार के अत्याचार करता है। वास्तव में देवता व दैत्य दोनों का मानना है कि संसार की चीजों तथा विषयों में ही सुख है, बस अंतर यह है कि आसुरी वृत्ति भोग वस्तु छीनने में भी विश्वास करती है येन केन प्रकारेण विषय सुख प्राप्त होने चाहिए। देव वृत्ति हैं सद्गुणों को, तप या वरदान से प्राप्त करने में विश्वास रखती है। पर भोगों के प्रति आसक्ति दोनों की बराबर है। देवता न कभी बूढ़े होते हैं न ही उन्हें कोई रोग होता है। भोग भोगने के लिए यही वातावरण तो अच्छा है। इसीलिए तो मनुष्य जो भोगवादी है, देवता होना चाहता है, कभी कभी दैत्य भी तपस्या या साधना करते दिखाई देते हैं तो उनका उद्देश्य भी भोग के लिए शरीर की अमरता ही है। दैत्यों का एक स्वभाव यह भी है कि जिसकी आराधना करते है उसे शक्तिमान तो मानते हैं पर बुद्धिमान अपने को ही मानते हैं तथा जानते हैं कि देवता अमरता का वरदान तो नहीं देंगे पर घुमा फिरा कर हम उनसे ले ही लेंगे जैसे तारकासुर शंकरजी के पुत्र से ही मरना चाहता है और शंकरजी ब्याह करेंगे नहीं, तो वह अमर अपने आप हो जाएगा।

आनंद पाने की दो वृत्तियाँ दिखती हैं एक तो वह जिसमें ऊपर उठाने की प्रेरणा मिलती है। ज्यों–ज्यों मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार से ऊपर उठता जाएगा त्यों–त्यों उसके आनंद का विस्तार होता जाएगा तथा उसको परमानन्द की प्राप्ति हो जाएगी। इसे मुक्तावस्था या भगवान से अभिन्नता की स्थिति भी कहते हैं आनंद प्राप्त करने की दूसरी वृत्ति नीचे की दिशा में ले जाती है, व्यक्ति को पतनोन्मुखी बना देती है। शरीर में भी माने तो उर्ध्व अंगों से आनंद पाने का मतलब उठाने की वृत्ति का परिचायक है तथा अधोगामी अंगों से सुख पाने की चेष्टा मानो मनुष्य को पतन के गर्त में डाल देती है।

तारकासुर यही सोचता है जो ईश्वर ऊपर उठ कर समाधि सुख ले चुका है, परमानन्द में स्थित हो चुका है, वह शरीर सुख क्यों लेगा, क्योंकर पुनः विवाह करेगा। यही लूली लंगड़ी तर्क उस दैत्य की है जिससे वह सोचता है वह अमर हो जाएगा। इसीलिए ब्रह्माजी उसके वध का उपाय बताते हुए कहते हैं –

सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ।
संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतइ रन सोइ॥

(1/82)

तारकासुर का गणित भले ही सही न बैठा हो पर उसकी धारणा बिल्कुल ठीक है कि आनंद लेने की वृत्ति तो सभी में होती है कोई सूक्ष्म रूप से शरीर और विषयों से ऊपर उठ कर आनंद लेते है ओर कोई स्थूल रूप से शरीर के द्वारा प्राप्त करना चाहते है। दोहावली में गोस्वामीजी ने लिखा है –

पिअही सुमन रस अलि बिटप काट कोल फल खात।
तुलसी तरु जीवी जुगल सुमति कुमति की बात॥

इसका अभिप्राय यह कि एक ही वस्तु से रस व आनंद की प्राप्ति उस वस्तु को बिना नुकसान पहुँचाए भी की जा सकती है, यह तो व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर है। व्यक्ति की प्रवृत्ति ही उसे आनंद के मार्ग के लिए प्रेरित करती है।

इसी सन्दर्भ में पुष्प वाटिका का मधुर प्रसंग सामने आता है। भगवान श्रीराम को श्रीसीताजी के आभूषणों की ध्वनि सुनकर कामदेव की याद आ जाती है। भगवान श्रीराम ने लक्ष्मणजी की ओर देखा, पर उन पर ऐसा कोई प्रभाव नहीं है। जितनी ललित कलाएँ हैं, सबके मूल में काम रहता है अन्यथा संगीत नृत्य श्रृंगार में कोई आनंद आ ही नहीं सकता। इस संदर्भ में श्रीरामजी लक्ष्मणजी से कहते हैं कि कामदेव के मन में विश्व विजय की इच्छा हुई है। वह वाद्य के साथ मुझ पर आक्रमण कर रहा है। अनुज जानते हैं कब बोलना उचित है कब नहीं। वैसे आक्रमण दो तरीके से होता है, छिपकर या प्रगट रूप में। जब लोगों को यह लगे कि यह पाप है, तो छुपाने की वृत्ति होती है, पर यहाँ पुष्प वाटिका में तो खुलकर बाजे के साथ आ रहा है –

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि॥
मानहुँ मदन दुन्दुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही॥

(1/230/1–2)

इतना कहते कहते भगवान श्रीराम को सीताजी दिखाई दीं –

अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा।।

(1 / 230 / 3)

श्रीरामजी, जनक तनया सीताजी को देखकर अपने अनुज लक्ष्मण से कहते हैं –

तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई।।
पूजन गौरि सखीं लै आई। करत प्रकासु फिरइ फुलवाई।।

(1 / 231 / 1–2)

प्रभु का एक–एक शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। एक तो प्रभु कहते हैं कि उनके लिए यज्ञ हो रहा है, दूसरे वे अपने प्रकाश से सारी पुष्प वाटिका को प्रकाशित कर रही हैं। तुलसीदासजी भगवान के मनोभाव को प्रदर्शित करने के लिए एक पंक्ति और लिखते हैं –

सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छबिगृहँ दीपसिखा जनु बरई।।

(1 / 230 / 7)

रामायण में दीपशिखा का वर्णन तीन रूपों में किया गया है– भक्ति की दीपशिखा, माया की दीपशिखा और ज्ञान की दीपशिखा। दीपक व पतंगों को हिंदी व उर्दू शायरों ने तो प्रेमी की तरह वर्णित किया है। सच्चा प्रेमी जान की परवाह न करके दीपशिखा से मिलने के लिए अपने को भस्म कर देता है। गोस्वामीजी ऐसा नहीं मानते है वे कहते हैं पतंगा सच्चा प्रेमी नहीं, वह तो मूर्ख है। सच्चे प्रेमी तो विज्ञ पुरुष हैं क्योंकि वे प्रकाश का सदुपयोग करते हैं दीपशिखा के प्रकाश में अध्ययन करते है, कई उपयोगी कार्य करते हैं। दीपशिखा में प्रकाश एवं दाहकता, दो गुण है। पतंगे को दाहकता प्रिय है जो कभी–कभी झुण्ड में आकर उसे बुझा भी देते हैं। सीताजी भी अयोध्या तथा जनकपुर को अपने प्रकाशमय गुण से प्रकाशित करती हैं पर लंका में रावण दाहकता गुण प्राप्त कर सर्वनाश को प्राप्त होता है। मानस के लंकाकाण्ड में इससे जुड़ा हुआ एक व्यंगात्मक प्रसंग है। अंगद जब रावण के दरबार में पहुँच गए तो रावण अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए कहता है कि तुम्हारा स्वामी मेरी तुलना में बहुत निम्न स्तर पर है क्योंकि मैंने शंकरजी की पूजा में अपने सिर अर्पित किए है उसने फूल अर्पित किए हैं –

सिर सरोज निज करन्हि उतारी। पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी।।

(6 / 25 / 3)

दूसरा रावण अपने को कैलाश पर्वत का उठाने वाला कहता है तो अंगद कहते है –

जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खर बृंद।
ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद।

(6 / 29)

व्यंग्य में अंगदजी ने कहा तुम्हारी कथा केवल पतंगों एवं गधे में सिमट कर रह गई है अर्थात् तुम जरा भी बुद्धिमान होते तो सीता जैसी दीपशिखा के लिए पतंगा न बन जाते। उनके दिव्य प्रकाश से अपना भला कर लेते, जनकपुरी और अयोध्या जैसा। अब उनकी दाहकता में जलकर नष्ट ही होओगे। सौन्दर्य दीपशिखा की तरह ही तो है। रावण को सीताजी के प्रति दृष्टि के लिए सावधान करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं –

दीप शिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद करहिं सदा सत्संग।।

(3 / 46 ख)

भगवान श्रीराम ने श्रीसीताजी के परिचय में कहा कि धनुष यज्ञ इन्हीं के लिये हो रहा है। यह यज्ञ प्रकाश के पक्ष का ही द्योतक है। अब जितने भी राजा है सब स्वयंवर को यज्ञ न समझकर जुआ समझ रहे हैं। दाँव खेलो शायद अपना ही पड़ जाए। जुए में पाने की वृत्ति है पर यज्ञ में देने की। भगवान श्रीराम एक ओर काम का प्रभाव भी स्वीकारते हैं तो सीताजी को यज्ञमई एवं प्रकाशमई भी स्वीकार करते है –

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा।।

(1 / 231 / 3)

श्रीसीताजी ने भगवान श्रीराम को देखा पर कोई वार्तालाप नहीं हुआ। वे इतनी तन्मय हो जाती है कि देह की सीमा से ऊपर उठ जाती है –

थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें।।

(1 / 232 / 5)

गोस्वामीजी इस अवसर का वर्णन करते हुए कहते हैं कि श्रीराम का मन यहाँ भ्रमर बन गया है –

करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान।।

(1 / 231)

भगवान जानते है कि इस विदेह नगर में देह की प्रमुखता नहीं है। यहाँ काम के शरीर के स्थान पर उससे ऊपर उठ कर रस ग्रहण करने की उत्कृष्ट और दिव्य वृत्ति है।

भगवान राम के विवाह में 'काम' का बार बार वर्णन आता है पर उसको खल या दुष्ट नहीं कहते क्योंकि काम ही तो विवाह का मूल देवता है। घोडा देखें तो 'काम', जिस पर प्रभु विराजते है। धनुष यज्ञ में गोस्वामीजी सीताजी के नेत्रों में काम को स्थान देते है। मानो 'काम' का इससे ज्यादा उच्च स्थान क्या हो सकता है –

प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल॥

(1 ⁄ 258)

'काम' को किस रूप में देखे उसे निंदनीय मानें या वंदनीय इस प्रश्न से समाज एवं संसार का स्वरूप जुड़ा है। यदि वास्तविक जीवन की क्रियाओं में मर्यादा के नाम पर बड़े कठोर नियम कर दें, तो संसार तो एक जेलखाना बन जाएगा। व्यक्ति बंदी की तरह जीवन यापन करने लगेगा। लेकिन दूसरी ओर यदि खुली छूट दे दी जाय, तब तो समाज एक पागलखाना हो जाएगा। वस्तुतः समाज को इन दोनों में से किसी की भी आवश्यकता नहीं हैं। वहाँ तो दोनों के बीच का रास्ता होना चाहिए जिसमें व्यक्ति का कल्याण सुनिश्चित हो। इस प्रकार से काम की स्वेच्छाचारिता और कठोर नियंत्रण की वृत्तियो के बीच सामंजस्य की आवश्यकता है।

भक्तों की भाषा में यदि कहें तो वे भी प्रभु–प्रेम की तीव्रता के माप दंड के रूप में काम सुख का ही दृष्टान्त देते हैं। 'मानस' में गोस्वामीजी भगवान श्रीराम से प्रेम की याचना करते हैं तो मानों जैसे प्रभु पूछते हैं कि तुम किसकी तरह प्रेम चाहते हो भरत, लक्ष्मण या हनुमान की तरह? तो तुलसीदासजी कहते हैं, प्रभु मेरा स्थान इतने बड़े भक्तो में नहीं है। मुझे तो –

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥

(7 ⁄ 130)

गोस्वामीजी 'काम' के साथ जुड़ी कुछ समस्याओं का भी संकेत रामचरितमानस में करते है जिसके कारण 'काम' निंदनीय बन जाता है। यह पक्ष भी शंकरजी के प्रसंग में दिखाई देता है।

प्रसंग है कि शंकर जी की समाधि लग गई। इधर तारकासुर के कारण देवता बहुत व्याकुल थे। समाधि से शंकर जी को जगाना बहुत आवश्यक है। देवता कामदेव को शंकर जी के पास भेजते हैं क्योंकि बिना शिव विवाह के न पुत्र होगा न तारकासुर नष्ट होगा। सुनते ही कामदेव समझ गया कि उसका अंतिम समय आ गया है –

चलत मार अस हृदयँ बिचारा। सिव बिरोध ध्रुव मरनु हमारा॥

(1 ⁄ 84 ⁄ 4)

पर कामदेव सोचता है –

पर हित लागि तजइ जो देहि। संतत संत प्रसंसहिं तेही॥

(1 ⁄ 84 ⁄ 2)

कामदेव सोचता है कि वैसे तो मेरी बहुत बुराई की जाती है पर मेरा यह कार्य स्तुत्य है क्योंकि परोपकारी वृत्ति के कारण ही प्रभु ने गीध को पिता तुल्य माना।

काम परहित की बात लेकर चला। शंकर जी के मन में काम पैदा करता तो ठीक था पर उसका जो जन्मजात गुण है कि वह मर्यादाओं तथा सीमाओं को स्वीकार नहीं करता है, यही निंदनीय दोष है। 'काम' जब शंकर जी के पास जाने लगा तो सोचने लगा कि क्यों न लोगो को दिखा दूँ कि मैं क्या हूँ? यही उसका दोष है –

तब आपन प्रभाउ बिस्तारा। निज बस कीन्ह सकल संसारा।।

(1/84/5)

धरी न काहूँ धीर सब के मन मनसिज हरे।
जे राखे रघुबीर ते उबरे तेहिं काल महुँ।।

(1/85)

'काम' इसी रूप में जब किसी सीमा या मर्यादा का ध्यान न रख कर सब कुछ नष्ट करने पर उतावला हो जाता है तब अनर्थकारी, अकल्याणकारी एवं निंदनीय हो जाता है पर इतने चमत्कारी कामदेव ने जब शंकर जी के आश्रम में प्रवेश किया तो उनके दर्शन मात्र से एक अनोखा चमत्कार हो गया **"भयउ जथाथिति सबु संसारू"** 'काम' भी स्तंभित हो गया। अगले ही पल सोचने लगा, अभी तक तो मैने चमत्कार दिखाया, अब कुछ काम भी कर दूँ। वह तुरंत रसाल के पेड़ पर बैठ गया। रसाल मानो रस का प्रतीक है। इसीलिए वह 'काम' को प्रिय है। पर दोनों में एक अंतर है। राम भक्त आम के नीचे बैठता है तथा 'काम' आम के ऊपर। अपने फूलों वाले बाण से भगवान शंकर पर बाण चलाया –

भयउ ईस मन छोभु बिसेषी।

(1/87/4)

पुष्प वाटिका में भी श्रीरामजी के हृदय में क्षोभ उत्पन्न होता है –

सहज पुनीत मोर मनु छोभा।

(1/231/3)

छोभ शब्द के अर्थ पर यदि विचार करें तो यदि दूध में जामन डाल कर दही बनाएँ तो उसका यह एक रूप और दूसरा किसी गन्दगी के कारण दूध की दशा बदल जाए तो उसके लिये कहते हैं फट गया। दही बनाना नहीं कहते। अंतर केवल इतना है कि जमना अपनी इच्छा से तथा फटना बगैर इच्छा के, इसी प्रकार 'काम' जामन भी हो सकता है तथा काम से मन फट भी सकता है। शंकर जी के साथ फटना हो गया। देवता दुखी हो गए तथा असुर प्रसन्न हो गए बाद में जब रति रोती हुई शंकर जी के पास आई तब वह 'काम' के बलिदान को समझ गए और अशरीरी होने का वरदान दे दिया।

'काम' को जला देने तथा पुनर्जीवित करने के पीछे भी एक संकेत निहित है प्राचीन काल से विषैली जड़ी बूटियों को दवा के रूप में प्रयोग करते हैं, पर वैद्य उनका शोधन या परिमार्जन करते हैं, जिससे उसके विषैले गुण समाप्त होकर उपयोगी हो जाते हैं। उसी तरह से शंकर जी भी 'काम' को अनर्थकारी न बनाकर उसे लोक कल्याणकारी बना देते हैं लेकिन रति को संतोष नहीं होता तो उसे शंकर जी ने वरदान भी दिया–

कृष्न तनय होइहि पति तोरा। बचनु अन्यथा होइ न मोरा।।

(1 / 88 / 2)

सूत्र यह है कि 'काम' चाहे घोड़ा बने या पुत्र बने, पर ईश्वर से अवश्य जुड़ा रहे, जिससे उसकी अकल्याणकारी वृति, जो व्यक्ति के विवेक को ध्वस्त कर देती है तथा मर्यादा का अतिक्रमण करती है उसमे परिवर्तन अथवा परिवर्धन हो जाय। अतः हमें काम को वंदनीय बनाने के लिए भगवान से जोड़े रखना है इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस के अंतिम दोहे में 'काम' को राम से जोड़ते हुए प्रार्थना की है कि जिस तरह कामी पुरुष को उसके रूप के कारण स्त्री प्रिय लगती है, हे रामजी! आप मुझे वैसे ही निरंतर प्रिय लगें।

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।।

(7 / 130 ख)

अनमोल विचार

पक्के हुए फल की तीन पहचान होती हैं –

एक तो वह नरम हो जाता है, दूसरा वह मीठा हो जाता है, तीसरा उसका रंग बदल जाता है। इसी तरह से परिपक्व व्यक्ति की भी तीन पहचान होती हैं – पहली उसमें नम्रता का रंग होता है, दूसरे उसके वचनों में मधुरता आ जाती है और तीसरा उसका स्वभाव सटीक निर्णय लेने का हो जाता है।

विज्ञापन

अनुकरणीय है 'राम' का चरित्र

जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल', आजीवन सदस्य

भगवान के जितने भी अवतार हुये, उनमें से अधिकांश अवतारों के चरित्रों में अलौकिकता का ही वर्णन है, जैसे – मत्स्यावतार में भगवान का राजर्षि सत्यव्रत की अंजलि में छोटी मछली के रूप में प्रकट होना और फिर उनके देखते ही देखते असामान्य ढंग से अपना आकार बढ़ाते जाना, मानव भाषा में बातें करना, प्रलय के जल में, एक नौका में, उन राजर्षि और सप्तर्षियों को बैठा कर वर्षों तक नौका को खींचते रहना आदि। कच्छपावतार में समुंद्र–मंथन के समय अपनी पीठ पर मंदराचल को धारण करना। वाराहावतार में ब्रह्माजी की नाक से हाथ के अँगूठे के बराबर वाराह की आकृति में प्रकट होना, फिर ब्रह्माजी के देखते ही देखते विशाल शरीर धारण कर लेना। नृसिंहावतार में खंभे से विचित्र वेश में प्रकट होना, आधा नर आधा पशु। वामनावतार में ब्रह्मचारी बटुक के रूप में राजा बलि के यज्ञ में पहुँच कर तीन डग भूमि माँगना, परन्तु भूमि नापते समय विराट रूप बना कर, दो डग में ही तीनों लोको को नाप देना। श्रीकृष्णावतार में जन्म के छठे दिन ही पूतना राक्षसी का वध करना, फिर बकासुर, अधासुर, व्योमासुर आदि कितने ही राक्षसों को मौत के घाट उतार देना, भयंकर कालियानाग के फणों पर नृत्य करना। सात दिन तक उँगली के नख पर गोवर्धन पर्वत को उठा कर इन्द्र का मान – मर्दन करना आदि।

वैसे तो भगवान अलौकिक ही हैं, अतः उनके चरित्र भी अलौकिक हैं। इसमें आश्चर्य की बात नहीं, परन्तु भगवान श्रीराम अलौकिक होते हुये भी उनके चरित्र लौकिक हैं। उन्होंने जो मधुर लीलाएँ की, वे लोक–शिक्षा देने और लोक कल्याण करने के लिये ही कीं, परन्तु आजकल रामकथा के बड़े बड़े आयोजनों में अधिकांश पैसे की भव्यता ही दिखाई देती है, लोक–कल्याण की कम। दूसरी बात आजकल हो रही कथा संगीतमयी कम होती है, संगीत अधिक होता है। संगीत की मधुर ध्वनि और सुस्वर भजनों से जनता का मनोरंजन करना प्रधान और जनता का कल्याण करने का ध्येय गौण हो गया है। कथाकार भी भगवान की अलौकिकता का वर्णन कर उन्हें अलौकिक मंडित करते हैं, जिसके कारण श्रोताओं को भगवान के चरित्रों से व्यावहारिक शिक्षा का लाभ नहीं मिल पाता।

भगवान के अवतार का मुख्य प्रयोजन भक्तों का हित करना है जो व्यापक, अकल, निर्व्यय, इच्छारहित, अजन्मा और निर्गुण–निराकार, भक्तों का कल्याण करने के लिये सगुण–साकार रूप में प्रकट होकर नाना प्रकार के अनुपम (अलौकिक) चरित्र करता है –

ब्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप।
भगतहेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप॥

भक्तों का हित करने के साथ साथ ही लोकमंगल करना ही उनके अवतार का प्रयोजन है। लोक शिक्षा देने के लिये ही वे मधुर, पावन लीलाएँ करते हैं। अलौकिक भगवान श्रीराम की लौकिक लीलाओं (नर–लीलाओं) से लोगों को लोकव्यवहार की शिक्षा मिल सके, इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर मंगलमय भगवान श्रीराम की मंगलमयी लीलाओं से मिलने वाली कल्याणकारी शिक्षाओं को दर्शाया जा रहा है –

माता–पिता और गुरुजनों का चरणवंदन, आज्ञापालन तथा सेवा करना भारतीय संस्कृति का प्रधान अंग है। श्रीरामचरितमानस में अनेक स्थलों पर भगवान श्रीराम द्वारा गुरुजनों को नमस्कार, कोई कार्य करने से पूर्व गुरुजनों की आज्ञा लेना और गुरु–सेवा करने के आदर्श मिलते हैं –

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।

(1/205/7)

जौं राउर आयसु मैं पावौं। नगर देखाइ तुरत लै आवौं।।

(1/218/6)

गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ।

(1/225)

मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई। लगे चरन चापन दोउ भाई।।

(1/226/3)

अपने गुरुजनों के प्रति श्रीराम के इस लोकव्यवहार से लोक को यह शिक्षा मिलती है कि लोगों को प्रतिदिन अपने गुरुजनों को अभिवादन, उनकी आज्ञा का पालन और उनकी सेवा करनी चाहिये। ऐसा करने से गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त होता है और उनके आशीर्वाद से लघुजनों की आयु, विद्या, यश और बल बढ़ता है –

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।

कुलगुरु वशिष्ठ के मुख से अपने राज्याभिषेक का समाचार सुन कर श्रीराम को इस बात का दुख हुआ कि हम चारों भाई एक साथ जन्मे एक साथ ही खाते, पीते, सोते, बड़े हुए, एक साथ ही बचपन में खेल खेले। हम चारों के एक साथ ही यज्ञोपवीत, विवाह आदि उत्सव हुए, परन्तु सूर्यवंश में यही बात अनुचित हो रही है कि और भाइयों को छोड़ कर राज्याभिषेक एक बड़े का ही हो रहा है –

जनमे एक संग सब भाई। भोजन सयन केलि लरकाई।।
करनबेध उपबीत बिआहा। संग संग सब भए उछाहा।।
बिमल बंस यहु अनुचित एकू। बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू।।

(2/10/5–7)

श्रीराम रघुवंश की इस परम्परा पर कि राज्य ज्येष्ठ पुत्र को ही दिया जाता है, प्रश्न चिह्न लगाते हैं। राज्य का चारों भाइयों में बँटवारा न होने को वे अनुचित ठहराते हैं। इस कारण वे राज्यलक्ष्मी को ठुकरा कर वन चले जाते हैं। इस कार्य से वे समानाधिकार की शिक्षा देते हैं। दूसरे के अधिकार को हड़पना अनुचित है। उन्होंने अपनी इस भावना को साकार किया, अपने से बाद की पीढ़ी में राज्य को बाँट कर।

महाराज दशरथ राम के राज्याभिषेक की घोषणा कर चुके थे और भरत को राजा बनाने का कैकेयी को वरदान भी दे दिया। ऐसी स्थिति में कुल की रीति के अनुसार महाराज दशरथ झूठे साबित होते। सत्यवादी पिता का वचन झूठा न हो जाये, यह सोच कर बुद्धिमान और पिता वचन–पालक राम अपनी वाक्पटुता से पिता को झूठ के लांछन से बचा लेते हैं – पिता दीन्ह मोहि कानन राजू। इससे यह शिक्षा मिलती है कि बड़ों पर दोषारोपण न करके दूसरी ओर उन्हें दोषारोपण से बचाना चाहिये। इसी में बड़ों और कुल का गौरव है।

श्रीराम एक ओर धर्म व कर्त्तव्य पालन में बड़े कठोर थे, वहीं दूसरी ओर बड़ों की आज्ञा–पालन में और छोटों के प्रति प्रेम के आगे बड़े भावुक थे। उनकी इसी कमजोरी का लाभ उठा कर अयोध्यावासी राम–प्रेमी भरत को आगे करके चित्रकूट पहुँच कर जाबालि जैसे भौतिकवादी, अत्रि जैसे तपस्वी ऋषियों, जनक जैसे ज्ञानी और वशिष्ठ जैसे त्रिकालदर्शी सूर्यकुल के शुभचिन्तकों से राम को अयोध्या लौटाने के लिये दबाव डलवाते हैं। यद्यपि श्रीराम को देवकार्य (भू–भार हरण) करने के लिये वन में रहना अभीष्ट था, फिर भी वे प्रातः स्मरणीय ऋषि मंडल, पिता तुल्य जनकजी और परम पूज्य गुरुदेव का कथन सुनकर गुरुजनों की आज्ञा–पालन करने वाले श्रीराम भावुक होकर कह उठते हैं – मैं तो आप सबका सेवक हूँ। आप मुझे जो आदेश देंगे, मुझे शिरोधार्य है –

प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई। माथें मानि करौं सिख सोई।।

(2/258/4)

आगे ब्रह्मर्षि वशिष्ठ कहते हैं कि मेरी बुद्धि भरत की भक्ति के वश में हो गयी है। पहले भरत की विनती सुनिए फिर उस पर विचार कर जो उचित हो, वही कीजिए। अनुज भरत पर गुरुदेव का स्नेह देख कर श्रीराम अपने अवतार के उद्देश्य को भूल कर भरत के प्रेम मे बह कर कह उठते हैं कि भरत जो कहेगा, मैं वही करुँगा। भरत! तुम संकोच त्याग कर जो कहोगे, मैं आज वही करुँगा –

भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई।

(2/259/8)

मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु।।

(2/264)

भगवान श्रीराम के इस कथन से यह भाव व्यक्त होता है कि उन्होंने अपने अवतार के मुख्य प्रयोजन को छिपा कर लोकव्यवहार को महत्व दिया है। उन्होंने अपने इस व्यवहार से लोक को यह शिक्षा दी है कि

गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना छोटों का धर्म–कर्त्तव्य है, अतः हमें हमेशा बड़ों के आदेश का पालन करना चाहिये। इसके साथ ही यह भी शिक्षा दी है कि बड़ों को छोटों की भावना की भी कद्र करनी चाहिए यानी बड़ों को भी छोटों की इच्छा पूरी करनी चाहिए।

सीता–हरण होने पर पत्नी के वियोग में राम, पागल की भाँति फूट–फूट कर वन–वन भटकते हैं। आनंदकंद राम ने शोक के इस अभिनय से लोक को यह शिक्षा दी है कि जिन लोगों की पत्नी में अधिक आसक्ति होती है, उनकी यही दुर्दशा होती है।

वानरराज सुग्रीव से मित्रता कर मित्र के दुख से दुखी होना और मित्र से सहयोग लेने से पूर्व मित्र को सहयोग देना सच्चे मित्र का धर्म है –

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना।।

(4 / 7 / 1–2)

(जो लोग मित्र के दुख से दुखी नहीं होते, उन्हें देखने में भी बड़ा पाप लगता है। अपने पर्वत के समान दुख को धूल के समान और मित्र के धूल के समान दुख को बड़े भारी पर्वत के समान जाने।)

अपनी अपहृता प्राणप्रिया सीता की खोज कराने से पूर्व श्रीराम ने मित्र के शत्रु बालि को मार कर सुग्रीव को किष्किंधा के सिंहासन पर बैठाया। इस लीला से उन्होंने यह शिक्षा दी है कि दूसरों का सहयोग लेने से पहले दूसरों को सहयोग देना चाहिये।

सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी। मम पन सरनागत भयहारी।।

(5 / 43 / 8)

(इससे यह शिक्षा मिलती है कि शरण में आए हुए का त्याग नहीं करना चाहिये, अपितु उसकी रक्षा करनी चाहिये।)

श्रीराम ने रावणादि राक्षसों का संहार करने के बाद अयोध्या के सिंहासन पर विराजमान होने पर रामराज्य की स्थापना की। रामराज्य एक आदर्श राज्य था, जिसमें किसी प्रकार का शोषण और अत्याचार नहीं था। रामराज्य में चारों ओर सर्वत्र समता, शान्ति और सम्पन्नता थी। कोई किसी से वैर नहीं करता था। भगवान राम के प्रताप से सबकी विषमता (आन्तरिक भेद) मिट गयी थी। सब लोग अपने–अपने वर्ण और आश्रम के अनुकूल धर्मालीन होकर सदैव वेद–मार्ग पर चलते थे और सुखी रहते थे। उन्हें न किसी बात का भय था, न शोक था, न कोई रोग था। सब लोग आपस में प्रेम करते थे –

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई।।

(7 / 20 / 8)

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग।।

(7 / 20)

सब नर करहिं परस्पर प्रीति।

(7 / 21 / 2)

रामराज्य में राजा प्रजा का सेवक था। उसका सम्पूर्ण जीवन प्रजा के कल्याण के लिये समर्पित था। राम ने ईश्वर होकर भी मानव रूप धारण करके मानव जाति को मानवता का पाठ पढ़ाया। मर्यादा पुरूषोत्तम बन कर मर्यादाओं की रेखाएँ खींचीं –

पढ़ाये वन में सुंदर पाठ धर्म कर्त्तव्य प्रेम सद्ज्ञान।
बना मर्यादाओं की लीक रहे गाते मर्यादा-गान।।

(सरल)

सम्पूर्ण जनता को सुखी, सम्पन्न रखना और उसका मनोरंजन करना राजा का कर्त्तव्य था। जो प्रजा का पालन करने के साथ साथ मनोरंजन भी करता था, वह राजा कहलाता था– रञ्जनात् राजा। यदि कोई राजा प्रजा का मनोरंजन नहीं करता तो वह राजा कहलाने का अधिकारी नहीं होता था। प्रजा का मनोरंजन करने के साथ–साथ ही प्रजा को धर्मपरायण, मर्यादापालक, चरित्रवान और एक दूसरे की चिन्ता करने वाला बनाना भी राजा का कर्त्तव्य था। चारों वर्णों को उनके वर्णाश्रम–धर्म के अनुसार कर्मों को करने के लिये प्रेरित करना भी राजा का कर्त्तव्य होता था। उस समय राजा केवल नाम का ही होता था, वास्तव में तो वह संन्यासी (त्यागमूर्ति यानी जनता के सुख के लिये अपना सर्वस्व सुख त्यागने वाला) होता था। राजा का व्यक्तिगत कोई सुख–दुख नहीं होता था, अपितु जनता का सुख–दुख ही राजा का सुख–दुख होता था। राजा सदा जनमत की चिन्ता करता था। प्राणप्रिया सीता के प्रति अनन्य प्रेम होते हुये भी राम ने जनमत का सम्मान करते हुये अपनी निर्दोष पत्नी का परित्याग कर दिया था, किन्तु जनता की आवाज नहीं दबाई थी।

जिस पत्नी के लिये श्रीरामजी पागल की भाँति रोते हुए वन–वन भटकते फिरे, वानरों को एकत्र कर सेना संगठित की, समुद्र पर पुल बनवाया और दुर्गम लंका पर चढ़ाई कर दुर्दांत राक्षसों का संहार किया, अपनी उसी प्राणप्रिया सीता का, जिसने अग्नि–परीक्षा लेकर पावनता भी सिद्ध कर दी थी, एक व्यक्ति के झूठा लाँछन लगाने पर सदा के लिये परित्याग कर दिया। वे स्वयं आजीवन विरहाग्नि में झुलसते रहे और अपनी प्रजा को सुख–सुधा पिलाते रहे। ऐसा कर उन्होंने प्रजा–हितैषी राजा का कर्त्तव्य निभाया।

कर्त्तव्यपरायण, त्यागमूर्ति राम ने अपने इस चरित्र से भावी राजाओं को यह शिक्षा दी कि राजा को स्वहित और परिवार–हित को तिलांजलि देकर केवल प्रजाहित ही करते रहना चाहिये, भले ही उसे कितने ही कष्ट उठाने पड़ें। राम सीतापति ही नहीं, प्रजापति भी थे, इसीलिये उन्होंने प्रजापति का कर्त्तव्य निभाने के लिये अपनी निर्दोष प्राणप्रिया का परित्याग किया था।

श्रीराम भारत के प्राण हैं, जीवन रस है और विग्रहवान धर्म हैं। वे भक्ति, नीति, प्रीति, न्याय, आस्था, दया, करूणा, शील, बल, सौंदर्य और शिवत्व का मंगलमय समन्वय हैं। वे भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ और भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड हैं। वे भारतीय जनमानस की धुरी हैं। वे प्रजावत्सल राम अपनी प्रजा को समर्पित थे। इसकी तुलसीकृतमानस में एक झलक देखिये –

एक बार राजा राम ने अपनी प्रजा को धर्मोपदेश देने के लिये सभा बुलाई, किन्तु वे अपने उपदेश को जनता पर थोपना नहीं चाहते थे, इसलिये उपदेश देने से पूर्व उन्होंने अपनी प्रजा से कहा– हे प्रजाजनो! यदि मैं कोई बात अनीति की कहूँ तो आप मुझे बिना डरे डाँटें –

जौं अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई।।

(7/43/6)

इससे यह सिद्ध होता है कि रामराज्य में प्रजा राजा से भयभीत नहीं थी। प्रजा को अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता थी। आज की तरह सत्ता रूपी लाठी के बल पर जनता की आवाज को दबाया नहीं जाता था। राजा राम के इस आदर्श से वर्तमान कुछ उन सत्ताधारियों और नेताओं को शिक्षा लेनी चाहिये, जो जनता के प्रतिनिधि होने पर भी सत्ता को अपनी बपौती समझते हैं और उसका दुरुपयोग कर रहे हैं। यहाँ तक कि जनता को भोली गाय समझ कर दुह रहे हैं यानी लूट रहे हैं। यदि यह कहा जाये कि देश की बंदरबाँट हो रही है तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। वर्तमान के कुछ नेताओं की एक संक्षिप्त काव्यबद्ध झलक देखिये –

अब रहे नाम के ही नेता करते नेता का काम नहीं।
शुचि देश-प्रेम जन-सेवा का रह गया मनों में भाव नहीं।।
अपना कर्त्तव्य भुला केवल अपने सुख का ही काम किया।
किसने भोली भूखी नंगी निर्धन जनता पर ध्यान दिया।।
ये तस्कर चोर लुटेरे ठग नित लुट खसूट मचाते हैं।
ये सत्ता रूपी लाठी से परभैंस हाँक ले जाते हैं।।
जब चाहें जनता को दुह लें मानवता पर कब ध्यान दिया।
किसने भोली ....

काश! देश के वे कर्णधार राम के आदर्शमय चरित्र का अंश भी अपना लें तो देश में पुनः रामराज्य स्थापित हो जाए। श्रीराम का चरित्र मानव–जीवन के उच्चतम आदर्श, सद्व्यवहार, आदर्श पुत्रधर्म, आदर्श भातृ धर्म, आदर्श पति धर्म, आदर्श पितृ धर्म, पारिवारिक जीवन, कर्म–भक्ति–ज्ञान, सदाचार, लोकव्यवहार की शिक्षा से ओत–प्रोत है। श्रीराम के चरित्र से हमें यही शिक्षा मिलती है कि राम के समान व्यवहार करना चाहिए, रावण के समान नहीं। इसी में मानव–जाति का कल्याण है, और इसीलिए मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का पावन चरित्र अनुकरणीय है।

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं

श्रीमती रीता कश्यप,
बी-302, सागर सदन, 113 आई.पी.एक्सटेंनशन (पटपड़ गंज) दिल्ली-110092, +91-9958622992

श्रीरामचरितमानस अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम का ग्रन्थावतार है। इसकी रचना गोस्वामी तुलसीदास ने ईश्वर की ही प्रेरणा से अयोध्या में ठीक उसी दिन प्रारंभ की थी जिस दिन त्रेता युग में भगवान श्रीराम का अवतरण हुआ था। मानस की प्रत्येक पंक्ति मंत्रवत् है। इस लेख में सुंदरकाण्ड के संदर्भ में कुछ लिखने का प्रयास किया है। सुंदरकाण्ड आकार में भले ही श्रीरामचरितमानस के सातों काण्डों में किष्किन्धाकाण्ड के बाद सब से छोटा, सब से संक्षिप्त है लेकिन इसका महत्त्व, इसकी महिमा, इसकी विशेषता अद्भुत है। जहाँ मानस के अन्य सभी काण्डों के नायक भगवान श्रीराम हैं, उन की कथा राम के बचपन, उनके राजतिलक, वनवास, रावण पर उनकी विजय के आसपास घूमती है वहीं सुंदरकाण्ड उनके भक्त, वीर हनुमान को समर्पित है। सुंदरकाण्ड के नायक रामदूत हनुमान हैं। इस पूरे काण्ड में श्रीहनुमानजी द्वारा सीता की खोज में लंका जाने, सीता को खोज लेने, रावण को अपने प्रभु श्रीरामजी के बल से परिचित करवाने, वापिस आ कर प्रभु को सीता का संदेश देने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख है।

सुंदरकाण्ड का पठन–पाठन अद्भुत फल देने वाला है। शुभ अवसरों से पहले इसका पाठ करने का चलन तो हमारे समाज में है ही, साथ ही जीवन में आ रही हर प्रकार की परेशानियों को, दुख–बाधाओं को दूर करने के लिए भी इसका नियमित पाठ किया जाता है। कैसी भी परेशानी क्यों न हो मानसिक, शारीरिक, व्यापारिक, शैक्षिक अथवा कार्यों में कैसी भी बाधा क्यों न आ रही हो, सुंदरकाण्ड का नियमित पाठ आप की हर परेशानी को दूर करने की सामर्थ्य रखता है। इतना ही नहीं इसका नियमित पाठ व्यक्ति में बल और बुद्धि को बढ़ाने तथा आत्मविश्वास को जगाने का काम भी करता है। आप ही सोचिए, श्रीसीताजी की खोज जैसे प्रभु श्रीराम के कठिन कार्य को करने वाले श्रीहनुमानजी के लिए भला हम इंसानों के छोटे–छोटे कामों को पूरा करना क्या मुश्किल है? बस एक बार पूरी भक्ति और श्रद्धा से उन्हें पुकारने की जरूरत भर है वे दौड़े चले आते हैं।

सुंदरकाण्ड में हमें श्रीहनुमानजी के दिव्य तथा संकटमोचन रूप के दर्शन होते हैं। इस काण्ड के कुछ श्लोक, दोहे, चौपाइयों का विशेष महत्त्व है। जैसे –

अकाल मृत्यु निवारणार्थ इस मंत्र का जप करें।

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट॥

(5/30)

निराशा दूर भगाने तथा आत्मविश्वास पाने के लिए –

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

(5/श्लोक 3)

व्यापार, नौकरी अथवा किसी भी कार्य में सफलता के लिए –

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

(5/5/1)

संकटों से मुक्ति के लिए –

दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।।

(5/27/4)

इतना ही नहीं शनि ग्रह, जिनके बारे में आम धारणा है कि वह कुण्डली में खराब स्थिति में हो अथवा शनि की ढईया या साढ़े साती चल रही हो तो व्यक्ति के जीवन में दुखों की झड़ी सी लग जाती है लेकिन क्या आप जानते हैं कि शनि के कोप से भी हमें श्रीहनुमानजी ही बचा सकते हैं। हर प्रकार के दुख अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक, हर प्रकार के ताप से बचाने का एक मात्र उपाय है सुंदरकाण्ड का पाठ। वैसे तो इसका पाठ किसी भी दिन किया जा सकता है लेकिन शनि के दुष्प्रभाव से बचने के लिए शनिवार को इसके पाठ का विशेष महत्त्व है।

मान्यता है कि यदि प्रभु श्रीराम से किसी कार्य के लिए अर्जी लगानी हो तो इसके लिए श्रीहनुमानजी से सिफारिश करनी चाहिए बस फिर क्या है हमारे काम के लिए श्रीहनुमानजी स्वयं भगवान श्रीराम को मना लेंगे क्योंकि प्रभु श्रीराम उनकी बात टाल ही नहीं सकते। कहते हैं न, **'भक्त के बस में हैं भगवान।'** हो भी क्यों न, श्रीहनुमानजी राम के अनन्य भक्त जो हैं।

अपने प्रभु की सेवा में श्रीहनुमानजी का मन खूब रमता है। सीताजी की खोज में सागर पार जाते हुए उन्हें पल भर को थकान मिटाना, विश्राम करना भी नहीं सुहाता। मैनाक पर्वत द्वारा विश्राम का प्रलोभन दिए जाने पर वे कहते हैं –

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।

(दोहा 5/1)

प्रभु के कार्य को सफलतापूर्वक करने वाले श्रीहनुमानजी की सरलता तो देखिए, श्रीराम के पूछने पर कि सीताजी की खोज जैसा कठिन कार्य उन्होंने कैसे सम्पन्न किया तो ऐसे में अपनी प्रशंसा करने या रास्ते में आई बाधाओं का बखान करने की अपेक्षा वे कहते हैं –

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई।।

(5/33/9)

राक्षसों की नगरी लंका में विभीषण के मुख से राम नाम सुनते ही वे भावविभोर हो उठते हैं। वे विभीषण से सप्रेम भेंट करते हैं, उन्हें अपने वहाँ आने का प्रयोजन ही नहीं बताते बल्कि सीताजी की खोज करने के लिए मदद भी माँगते हैं। उन्हें अपना परिचय कितने सहज और सरल रूप में देते हैं –

प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा।।

(5/7/8)

श्रीहनुमानजी बहुत ही करुण ह्रदय हैं। अशोक वाटिका में सीताजी का दुख देखकर वे द्रवित हो उठते हैं। तुरन्त उनका दुख दूर करने के लिए राम की मुद्रिका उनके समक्ष डाल देते हैं। उनसे माता सीताजी का दुख देखा नहीं जाता। ऐसे में उनका दुखी होते हुए कहना –

अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई।।

(5/16/3)

श्रीहनुमानजी के ह्रदय की वेदना को दर्शाता है। इतना ही नहीं वे सीताजी का संदेश तथा चूड़ामणि लेकर जब श्रीरामजी के पास वापिस पहुँचते हैं तो सीताजी के दुखों का ऐसा चित्रण करते हैं कि जगत के स्वामी श्रीराम भी अपने आँसू रोक नहीं पाते।

कर्त्तव्य के प्रति उनकी निष्ठा के क्या कहने, वे लंका में सीताजी की खोज करने गए थे। सीताजी की खबर पाकर वे चाहते तो लौट भी सकते थे लेकिन रामदूत बनकर गए श्रीहनुमानजी दूत के कर्त्तव्य से भली–भाँति परिचित थे। वह दूत ही क्या जो अपने स्वामी का संदेश दुश्मन तक न पहुँचाए और अपने स्वामी के बल का बखान कर दुश्मन को धमका न आए। इसलिए रावण से उनका मिलना ज़रूरी था। लेकिन एक वानर का लंकाधिपति रावण से भेंट करना संभव नहीं था इसलिए उन्होंने भूख का बहाना बना कर अशोक वाटिका उजाड़ी, वहाँ की सुरक्षा में लगे राक्षसों को ही नहीं मारा बल्कि रावण के पुत्र अक्षय का वध करने से भी नहीं हिचके। उद्देश्य एक ही था, शक्ति प्रदर्शन के साथ रावण से भेंट करना तथा उसे सीताजी को ससम्मान लौटा देने की सलाह देना क्योंकि वे युद्ध में होने वाली हानि को टालना चाहते थे। उनका मानना था युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं बल्कि अन्तिम विकल्प होता है।

श्रीहनुमानजी ने विघ्न, बाधाओं और खतरों से घबरा कर कभी कोई काम अधूरा नहीं छोड़ा। सीताजी की खोज में गए तो राह में लंकनी, सुरसा आदि कितनी बाधाएँ आईं लेकिन वे घबराए नहीं, कार्य पूरा करके ही लौटे, भले ही इसके लिये उन्हें राक्षसों से युद्ध करना पड़ा, स्वयं को नागपाश से बँधवाना पड़ा, अपनी पूँछ में आग लगवानी पड़ी। इतने पर भी वे कितने गर्व से कहते हैं –

मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा।।

(5/22/6)

उन की इसी विशेषता का परिचय हमें लंकाकाण्ड में भी मिलता है। जब वे मूर्छित लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी लेने जाते हैं। राह की अनेक बाधाओं को पार कर जब पर्वत पर पहुँच कर वे संजीवनी की ठीक से पहचान नहीं कर पाते तो भी खाली हाथ नहीं लौटते बल्कि पूरा एक पर्वत खण्ड ही उठा लाते हैं।

हनुमानजी के बल और पराक्रम के तो कहने ही क्या हैं, हर लंकावासी उनसे भयभीत हो उठा था। हर एक की जुबान पर एक ही भय था।

जासु दूत बल बरनि न जाई। तेहि आएँ पुर कवन भलाई।।

(5 / 36 / 3)

इतना ही नहीं, रावण के भाई, विभीषण, पत्नी मंदोदरी, सचिव माल्यवंत भी उनसे इतने भयभीत हो जाते हैं कि वे बार–बार रावण को, सीता लौटा देने की सलाह देने लगते हैं और रावण के न मानने पर विभीषण तो अपने भाई को छोड़ सचिवों के साथ राम की ही शरण में आ जाते हैं।

इतने बलशाली होते हुए भी हनुमानजी ने लंका में प्रवेश से रोकने वाली लंकनी, सुरसा आदि राक्षसियों को समझाने या बुद्धि बल से जीतने की कोशिश की, वे चाहते तो उन्हें जान से भी मार सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि वे स्त्रियों का सम्मान करते थे, स्त्री वध जैसा पाप नहीं करना चाहते थे।

स्वयं प्रभु श्रीराम श्रीहनुमानजी के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहते हैं –

सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा।।
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं।।

(5 / 32 / 5–7)

इसलिए सुन्दरकाण्ड का नियमित पाठ, परिवार में सुख–शान्ति देने वाला, कष्टों को हरने वाला, भव बाधाओं को दूर करने वाला, बल–बुद्धि और विद्या को देने वाला है। दूसरे शब्दों में कहें तो सुन्दरकाण्ड सकल मनोरथों को पूरा करने वाला है क्योंकि श्रीराम कथा को सकाम भाव से भी जो श्रवण या गायन करते हैं उन्हें सब प्रकार की सुख सम्पत्ति प्राप्त होती है। इतना ही नहीं वे इस लोक में सुरदुर्लभ सुख प्राप्त करके अंतकाल में श्रीरघुनाथ जी के धाम को जाते हैं।

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना बिधि पावहिं।।
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अंतकाल रघुपति पुर जाहीं।।

(7 / 15 / 3–4)

अरब खरब लौं द्रव्य है उदय अस्त लौं राज।
तुलसी जो निज मरन है तो आवे किहि काज।।

भजन की आवश्यकता

नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार,
साभार: कल्याण - दिसंबर 2016

जो सबसे बढ़कर प्रियतम हो, जो प्राणों का आधार हो, जो जीवन का एकमात्र अवलम्बन हो, जिसकी स्मृति और मिलने की आशा ही जीवन में प्रतिपल चेतना प्रदान करती हो, उसे क्षणभर के लिये भी कैसे भुलाया जा सकता है? कोई कहे कि दिन–रात में दो घण्टे भले ही उसे स्मरण कर लिया करो, शेष बाईस घण्टे घर के दूसरे आवश्यक कामों में खर्च किया करो, तो ऐसा करना उस प्रेमी के लिये कैसे सम्भव हो सकता है? उसे कितने ही घण्टे कुछ भी काम क्यों न करना पड़े, वह करेगा अपने प्रियतम का स्मरण करते हुए ही। उसे वह क्षणभर के लिये भी अपने हृदय–मन्दिर से अलग नहीं कर सकता। हृदय में उसकी झाँकी सदा खुली रहेगी, वह उसके दर्शन करता हुआ ही यन्त्र की भाँति शरीर से कार्य करता रहेगा। ऐसे अनन्य चेतन, सतत और नित्य चिन्तन में लगे रहने वाले प्रेमी को भगवान नित्य ही प्राप्त रहते हैं, वे उसकी अन्तर्दृष्टि से कभी ओझल हो ही नहीं सकते। इसी स्थिति को प्राप्त भक्त सूरदास ने कहा था –

हाथ छुड़ाये जात हौ निर्बल जानिकै मोहिं।
हिरदै तें जब जाहुगे सबल बदौंगे तोहिं॥

इसी तन्मयता में लीन गोपियाँ प्रतिक्षण प्रत्येक कार्य करते समय प्रियतम श्यामसुन्दर के गुणगान करती हुई आँसू बहाया करती थीं। भाग्यशालिनी बृजांगनाओं की बड़ाई करते हुए भागवतकार भगवान व्यास कहते हैं –

या दोहनेऽवहनने मथनोपलेप प्रेङ्खेननार्भरुदितो क्षणमार्जनादौ।
गायन्ति चैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्यो धन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तयाना:॥

उन श्रीकृष्ण में चित्त को अनुरक्त रखने वाली बृजवनिताओं को धन्य हैं, जो गौ दुहते, दधि–मंथन करते, घर लीपते, झूला झूलते, रोते हुए बालकों को लोरी सुनाते, झाडू देते, चौका लगाते तथा विश्राम करते– सब समय सर्वदा पवित्र–कीर्ति भगवान श्रीकृष्ण को अपने सामने देखकर नेत्रों से प्रेम के आँसू बहाती हुई गद्गद स्वर से उनका गुणगान करती हैं।

भगवान याद रखने का उपदेश, घण्टे–दो–घण्टे या अधिक नियमित काल के लिये नाम–जप की आज्ञा, इतनी संख्या पूरी करने पर सिद्धि हो जायेगी, इस लोभ से संख्यायुक्त जप या संख्या की गणना, जप हो जाता है, यों भूल रह जाना सम्भव है, इसलिये संख्या की अवधि बाँधकर जप करना चाहिये– यह आदेश तो उन आरम्भिक साधकों के लिये है, जो भगवान के प्रेमी नहीं हैं, न करने की अपेक्षा ऐसा करना बहुत

उत्तम है। प्रेम प्राप्त होने पर यह कहना नहीं पड़ता कि अमुक समय तक अमुक संख्या से उन्हें याद किया करो। संख्या या समय का हिसाब कौन रखे? जब एक क्षण भर के लिये स्मृति चित्त से नहीं हटती, तब हिसाब–किताब की बात ही कहाँ रह जाती है? श्रीरामचरितमानस में भगवान श्रीराम को सीता का सन्देश सुनाते हुए श्रीहनुमानजी कहते हैं कि 'प्रभो! सीता प्राण–त्याग करना चाहती हैं, परंतु प्राण निकल नहीं पाते' सीता जी ने कहा है –

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट॥

(5 ⁄ 30)

प्राण कैद हो गये। आठों पहर आपके ध्यान के किंवाड़ लगे रहते हैं। आपका ध्यान कभी छूटता नहीं, आपकी श्यामल माधुरी–मूर्ति कभी मन के नेत्रों से परे होती ही नहीं। यदि कभी किंवाड़ खोले भी जाएँ तो बाहर रात–दिन पहरा लगता है। पहरेदार कौन है? रामनाम, क्षणभर के लिये राम–नाम लेने से जिह्वा विराम नहीं लेती। प्राण कैसे निकलें? ऐसी स्थिति में क्या सीता को इस उपदेश की अपेक्षा थी कि तुम अशोकवाटिका में अकेली रहती हो, समय बहुत मिलता है, इसके सिवा राक्षसियों का डर रहता है, इसलिये कुछ देर राम को याद कर लिया करो। यह उपदेश या तो अभक्तों के लिये है या प्रेमहीन रंगरूटों के लिये।

प्रेमीजनों को तो अपने प्रेमास्पद का नाम इतना प्यारा होता है कि स्वयं तो वे उसे कभी भूल ही नहीं सकते, दूसरे को कभी भूले–भटके उच्चारण करते सुन लेते हैं, तो उसकी चरण–धूलि लेने दौड़ते हैं। प्रियतम का नाम लेने वाला, प्रियतम का गुण गाने वाला, प्रियतम का प्रेमी, हृदय से आदर का पात्र, प्रेम का पात्र न हो तो कौन होगा? प्रियतम का चिह्न ही हृदय में हर्ष पैदा कर देता है। गोपियाँ श्याम मेघों को देखकर श्रीकृष्ण का स्मरण करती हुई मेघों का दीर्घ जीवन मनाती हैं। भरतजी श्रीराम के पदचिह्न और कुशशय्या के तृणों को देखकर वहाँ की धूलि को और तृणों को सिर–माथे पर चढ़ाने लगते हैं, श्रीराम सीता के वस्त्र को हृदय से लगाते हैं, महामुनि वशिष्ठ और भरतजी गुह को अपने राम का प्रिय सखा समझकर उस पर राम के सदृश स्नेह और प्रेम दिखलाते हैं। सीता सन्देश सुनानेवाले श्रीहनुमान के प्रति श्रीराम और श्रीराम का आगमन संवाद सुनाने वाले श्रीहनुमान के प्रति श्रीभरत ऐसी कृतज्ञता प्रकट करते हैं कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। दोनों ही अपने को हनुमान का चिरऋणी घोषित करते हैं –

श्रीराम के वचन –

सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं॥

(5 ⁄ 32 ⁄ 5–7)

श्रीभरत के वचन –

एहि संदेस सरिस जग माहीं। करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं॥
नाहिन तात उरिन मैं तोही। अब प्रभु चरित सुनावहु मोही॥

(7/2/13–14)

भगवान श्रीकृष्ण का सन्देश लेकर जब उद्धवजी बृज में पधारे, तब श्रीकृष्ण के से वेष में देखकर गोपियों ने उन्हें घेर लिया और यह जानकर कि यह भगवान श्रीकृष्ण का सन्देश लेकर आये हैं, गोपियों के हर्ष का पार न रहा –

तं प्रश्रयेणावनताः सुसत्कृतें सव्रीडहासेक्षणसूनृतादिभिः।
रहस्यपृच्छन्नुपविष्टमासने विज्ञाय सन्देशहरं रमापतेः॥

और उन्होंने विनयावनत होकर प्रेमभरी लज्जापूर्ण दृष्टि से और मधुर वचनों से उनका सत्कार किया।

जब तक भगवान हमारे परम प्रेमास्पद नहीं हैं, तभी तक उनके स्मरण–चिन्तन का अभ्यास करना है, जिस शुभ घड़ी में हम अपने–आपको उनके चरणों में न्योछावर कर देंगे, मन उनके मन में मिला देंगे, फिर तो हर घड़ी हमें उन्हीं की प्राणाधिक प्रिय छवि दिखलाई देगी, फिर गोपियों की भाँति कविवर 'देव' की भाषा में हम भी यह कह सकेंगे –

जौ न जीमें प्रेम तो कीजै व्रत नेम, जब,
कंजमुख भूलै तब संजम बिसेखिये।
आस नहीं पीकी, तब आसन ही बाँधियत,
सासनकै साँसन को मूँदि पति पेखिये॥
नखतें सिखालों सब श्याममयी बाम भई
बाहर औ भीतर न दूजो देव लेखिये।
योग करि मिलैं जो वियोग होइ व्रजपति कौ,
जो न हरि होय, तौ ध्यान धरि देखिये॥

योग कहते है अप्राप्त की प्राप्ति को, प्राप्ति के अभाव को कहते हैं वियोग। यहाँ प्राणप्यारे नन्द–नन्दका नित्य संयोग है, फिर योग किसके लिये साधें? वियोग ही नहीं, तब योग कैसा?

परंतु यह शुभ स्थिति हर एक को नसीब नहीं होती। भगवान के प्रेम को प्राप्त करना सहज बात नहीं। प्रेम मुँह की चीज नहीं; प्रेम की बातें बनाने वाले बहुत मिल सकते हैं, पर प्रेम के पथ पर कोई धीर ही चल सकता है। जब तक जगत् के भोगों में आसक्ति है, शरीर के आराम की चिन्ता है, यश–कीर्ति का मोह है, तब तक प्रेम के पथ की ओर निहारना भी मना है। प्रेम के मार्ग पर वही वीर चल सकता है, जिसने वैराग्य के

दावानल में विषयासक्ति को सदा के लिये जला डाला हो। प्रेमिका मीरा कहती है –

चुनरी के किये टूक ओढ़ लई लोई। मोती मूँगे उतार बनमाला पोई।।

प्रेम के पथ पर वही पग रख सकता है जो प्रेम मार्ग के काँटों को फूलों की शय्या, प्रेमास्पद के किये हुए तिरस्कार को पुरस्कार, महान् विपत्ति को सुख–सम्पत्ति, अपमान को सम्मान और अपयश को यश समझता है। उनका पथ ही उल्टा होता है, वह कोई ऐसा घृणित कार्य नहीं करता, जिससे उसका अपमान, तिरस्कार हो या विपत्ति आये तथापि वह अपमान, तिरस्कार और विपत्ति को प्रेमास्पद के मिलन का मार्ग समझकर उनका स्वागत करता है, उनसे चिपट रहता है। प्रेमपन्थियों को प्रेमियों के निम्नलिखित शब्द याद रखने चाहिए –

नारायण घाटी कठिन जहाँ प्रेमको धाम।
विकल मूर्छा सिसकिबो, ये मग के विश्राम।।
सीस काटिकै भुइँ धरै, ऊपर राखे पाव।
इश्कचमनके बीचमें, ऐसा हो तो आव।।
सिर काटौ छेदौ हिया टूक-टूक करि देहु।
पै याके बदले बिहँसि वाह वाहकी लेहु।।
पीया चाहै प्रेमरस राखा चाहै मान।
एक म्यानमें दो खडग देखी सुनी न मान।।
प्रेमपन्थ अति ही कठिन सबपै निबहत नाहिं।
चढ़के मोम-तुरङ्ग पै चलिबो पावक माहिं।।
नारायण प्रीतम निकट सोई पहुँचनहार।
गेंद बनावे सीसकी खेलै बीच बजार।।
ब्रह्मादिकके भोग सब विषसम लागत ताहि।
नारायण ब्रजचन्दकी लगन लगी है जाहि।।

ऐसे प्रेमी–भक्त सीस उतारकर मरते नहीं। सीस उतारे फिरते हैं, परंतु प्यारे के लिये जीवन रखते हैं। मर जाए तो प्यारे को दुःख हो। इसलिये जीते हुए ही मर जाते हैं अथवा मरकर भी जीते हैं। जिनकी ऐसी स्थिति हो गयी है, उनको धन्य हैं, उनके माता–पिता को धन्य है, उनके देश को धन्य है। उन्हीं का जन्म सफल होता है। ऐसा करने पर जब उन्हें प्रियतम मिल जाता है, जब प्रियतम के साथ घुल–मिलकर वे अपने आपको खो देते हैं, तब तो वे प्रियतम का स्वरूप ही बन जाते हैं –

'तू तू करते तू भयो मुझमें रही न हूँ'
जब 'मैं' था तब 'हरि' नहीं, अब 'हरि' हैं 'मैं' नाहिं।
प्रेमगली अति साँकरी, तामें दो न समाहिं।।

इसी स्थिति को प्राप्त करना मनुष्य–जीवन का ध्येय है। इसी के लिये भगवान ने गीता में आज्ञा दी है–

अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।।

इस सुखरहित और अनित्य मनुष्य–शरीर को पाकर तू निरन्तर मेरा भजन कर। भजन से ही उपर्युक्त स्थिति प्राप्त हो सकती है। जब तक प्रेम न हो, तब तक श्रद्धा के साथ कुछ नियम बनाकर ही भगवान का भजन अवश्य करना चाहिये। भजन करते–करते ज्यों–ज्यों अन्तःकरण का मल नष्ट होगा, त्यों–त्यों अन्तःकरण शुद्ध होगा और भगवान के प्रति प्रेम बढ़ता रहेगा, परंतु यह 'अटल सिद्धान्त' सदा स्मरण रखना चाहिये कि –

बारि मथें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल।।

(श्रीरामचरितमानस 7/122क)

विज्ञापन

R.P. BUILDER

विज्ञापन

भगति तात अनुपम सुखमूला

वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी, आजीवन सदस्य

प्रातः स्मरणीय प्रतिभा के प्रदीप्त प्रभाकर पाण्डित्य के अपार पारावार, गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने सम्पूर्ण मानस में भगवत प्राप्ति हेतु भक्ति को प्रथम सोपान के रूप में वर्णित किया है। जिसमें नवधा भक्ति में प्रथम भक्ति संतों का संग निरूपित किया है। इसका विशद चित्रण अरण्यकाण्ड में शबरी पर अपनी कृपा वर्षाते हुए भगवान श्रीराम ने कहा है **'प्रथम भगति संतन्ह कर संगा'**। भक्त का हृदय ही भगवान का निवास स्थल है। भक्त शिरोमणि श्रीहनुमानजी ने इसी भावना को प्रबल रूप से अपनी छाती फाड़कर प्रदर्शित किया था। अतः भगवान और भक्त दो पृथक बिन्दु होते हुये भी एक–दूसरे के पूरक हैं। भक्ति वह सम्यक् साधन है जिसके द्वारा ईश्वर तत्व की प्राप्ति होती है और ईश्वर तत्व की प्राप्ति प्रेम तथा समर्पण पर निर्भर है। अपने इष्ट देव के प्रति अनन्य प्रेम, अटूट श्रद्धा, परम विश्वास एवं गहन प्रीति ही उत्कृष्ट भक्ति को जन्म देती है। तुलसीदासजी की भक्ति में श्रद्धा और विश्वास का निगूढ़ समन्वय मिलता है। जिसमें सेव्य सेवक भाव से ओतप्रोत होकर दास्य भक्ति की विशेषता का सुन्दर उदाहरण केवट संवाद में देखने को मिलता है –

बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं।।

(2 / 100 / छंद)

अर्थात् हे नाथ! मैं भगवान श्रीराम के चरण कमल धोकर ही आप लोगों को अपनी नाव में चढ़ाउँगा। मैं आपसे कुछ नहीं चाहता। लक्ष्मण भले ही मुझे तीर मार दें, पर मैं जब तक पैरों को पखार नहीं लूँगा, पार नहीं उतारूँगा।

इस तरह भक्ति में आत्मा और परमात्मा दोनों का योग, संयोग, विलय और विसर्जन होता है। यह स्थिति प्रेम से भी सुखद है जिससे मन, शरीर और आत्मा तीनों मिलकर त्याग और मर्यादा को जन्म देते हैं।

भक्ति प्रेम से भी अनन्त गुना सुखद और पावन है। प्रेम मन को मिलाता है। भक्ति में आत्मा और परमात्मा दोनों मिलते हैं। इसलिए जब भक्ति में भक्ति भाव की तरंगे दैहिक तल से ऊपर उठकर अपने ही अन्दर आनन्द के सरोवर में हिलोरे मारती हैं तब सारा संसार नश्वर दिखाई देता है और फिर किसी भी पदार्थ की चाह नहीं रहती। यथा –

अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन।।

(2 / 204)

अतः भक्ति से कर्तव्य बोध होता है और कर्तव्य बोध से शक्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार भगवान को भक्त को मनाने हेतु स्वयं दौड़कर आना पड़ता है, वह चाहे भक्त ध्रुव हो या प्रह्लाद हो या मानस की शबरी हो। भक्त शबरी दोनों भाई राम और लक्ष्मण को देखकर उनके चरणों में लिपट गयी –

स्याम गौर सुंदर दोऊ भाई। सबरी परी चरन लपटाई।।
प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा।।
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे।।

(3/34/8–10)

पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी। प्रभुहिं बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी।।
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़ मति भारी।।
अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी।।
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता।।

(3/35/1–4)

श्रीरामजी द्वारा लक्ष्मण जी से कही भक्ति में जो नवधा भक्ति का वर्णन मिलता है उसमें श्रवण, कीर्तन, अर्चना, वंदना, दास्य और आत्म निवेदन आते हैं। इनके द्वारा भगवान राम के नाम, रूप गुण, लीला और धाम का वर्णन करते हुये ईश्वर कीर्तन, उनकी लीलाओं का श्रवण और गान उनके शक्तिशील सौन्दर्यमय रूप की अर्चना –

भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला।।
श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीला रत अति मन माहीं।।

(3/16/4 एवं 8)

भक्ति की प्रगाढ़ता के लिए मोह–निशा से जागना आवश्यक है और यह जागना वह है जिससे मन में विषयों के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो जाए –

मोह निसाँ सबु सोवनिहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा।।
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच बियोगी।।
जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा।।

(2/93/2–4)

तुलसीदासजी कहते हैं कि संसार में प्रायः सभी लोग मोह रूपी रात्रि में सोकर मिथ्या स्वप्नों में ही भूले–भटके रहते हैं और अपने जीवन को नष्ट करते हैं। केवल योगी जन ही प्रपञ्च से मुक्त होकर परमात्मा में लीन होकर सच्चे आनन्द का अनुभव करते हैं। मोह रूपी रात्रि से जागरण का उपाय क्या है? और योगियों का योग क्या है? इस सम्बंध में स्पष्ट कहते हैं कि राम नाम का जाप ही मुख्य साधन है –

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।।

(1 / 22 / 1)

तुम्ह पुनि राम राम दिन राती। सादर जपहु अनँग आराती।।

(1 / 108 / 7)

नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी।

(1 / 26 / 1)

प्रायः शुक, सनकादि, नारद आदि सभी योगी राम नाम का जप करते थे वे राम नाम को सम्पूर्ण योग का सार मानते थे। उनका कहना है कि इस नाम योग का आश्रय न लेने के कारण सबके हृदय में स्थित परमात्मा स्थिर रहने पर भी, सभी प्राणी दुःखी रहते हैं किन्तु यदि नाम का आश्रय लेकर उन्हें वे बुलाते हैं या उनकी शरण में जाते हैं तो वे साधक का सम्पूर्ण दुःख दूर कर देते हैं। बालकाण्ड में कहा है –

ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी।।
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी।।
नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें।।

(1 / 23 / 6–8)

संसार को भ्रम मानकर उसे भूलकर या छोड़कर भगवान का हो जाना उन्हें पा जाना ही भक्ति योग है। अरण्यकाण्ड में प्रभु से लक्ष्मण जी द्वारा पूछे गये प्रश्न हैं जिसमें भक्ति योग के दर्शन मिलते हैं –

एक बार प्रभु सुख आसीना। लछिमन बचन कहे छलहीना।।
सुर नर मुनि सचराचर साईं। मैं पूछउँ निज प्रभु की नाईं।।
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा। सब तजि करौं चरन रज सेवा।।
कहहु ग्यान बिराग अरु माया। कहहु सो भगति करहु जेहिं दाया।।

(3 / 14 / 5–8)

हे देव! मुझे वह तत्व समझाकर कहिए जिससे मैं सब कुछ छोड़कर आपकी चरण रज की ही सेवा करूँ। ज्ञान वैराग्य और माया का वर्णन कीजिये और उस भक्ति को कहिए जिसके कारण आप दया करते हैं –

ईस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाइ।
जातें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ।।

(3 / 14)

श्रीलक्ष्मणजी ने भगवान श्रीरामजी से ज्ञान, वैराग्य, माया, ईश्वर और जीव के विषय में जिज्ञासा प्रकट की है। इन सभी का समाधान भगवान श्रीराम ने भक्ति योग के रूप में किया है –

मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया।।
गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानहु भाई।।
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ। बिद्या अपर अबिद्या दोऊ।।
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा। जा बस जीव परा भवकूपा।।
एक रचइ जग गुन बस जाकें। प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें।।
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माही।।
कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी।।

(3/15/2–8)

संक्षेप में कह सकते हैं कि ज्ञान वह है जहाँ मान आदि एक भी दोष नहीं है और जो सबमें समान रूप से ब्रह्म को देखता है। जो सारी सिद्धियों को और तीनों गुणों को तिनके के समान त्याग चुका है उसी को परम वैरागी कहना चाहिए –

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना। ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।।
जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सो मम भगति भगत सुखदाई।।

(3/16/1–2)

धर्म के आचरण से वैराग्य और योग से ज्ञान प्राप्त होता है तथा ज्ञान मोक्ष को देने वाला है; ऐसा वेदों में वर्णन है। हे भाई! जिससे मैं शीघ्र ही प्रसन्न होता हूँ वह मेरी भक्ति है जो भक्तों को सुख देती है –

भगति कि साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी।।
प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती।।

(3/16/5–6)

बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम।।

(3/16)

भगवान श्रीराम भक्ति के साधन को विस्तार से कहते हुए बताते हैं कि भक्ति वह सुगम मार्ग है जिसमें जीव मुझको सहज ही पा लेता है। प्रथम तो ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम हो और वेदों के अनुसार आचरण करे तथा अपने वर्णाश्रम कर्मों में लगा रहे। इस तरह जिसकी कर्म, वचन और मन से मेरी ही गति है और जो निष्काम भाव से मेरा भजन करते हैं उनके हृदय–कमल में मैं सदा विश्राम करता हूँ।

इस तरह लक्ष्मणजी ने भगवान श्रीरामजी से ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति योग का जो ज्ञान प्राप्त किया, वह अद्‌भुत है लक्ष्मणजी ने उस ज्ञान को प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव किया।

भगति जोग सुनि अति सुख पावा। लक्षिमन प्रभु चरनन्हि सिरु नावा।।

(3/17/1)

विद्यावान गुनी अति चातुर

श्री जगत प्रसाद पालीवाल,
डी.बी.-55डी, एल.आई.जी. फ्लैट, हरी नगर, नई दिल्ली-64

एक होता है विद्वान और एक विद्यावान। दोनों में आपस में बहुत अन्तर है। इसे हम ऐसे समझ सकते हैं। रावण विद्वान है और हनुमानजी विद्यावान। रावण के दस सिर हैं। चार वेद तथा छः शास्त्र दोनों मिलाकर दस हैं अर्थात् वह चारों वेदों और छः शास्त्रों का ज्ञाता, विद्वान है। रावण वास्तव में विद्वान है, लेकिन विडम्बना यह है कि वह विद्यावान नहीं है क्योंकि विद्या विनम्रता प्रदान करती है और रावण अभिमान से भरपूर है। वह अपने बल के अभिमान वश सीताजी का हरण करके ले आया। कई बार कुछ विद्वान लोग अपनी विद्वता के कारण दूसरों को शान्ति से नहीं रहने देते। उनका अभिमान दूसरों की सीता रूपी शान्ति का हरण कर लेता है। रावण ने यही किया। हनुमानजी उन्हीं खोई हुई सीता रूपी शान्ति को वापस भगवान से मिला देने हेतु उनकी खोज के लिए विभिन्न बाधाओं को लाँघते हुए लंका जाते हैं। यही विद्वान और विद्यावान में अन्तर है। हनुमानजी गए रावण को समझाने। यही विद्वान और विद्यावान का मिलन है। हनुमानजी ने कहा –

बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन।।

(5/22/7)

हनुमानजी ने हाथ जोड़कर कहा कि मैं विनती करता हूँ। तो क्या हनुमानजी में बल नहीं है? ऐसा नहीं है। वे रावण को शिक्षा देने के लिए विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़ते हैं, भयवश नहीं। विनती दोनों करते हैं, जो भय से भरा हो या भाव से भरा हो। हनुमानजी भाव से भरे हैं। रावण ने कहा कि तुम क्या, यहाँ देखों कितने लोग हाथ जोड़कर खड़े हैं –

कर जोरें सुर दिसिप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता।।

(5/20/7)

देवता और दिग्पाल भय से हाथ जोड़े खडे हैं और भृकुटि की ओर देख रहे हैं। परंतु हनुमानजी भय से हाथ जोड़कर नहीं खड़े हैं वे विनम्रतावश हाथ जोड़ते हैं क्योंकि वे विद्वान भी है और विद्यावान भी, तब रावण ने कहा –

की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही। देखउँ अति असंक सठ तोही।।

(5/21/2)

तुमने मेरे बारे में सुना नहीं हैं? बहुत निडर दिखाई पड़ते हो। हनुमानजी बोले– यह जरूरी है कि तुम्हारे सामने जो आये, वह डरता हुआ आये? रावण बोला – देख लो, यहाँ जितने देवता और अन्य खड़े हैं,

वे सब डर कर खड़े हैं। तब हनुमानजी बोले– उनके डर का कारण है, वे तुम्हारी भृकुटि की ओर देख रहे हैं, परंतु मैं भगवान राम की भृकुटि की ओर देखता हूँ। उनकी भृकुटि कैसी है, सुनो –

भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहुँ संकट परइ कि सोई।।

(3/28/4)

जिनकी भृकुटि टेढ़ी हो जाये तो प्रलय हो जाये और इसलिए उनकी ओर देखने वाले पर स्वप्न में भी संकट नहीं आ सकता। मैं उन श्रीरामजी की भृकुटि की ओर देखता हूँ। फिर मुझे डर कैसा? रावण बोला– यह विचित्र बात है। जब तुम राम की भृकुटि की ओर देखते हो तो हाथ हमें क्यों जोड़ रहे हो? हनुमानजी बोले– यह तुम्हारा भ्रम है। हाथ तो मैं उन्हीं श्रीरामजी को जोड़ रहा हूँ। रावण बोला– वे यहाँ कहाँ हैं। तब हनुमानजी ने कहा कि यही समझाने आया हूँ। वे बोले– रामजी ने मुझसे कहा था –

सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवन्त।।

(4/3)

भगवान ने कहा कि तुम सब में मुझे ही देखना। इसीलिए मैं तुम्हें नहीं, तुममें भी भगवान श्रीराम को ही देख रहा हूँ। श्रीहनुमानजी का यह कथन विद्यावान और गुणी होने के साथ–साथ उनकी वाक्पटुता भी दर्शाता है। अब हनुमानजी रावण के उस प्रश्न का उत्तर देते हैं कि तुमने अशोक वाटिका क्यों उजाड़ी ओर हमारे रक्षकों को क्यों मारा। वे कहते हैं –

खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा। कपि सुभाउ तें तोरेउँ रूखा।।
सब कें देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारग गामी।।
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे। तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे।।

(5/22/3–5)

हनुमानजी रावण को प्रभु और स्वामी कहते हैं और रावण– यह कहता है–

मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही।।

(5/24/3)

रावण खल और अधम कहकर हनुमानजी को सम्बोधित करता है। यही विद्वान होकर भी विद्यावान न होने का लक्षण है। अपने को गाली देने वाले में भी जिसे भगवान दिखाई दें, वही विद्यावान है। नीतिशास्त्र में विद्यावान का लक्षण भी यही बताया गया है –

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनम् आप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्।।

पढ़–लिखकर जो विनम्र जो जाये, वह 'विद्यावान' और जो पढ़–लिखकर अकड़ जाये, वह 'विद्वान' तो हो सकता है पर विद्यावान कदापि नहीं। इस संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं –

बरसहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ॥

(4 / 14 / 3)

बादल जल से भरने पर नीचे आ जाते हैं इसी तरह विद्यावान व्यक्ति विद्या पाकर विनम्र हो जाता है। विद्वान और विद्यावान का एक और अंतर बताया गया है। जिसकी दिमागी क्षमता तो बढ़ गई हो परन्तु दिल खराब हो अर्थात् हृदय में अभिमान हो, वह विद्वान तो है पर विद्यावान नहीं। दूसरी ओर जो इतना विनम्र हो कि जिसके हृदय में स्वयं भगवान का अनुभव हो रहा हो और जो दूसरों के हृदय में भी भगवान को बिठाने की बात करें, वहीं विद्यावान है। हनुमानजी ने कहा– रावण! तुम विद्वान–बलवान हो यह तो ठीक है पर तुम्हारा दिल ठीक नहीं इसके लिए उन्होंने यह उपाय बताया –

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥

(5 / 23 / 1)

अपने हृदय में रामजी को बिठा लो और फिर मजे से लंका में राज करो। इस प्रकार से हनुमानजी रावण के हृदय में भगवान को बिठाने की बात करते हैं, इसलिए वे 'विद्यावान' हैं। इस लेख का उद्देश्य यह बताने का है कि हमें अपनी विद्वता पर अभिमान न करके सबके प्रति विनम्र भाव से व्यवहार करना चाहिए क्योंकि सभी के अंदर भगवान विराजमान हैं। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है –

सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥

(1 / 8 / 2)

सद् विचार

- भक्तों का हृदय–क्षेत्र मुकुन्द भगवान् का प्रिय मन्दिर है। भक्तों के हृदय में भगवान लीला और विनोद करते है।
- भगवान् की महिमा भागवत में– भक्त में दिन–रात भासती है। सत्–शास्त्र का शुद्ध व्याख्यान भक्त का कर्म है।
- भक्त का अपना–पराया नहीं होता, समस्त वसुधा उसका कुटुम्ब है; क्योंकि सबमें वह एक अपने आत्मा महाविष्णु को ही देखता है।

विज्ञापन

स्वर्ण लंका दहन का वैज्ञानिक पक्ष

श्री गोपाल कृष्ण फरलिया, 2205, पॉकेट-2, सै0-डी, वसंतकुंज, नई दिल्ली-110070

अतित के झरोखे से ....

हमारे धर्म ग्रन्थ वैज्ञानिक संकेतों से भरे पड़े हैं। आज से दो सौ वर्ष पूर्व क्या कोई सोच सकता था कि सूर्य की रोशनी में सात रंग हो सकते हैं। प्रिज्म के आविष्कार से वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया कि सूर्य की रोशनी में सात रंग होते हैं। इससे पूर्व कोई कहता कि सूर्य की रोशनी में सात रंग होते हैं तो हम उस व्यक्ति को पागल करार दे देते, जैसा कि यूरोप के लोगों ने अपने धर्म के आधार पर पृथ्वी गोल होने को शुरू में स्वीकार नहीं किया था क्योंकि कुछ धर्म ग्रंथों में पृथ्वी को चपटा माना गया था। इसी प्रकार की समस्या से छुटकारा पाने के लिए हमारे वैज्ञानिकों अथवा पंडितों ने सूर्य के सात घोड़े घोषित कर दिए तथा उनके सात रंग बता दिए। हम हिन्दू धर्मावलंबी, उसको मानते रहे। आदित्य स्तोत्र में सूर्य को हरियाली का जनक बताया गया है।

इसी प्रकार हमारे धर्म ग्रन्थ अनेक वैज्ञानिक तथ्यों से परिपूर्ण हैं। सर्वप्रथम हम श्रीरामचरितमानस से श्रीगणेश करते हैं। रामायण का युग अगर हम वैज्ञानिक प्रतिबद्धता का मान लें तो भगवान राम एवं भगवान शिव की भूमिकाओं को ईश्वरीय दृष्टिकोण के साथ–साथ उनकी वैज्ञानिक पृष्ठ भूमि को भी समझ पाएँगें तथा समस्त घटनाओं को हम वैज्ञानिक ज्ञान एवं प्रतियोगिताओं से हल कर पाएँगे। अगर हम यह मान लें कि भगवान शिव, जिनको रामायण में श्रीराम का आराध्य देव माना गया है, उस समय के सर्वोच्च वैज्ञानिक थे, तब सभी बातों को आसानी से समझा जा सकता है। भगवान शिव को भोले एवं सरल प्रकृति का बताया गया है। रामायण एवं सभी धार्मिक ग्रंथों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भगवान शिव हिमालय की कंदराओं में रहते थे। वे रोजाना के सभी लेन देन से परे थे, यहाँ तक कि देवताओं की राजनीति से भी अपने को दूर रखते थें और इतने भोले थे कि भस्मासुर को वरदान दे कर अपने ऊपर संकट मोल ले लिया था। क्या आज का वैज्ञानिक जो अपनी वैज्ञानिक खोज में लगा रहता है उसकी प्रकृति भी इसी प्रकार की नहीं होती है। वह लोगों से दूर सदैव अपनी वैज्ञानिक सोच में रहने के कारण, सीधा सादा एकांत में रहना चाहता है।

अतः हम यह मानते हैं कि भगवान शिव उस समय सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक थे। भगवान श्रीराम, हनुमानजी, सीताजी, जनकजी एवं रावण आदि उनके शिष्य थे। रामायण में भी इस तथ्य को सिद्ध करने का प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष वर्णन आया है कि उस समय के वैज्ञानिक, भगवान शिव के नेतृत्व में आज की वैज्ञानिकता से अधिक जानते थे। वैसे भी भगवान राम एवं भगवान शिव को आदि देव माना जाता है जो कि सृष्टि का

सम्पूर्ण ज्ञान रखते थे। चूँकि ये सभी भगवान शिव से किसी न किसी समय ज्ञान प्राप्त कर चुके थे, अतः भगवान शिव के बराबर या थोड़ा कम ज्ञान रखते थे। अब हम सीधे रामायण में वर्णित एक घटना की तरफ जाते हैं।

एक समय की बात है कि भगवान शिव एवं सतीजी हिमालय पर बैठे थे, तभी देवी सती ने संकोचवश भगवान शिव से कहा कि आपके शिष्य तो महलों में रहते हैं और आप पहाड़ों की कंदराओं में। हमें भी अपने लिए एक सुंदर नगरी का निर्माण करवाना चाहिए जहाँ नौकर चाकर हों और हम भी आराम से रह सकें। भगवान शिव ने सोचा कि देवी सती मानने वाली नहीं हैं, अतः भगवान शिव ने वैज्ञानिक चमत्कार का उपयोग करके सोने की नगरी बनाने का निश्चय किया।

अब भगवान शिव के आगे प्रश्न था कि ऐसा स्थान ढूँढा जाए जो इस प्रकार के प्रयोग के लिए उपयुक्त हो। उनको लंका का द्वीप इस के लिए उपयुक्त लगा। सोने की नगरी बनाने के लिए लाखों टन सोना चाहिए तथा इतना सोना उपलब्ध होना बहुत कठिन था। अतः भगवान शिव ने लोहे से सोना बनाने का निश्चय किया। अब प्रश्न यह था कि लोहे से सोना कैसे बनाया जाए। आज का विज्ञान बताता है कि प्रत्येक वस्तु या धातु परमाणुओं से बनी है। प्रत्येक परमाणु में प्रोटोन, न्यूटॉन एवं इलेक्ट्रॉन होते हैं। परमाणु में धातु के गुणों के अनुसार इनकी संख्या निश्चित होती है। उदाहरण के लिए लोहे के परमाणुओं में 26 प्रोटोन, 30 न्यूट्रोन एवं 26 इलेक्ट्रॉन होते हैं। स्वर्ण के परमाणु में 92 प्रोटोन, 146 न्यूट्रॉन एवं 92 इलेक्ट्रॉन होते हैं। आज का विज्ञान हमें संकेत देता है कि अगर हम प्रोटोन, न्यूट्रॉन एवं इलेक्ट्रॉन की संख्या बदल दें तो एक धातु को दूसरी धातु में बदला जा सकता है। आज का विज्ञान यह भी संकेत करता है कि परमाणु में प्रोटोन, न्यूट्रॉन एवं इलेक्ट्रॉन की संख्या बढ़ाने के लिए बहुत ज्यादा मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता पड़ेगी। और ऊर्जा न तो पैदा की जा सकती है तथा न ही नष्ट की जा सकती है, पर एक रूप से दूसरे रूप में बदली जा सकती है। आज का विज्ञान हमें यह भी बताता है कि दो स्थानों के तापमानों में अंतर है तो यह कार्य किया जा सकता है अर्थात् ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। अब प्रश्न यह उठा कि ऐसी स्थिति कहाँ पर मिलेगी। भगवान शिव को लंका का द्वीप इसके लिए उपयुक्त लगा। लंका एक छोटा द्वीप है जो कि समुद्र से चारों तरफ से घिरा हुआ है तथा विषुवत रेखा के निकट है। लगभग वर्ष भर यहाँ सूर्य देवता की कृपा रहती है। दिन में चारों तरफ का सूरज समुद्र एवं पृथ्वी को गरम करता रहता है। चूँकि जल का विशिष्ट ताप, पृथ्वी से अधिक होता है, अतः समुद्री जल दिन में धीरे–धीरे गरम होता है पर पृथ्वी जल्दी गरम हो जाती है। रात में पृथ्वी जल्दी ठंडी हो जाती है तथा समुन्द्र का पानी धीरे–धीरे ठंडा होता है। अतः सदैव पृथ्वी एवं समुद्र के पानी में तापमान का अंतर बना रहता है। दिन में सौर ऊर्जा का भी द्वीप में सीधा उपयोग किया जा सकता है। अतः भगवान शिव ने इस विशाल ऊर्जा स्रोत का उपयोग किया तथा लोहे को सोने में बदल कर, सोने की नगरी का निर्माण कर दिया। इतनी बड़ी परियोजना को पूरी करने में थोड़ी कुछ चूक रह गई होगी, उसको भी पूरा करना था। चूँकि रावण भी भगवान शिव का शिष्य था तथा उसने भी भगवान शिव से परमाणु ज्ञानार्जित किया था, अतः भगवान शिव ने उसकी परीक्षा लेने की सोची तथा शेष कार्य को

रावण को पूरा करने को कहा। चूँकि रावण ने भी भगवान शिव के साथ अन्वेषण कार्य किया था, अतः उसने शेष कार्य पूरा कर दिया। भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर, पुरस्कार माँगने को कहा। रावण तो चालाक था ही तथा भोलेनाथ वचनबद्ध थे, अतः रावण ने सोने की लंका ही माँग ली। ऐसा रामायण में भी लिखा है। इस प्रकार से भोलेनाथ फिर बिना नगरी के रह गए तथा हिमालय पर चले गए।

रावण को सोने की लंका का अभिमान हो गया। उसके अत्याचार बढ़ने लगे। जब भगवान राम अपने पिता की आज्ञा से वन में थे, तब रावण ने छल से सीताजी का हरण कर लिया। भगवान राम ने हनुमानजी को सीताजी को ढूँढने लंका भेजा। रामायण में आता है कि हनुमानजी भगवान शिव के अंश थे। अतः वे भी परमाणु विद्या का पूरा ज्ञान रखते थे। जिस प्रकार यूरेनियम 235 के टूटने पर ऊर्जा पैदा होती है उसी प्रकार सोने के टूटने पर लोहा बनने से विशाल ऊर्जा अग्नि के रूप में पैदा होती है। आज के ज्ञान के अनुसार सोना एक स्थायी तत्व है, अतः उसको तोड़ना अत्यंत कठिन है। विज्ञान बताता है कि तत्व जितना स्थायी होगा उसको तोड़ने हेतु उतना अधिक बल का प्रयोग करना होगा। अतः सोने से प्रोटोन, न्यूट्रॉन, एवं इलेक्ट्रॉन को अलग करने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होगी। लंका दहन के संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है कि –

रहा न नगर बसन घृत तेला। बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला।।

(5/25/5)

देह बिसाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई।।
जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला।।
तात मातु हा सुनिअ पुकारा। एहिं अवसर को हमहि उबारा।।
हम जो कहा यह कपि नहिं होई। बानर रूप धरें सुर कोई।।
उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी।।

(5/26/1–4 तथा 8)

चूँकि उपर्युक्त प्रतिक्रिया को चालू करने के लिए अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता थी, अतः नगर के सभी ऊर्जा स्रोतों का दोहन किया गया। सभी ऊर्जा स्रोतों को संघनित करके लेजर रूपी संघनित ऊर्जा का उपयोग करके प्रतिक्रिया प्रारम्भ कर दी गई तथा निमिष मात्र में नगर को सोने से लोहे में बदल दिया, जिससे लंका में भयानक अग्निकाण्ड हुआ। लंका का तापमान एकाएक बढ़ गया तब हनुमानजी ने कम तापमान वाले समुन्द्र के जल में छलाँग लगा कर, शीतलता प्राप्त की। वायु मार्ग से हनुमानजी सीता मैया के पास पहुँच गये तथा माँ का आशीर्वाद लेकर, वायुमार्ग से वापिस समुद्र पार सेना से मिल गए।

इस प्रकार से जहाँ रावण ने अपनी विद्वत्ता से सोने की लंका का शेष कार्य सम्पन्न करके अपनी वैज्ञानिक बुद्धि दिखाई। वहीं भगवान राम ने हनुमानजी को भेजकर यह बताया कि हम तुमसे भी अधिक वैज्ञानिक योग्यता रखते हैं।

आज का विज्ञान स्थायी तत्वों को विभाजित करने में अभी तक सफल नहीं हुआ है। इस दिशा में गत शताब्दी से लगातार तीव्र गति से नए–नए आविष्कार हो रहे हैं। हम आशा करते हैं कि जो अभी तक संभव नहीं हुआ है वह अगली शताब्दी तक संभव हो जायेगा और तब आज का विज्ञान रामायणकालीन विज्ञान के निकट पहुँच सकेगा।

सुमिरत राम हृदयँ अस आवा

हमारे जीवन में कभी–कभी ऐसी उलझन उपस्थित हो जाती है कि हम 'किम् कर्तव्य विमूढ़' हो जाते हैं और यह स्थिति हो जाती है कि इधर कुँआ–उधर खाई तो अब जाएँ तो जाएँ कहाँ? ऐसी विषम परिस्थिति में श्रीरामचरितमानस की एक कथा में आशा की किरण दृष्टिगोचर होती है। वह कथा इस प्रकारसे है– एक बार सतीजी के साथ शिवजी कुंभज ऋषि के आश्रम में श्रीराम कथा श्रवण करने गए। सतीजी ने श्रीराम कथा मन लगाकर नहीं सुनी। इस कारण जब उन्होंने श्रीरामजी को सीताजी के वियोग में विरह लीला करते देखा तो उन्हें सन्देह हो गया। शिवजी के बहुत प्रकार समझाने पर भी उनका सन्देह दूर नहीं हुआ तब शिवजी के परामर्श से वे श्रीरामजी की परीक्षा लेने चल पड़ीं। उन्होंने इस हेतु सीताजी का वेष धारण कर लिया। जब वापिस आई तो झूंठ कह दिया कि मैंने कोई परीक्षा नहीं ली। तब शिवजी ने ध्यान लगाकर सब चरित्र जान लिया। इस घटना से शिवजी उलझन में पड़ गए क्योंकि वे अब सतीजी से पत्नी की तरह व्यवहार नहीं कर सकते और वे परम पुनीत हैं, उनका त्याग भी नहीं कर सकते –

परम पुनीत न जाइ तजि किएँ प्रेम बड़ पापु।
प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदयँ अधिक संतापु।।

(1/56)

इस उलझन को पार करने हेतु शिवजी ने श्रीरामजी के चरणकमलों को प्रणाम करते हुए इस समस्या के समाधान हेतु उनका स्मरण किया। इससे उन्हें समाधान मिल गया –

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा। सुमिरत राम हृदयँ अस आवा।।
एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं। सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं।।

(1/57/1–2)

अतः जब हमारे जीवन में ऐसी उलझन उत्पन्न हो तब हमें ईश्वर का स्मरण करके उन्हीं से समाधान की प्रार्थना करनी चाहिए और फिर जैसी वे स्फुरणा प्रदान करें तदनुसार दृढ़ संकल्प लेकर उसी मार्ग पर चलना चाहिए। ईश्वर द्वारा प्रेरित मार्ग के अनुसरण से निश्चित रूप से हमारा कल्याण होगा।

तात कैकइहि दोसु नहिं

श्रीमती राजवती देवी,
216, जी० जी० हॉस्टल वाली गली - 2, होशियारपुर, सेक्टर - 51, नोएडा

राम कथा में माता कैकयी का नाम सबसे अधिक बदनाम है। जिसने समस्त प्राणियों के सुखधाम राम को बिना अपराध के वनवास देने का पाप किया, उसे पापिनी न कहा जाये तो क्या कहा जाये। जिसके कारण पवित्र सूर्यकुल में कलंक लगा, उसे कलंकिनी न कहा जाये तो क्या कहा जाये। जिसके कारण परिवार बिखर गया, महाराज दशरथ का मरण हुआ, उसे कुलनाशिनी न कहा जाये तो और क्या कहा जाये। जगत के प्राणाधार राम जिसकी आँख के काँटे बन गये, उस पर गालियों की बौछार न हो तो किस पर हो। जिसे उसके ही बेटे भरत ने पापिनी, कुलनाशिनी, कुमति, कपट–पाप और अवगुणों की खान कह कर त्याग दिया हो, उसे कौन व्यक्ति सम्मान देगा?

लाखों वर्ष बीत जाने पर आज भी नर–नारी कैकयी का नाम सुनते ही नाक भौं सिकोड़ लेते हैं और दो–चार गाली देने से बाज नहीं आते, परन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिये कि कैकयी अवगुणों की खान थीं, उनमें कोई गुण था ही नहीं। सत्य बात तो यह है कि कैकयी भगवान राम की अनन्य भक्त थीं। इसी सच्चाई को उद्धृत करना इस लेख का उद्देश्य है।

कैकयी महाराज कैकय की पुत्री और अयोध्या नरेश दशरथ की छोटी रानी थी। वे केवल परम सुन्दरी ही नहीं, अपितु परम पतिव्रता और वीरांगना भी थी। उनमें सरलता, दयालुता, निर्भयता आदि गुण मौजूद थे। उन्होंने प्रेम और सेवा से महाराज दशरथ के हृदय पर इतना अधिकार कर लिया था कि वे तीनों रानियों में कैकयी को ही सबसे अधिक मानते थे। पति–सेवा के लिये कैकयी का सर्वस्व समर्पित था।

एक समय की बात है। महाराज दशरथ देवताओं की सहायता के लिये शम्बरासुर नाम के राक्षस से युद्ध कर रहे थे। उस समय उनके साथ रणांगण में कैकेयी भी थीं। युद्ध करते समय दशरथ का सारथि मारा गया और वे स्वयं भी घायल होकर अचेत हो गये। सारथि के मारे जाने पर कैकेयी ने एक हाथ से घोड़ों की रस्सी थामें और दूसरे हाथ से तलवार से वीरतापूर्वक शत्रुओं का सामना करते हुए महाराज के प्राण बचाये थे। उसी युद्ध में दूसरी बार महाराज दशरथ के रथ की धुरी टूट गयी तो वीरांगना कैकेयी ने तुरंत धुरी की जगह अपना हाथ लगा दिया। धीरता और वीरता का परिचय देकर उन्होंने दूसरी बार भी महाराज को संकट से बचाया था। जब बाद में महाराज दशरथ को इस घटना का पता चला तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वीरांगना कैकेयी की वीरता से प्रसन्न होकर महाराज दशरथ ने महारानी कैकेयी से कहा– तुमने मुझे युद्ध में दो बार संकट से बचाया है, इसलिए तुम मुझसे मनचाहे दो वर माँग लो। पति से हार्दिक प्रेम करने वाली कैकेयी ने कहा– आप मुझ पर प्रसन्न रहें, बस यही मुझे चाहिये। महाराज दशरथ ने वर माँगने का विशेष आग्रह किया तो उन्होंने सहज स्वभाव कह दिया कि फिर कभी माँग लूँगी।

राम का राज्याभिषेक करने का निश्चय हुआ। घोषणा हो चुकी थी और सारी तैयारियाँ भी कर ली गयी थीं। अयोध्या नगरी दुल्हन की तरह सजायी गई थी। जब दासी मंथरा ने अपनी स्वामिनी रानी कैकेयी को राम के राज्याभिषेक का समाचार सुनाया तो कैकेयी को बड़ी प्रसन्नता हुई और खुशी में दासी मंथरा को अपना अमूल्य हार देकर बोलीं— मंथरे! तूने मुझे यह बड़ा ही प्रिय समाचार सुनाया है। इसके बदले में तू जो भी मनचाहा पुरस्कार माँग ले, मैं तुझे वही दूँगी —

दिव्यमाभरणं तस्यै कुब्जायै प्रददौ प्रियम्।
एतन्मे प्रियमाख्यातं किं वा भूयः करोमि तै॥
वरं परं ते प्रददामि तं वृणु।

(वा. रा.)

संत शिरोमणि तुलसीदास भी अपने महाकाव्य श्रीरामचरितमानस में लिखते हैं — रानी कैकेयी अपनी दासी मंथरा से कहती हैं कि हे सखी! यदि यह बात सत्य है कि कल राम का राज्याभिषेक है तो तेरे मन को जो अच्छी लगे, तू वही मनचाही वस्तु माँग ले, मैं दूँगी। मेरे प्रिय राम का स्वभाव बहुत अच्छा है, वह सब माताओं से प्रेम करता है और मुझसे तो वह कुछ विशेष ही प्रेम करता है। मैंने उसके प्रेम की परीक्षा लेकर देख ली है —

राम तिलकु जौं साँचेहुँ काली। देउँ मागु मन भावत आली॥
कौसल्या सम सब महतारी। रामहि सहज सुभायँ पिआरी॥
मो पर करहिं सनेहु बिसेषी। मैं करि प्रीति परीछा देखी॥

(2/15/4—6)

मंथरा कैकय नरेश के राजमहल में दासी थी और कैकेयी की 'आया' थी। कैकेयी को बचपन से उसी ने पाला था, इसीलिए वह कैकेयी से बहुत प्रेम करती थी। कैकेयी के विवाह के समय मंथरा दहेज के साथ अयोध्या आई थी और यहाँ भी वह कैकेयी की सेवा और कैकेयी से प्रेम करती थी। राजा दशरथ के साथ कैकेयी का विवाह इस शर्त पर हुआ था कि कैकेयी का पुत्र ही अयोध्या का राजा बनेगा। यही कारण था कि जब कैकेयी के पुत्र भरत की जगह कौशिल्या के पुत्र राम का राज्याभिषेक हो रहा था तो मंथरा को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा, इसीलिए मंथरा ने कैकेयी को भड़काने के उद्देश्य से राम के राज्याभिषेक की बात बतलायी, किन्तु रामभक्त माता कैकेयी तो राम—प्रेम में अपने पिता की शर्त (अपने पुत्र को अयोध्या का राज्य देने की शर्त) को भूल चुकी थीं, इसीलिए तो राम के राज्याभिषेक का समाचार सुन कर इतनी प्रसन्न थीं कि उस सुखद समाचार को सुनाने वाली मंथरा को अपना अमूल्य हार गले से उतार कर दे देती हैं, परन्तु मंथरा उस हार से खुश नहीं थी, क्योंकि हार प्राप्त करना मंथरा का लक्ष्य नहीं था। उसका उद्देश्य तो कुछ और ही था, इसलिये वह उस अमूल्य हार को फेंक कर कैकेयी को चिकनी—चुपड़ी बातें कह कर समझाती है।

मंथरा के समझाने पर भी रामप्रेममग्ना कैकेयी अपनी कुटिला दासी मंथरा को समझााने के भाव से

कहती हैं कि मेरा राम धर्मात्मा, गुणवान, जितेन्द्रिय, न्यायप्रिय और सत्यव्रती है। वह महाराज दशरथ का बड़ा पुत्र है, इसलिये रघुकुल की प्रथा के अनुसार राम ही राज्याभिषेक का अधिकारी है, भरत नहीं। राम के राज्याभिषेक की बात सुनकर तू क्यों जल रही है? इस खुशी के समय तू क्यों दुखी हो रही है?

मुझे भरत जितना प्यारा है, उससे कहीं अधिक प्यारा राम है, क्योंकि वह कौशिल्या से भी ज्यादा मेरी सेवा करता है। मैं राम और भरत में कोई भेद नहीं देखती। यदि राम को राज्य मिलता है तो वह भरत को ही मिलता है, क्योंकि राम सब भाइयों को अपने ही समान समझता है। इस पर भी जब मंथरा राम की निन्दा करती हुई कैकेयी को भड़काती है तब कैकेयी क्रोधित होकर मंथरा को घरफोरी कह कर उसकी जीभ कटवाने की बात कहती हैं –

पुनि अस कबहु कहसि घरफोरी। तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी।।

(2 / 14 / 8)

इससे लगता है कि कैकेयी राम को अत्यधिक स्नेह करती थीं और वे राम के राज्याभिषेक का समाचार सुन कर बहुत अधिक खुश थीं। फिर भी वे मंथरा की कपट भरी बातों में आ कर कोपभवन में चली जाती हैं। जब महाराज दशरथ अपनी रूठी प्राणप्रिया को मनाने के लिये कोपभवन पहुँचते हैं, तब कुटिलशिरोमणि गुरु की पढ़ायी कैकेयी अपने प्रेमी पति को त्रियाजाल में फँसा कर, उन्हें वचनबद्ध कर और उन्हें उनके प्राणप्रिय राम की सौगंध खिला कर अपनी मनचाही पूरी करने के लिये कहती हैं – हे प्राणप्यारे! सुनिए, मेरे मन को भाने वाला एक वर तो यह दीजिये कि मेरे बेटे भरत का राजतिलक हो और दूसरा वर यह दीजिए कि राम तपस्वी के वेश में उदासीन भाव से विरक्त मुनियों की तरह चौदह वर्ष वन में वास करे –

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का। देहु एक बर भरतहि टीका।।
मागउँ दूसर बर कर जोरी। पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी।।
तापस बेष बिसेषि उदासी। चौदह बरिस रामु बनबासी।।

(2 / 29 / 1–3)

मंथरा के बहकावे में आकर कैकेयी अपने प्रिय निर्दोष राम को चौदह वर्षों के लिये वन में भेजने के कारण वे आज तक पापिनी और कुलकलंकिनी कहलाती हैं।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि जो कैकयी राम को इतना चाहती थीं, तो फिर उन्होंने राम को बिना अपराध के वनवास क्यों दिया?

राम वनवास में जो रहस्य है उसके दो कारण थे। एक तो यह था कि जब श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारियाँ हो रही थीं, तब सारी प्रजा बहुत प्रसन्न थी, किन्तु राम अपने राज्याभिषेक से प्रसन्न नहीं थे। वे तो कुछ और ही लीला करना चाहते थे। भगवान राम का अवतार साधुओं की रक्षा और राक्षसों का विनाश करने के लिये हुआ था। यदि राम का राज्याभिषेक हो जाता तो साधुओं की रक्षा और दुष्टों के विनाश का कार्य

कैसे होता? इसके लिये तो राम का वन जाना आवश्यक था, पर माता–पिता के आज्ञाकारी होने के कारण वे उनकी इच्छा का विरोध भी नहीं कर सकते थे।

भगवान की इच्छा बड़ी बलवती है – **'हरि इच्छा भावी बलवाना',** वह अवश्य होकर रहती है, इसलिये उन्होंने अपनी इच्छा पूरी करने के लिये अपनी अनन्य भक्त माता कैकयी की आड़ ली और अपनी माया से दासी मंथरा, जिसकी बुद्धि देवताओं की प्रेरणा से सरस्वती जी ने भ्रमित कर दी थी, उसके माध्यम से कैकेयी की बुद्धि भ्रमित करा कर उन्हें वरदान भुनाने के लिये प्रेरित किया। भगवान राम की प्रेरणा से प्रेरित होकर ही कैकेयी ने राम को राज्याभिषेक की जगह वनवास दिलाया था और 'राम कार्य' के लिये उन्होंने सदा के लिये बदनामी के जहर का घूँट पी लिया था। यदि माता कैकयी राम को वनवास न दिलवाती तो राम का लीला–कार्य पूरा न होता। न सीता–हरण होता और न राक्षसराज रावण का वध होता।

राम–वनवास का दूसरा कारण यह था कि महाराज दशरथ की मृत्यु का समय निकट आ गया था, किन्तु उन्हें श्रवणकुमार के माता–पिता का अभिशाप था कि तुम भी हमारी तरह पुत्र–वियोग में तड़पते हुए मरोगे। दशरथ के प्राणाधार राम थे, अतः राम के अयोध्या में रहते हुए दशरथ की मृत्यु नहीं हो सकती थी। राम का वियोग करा कर दशरथ की मृत्यु का निमित्त कैकेयी को ही बनाया। भगवान सबके हृदय में बैठे हुए सभी प्राणियों को अपनी माया से यंत्रारूढ़ की तरह घुमाते हैं –

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

श्रीमद्भगवद्गीता के इस श्लोक के अनुसार जगन्नियंता भगवान राम की ही प्रेरणा से देवताओं के द्वारा भेजी हुयी सरस्वती ने मंथरा को निमित्त बना कर माता कैकयी की बुद्धि फेरी, इसलिये माता कैकेयी भगवान की माया के वश में होकर ऐसा कार्य कर बैठीं, जो भगवान की लीला के लिये जरूरी था।

अब प्रश्न यह उठता है कि जब कैकेयी भगवान राम की अनन्य भक्त थीं, तो फिर राम ने उनके द्वारा वन–गमन का कार्य करा कर उन्हें अवधवासियों के द्वारा तिरस्कृत, पुत्र भरत द्वारा अपमानित और इतिहास में लोकनिन्दित क्यों बनाया?

भगवान राम ने अपनी परम भक्त सरलमना कैकेयी के मन में सरस्वती द्वारा ऐसी प्रेरणा ही क्यों करवायी, जिससे सदा के लिये उनका नाम बदनाम हो गया?

यह संसार भगवान का लीला–मंच है और संसार में जो कुछ हम देख रहे हैं, वह सब भगवान राम की लीला है। भगवान राम जगत–नाटक के नायक हैं और हम सब उनके सहायक पात्र हैं। वे सूत्रधार, हमें जो पार्ट खेलने को देते हैं, वही हमें खेलना है, चाहे वह कितना ही बुरा क्यों न हो।

जो कार्य सबसे गुप्त और कठिन होता है, उस कार्य को तो अपने परम प्रेमी के द्वारा ही कराया जाता है। राम ने लोकापवाद मिटाने के लिये गंगाजल सी पवित्र अपनी निर्दोष प्राणप्रिया सीता का परित्याग किया

था तभी तो सीताजी ने शोक न कर यह संदेश भिजवाया – मैं जानती हूँ कि मेरी शुद्धता में आपको लेशमात्र भी संदेह नहीं है, केवल लोकापवाद के भय से ही मुझे त्यागा है। माता कैकयी से भगवान राम ने अपने वनवास का भीषण कार्य करवाने के लिये ही उन्हें अभिनय करने के लिए प्रेरित किया। माता कैकेयी ने भी अपना अभिनय बखूबी निभाया। तभी तो राम प्रसन्न मन से सीता और लक्ष्मण के साथ वन को गए।

माता कैकेयी नाटक के सूत्रधार श्रीराम से एकान्त में मिलना चाहती थीं किन्तु उन्हें उस समय उनसे मिलने का अवसर न मिला, इसलिए वे अपने बेटे भरत के साथ चित्रकूट गयीं और नाटक के सूत्रधार श्रीराम से एकान्त में मिलकर अपने किए की क्षमा माँगने लगीं; तब भगवान श्रीराम ने लीला का भेद खोलते हुए कहा – माँ! आप दोषी हैं ही नहीं, फिर क्षमा कैसी? यह तो मेरा ही कार्य था, मेरी ही इच्छा से, मेरी ही माया द्वारा हुआ था। आप तो निमित्त मात्र थीं, इसलिये अपने मन में दुख न करें। सुख से भजन करें और आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाएँ।

जब भरत प्रयाग में एक रात ठहरे थे, तब भरद्वाज मुनि ने भरत से संकेत में कहा था – हे भरत! तू अपनी माता कैकेयी पर दोषारोपण न कर। राम का वनवास समस्त देव, दानव और ऋषियों के परम कल्याण और परम सुख का कारण होगा। जब भरत चित्रकूट में राम को अयोध्या लौटने का बहुत आग्रह कर रहे थे, तब भगवान राम के नाटक के रहस्य को जानने वाले ब्रह्मर्षि वशिष्ठ ने एकान्त में भरत से कहा था, "श्रीराम साक्षात् नारायण हैं। पूर्व काल में ब्रह्माजी ने इनसे रावण–वध के लिये प्रार्थना की थी, इसलिए इन्होने दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लिया है। राम को रावण का वध करना है, इसलिये ये वन में रहेंगे। तुम राम को लौटाने का आग्रह छोड़ दो। तुम्हारी माता निर्दोष है, उन्होंने जो कुछ किया, वह सब राम की प्रेरणा से प्रेरित होकर राम–कार्य के लिये किया है – यथा –

कैकेय्या दानादि यद्यन्निष्टुरभाषणम्।
सर्व देवकृतं नोचेदेव साषयेत्कथम्।।
तस्मात्त्यजाग्रहं तात रामस्यवर विभिनवर्तने।।

इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि माता कैकेयी निर्दोष थीं। उन्होंने जान–बूझ कर अपने पुत्र के लिये राज्य–लोभ से कोई अनर्थ नहीं किया था। उन्होंने निरपराध राम को वन भेजने का जो क्रूर कर्म किया था, यदि रामायण से कैकेयी के कारण राम–वनवास का प्रसंग निकाल दिया जाये तो राम के अनन्य भक्तों में माता कैकेयी का सर्वोच्च स्थान है। माता कैकेयी बहुत ही उच्च कोटि की महिला थीं। तुलसीदासकृत श्रीरामचरितमानस का एक आधार अध्यात्म रामायण भी है और अध्यात्म रामायण में माता कैकेयी के सच्चरित्र एवं उनके भक्ति–भाव की भूरि–भूरि प्रशंसा की गयी है तथा उन्हें राम–वनगमन में निर्दोष बतलाया गया है। यहाँ तक कि स्वयं तुलसीदासजी ने भी भरद्वाज मुनि के मुख से कहलवाया है कि हे भरत! तेरी माता कैकेयी का कोई दोष नहीं है – **तात कैकइहि दोसु नहिं** (2/206) फिर मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि राम को अपने पुत्र भरत से भी अधिक प्रेम करने वाली जिस देवी ने लोक कल्याण हेतु

श्रीराम जी को वनवास दिलाने के लिए अपरे सिर पर ऐसा कलंक ले लिया कि आज भी लोग उन्हें सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते, इस वास्तविकता को जन सामान्य क्यों नहीं स्वीकारते। वास्तव में माता कैकेयी सरल, स्वार्थहीन, प्रेममयी, धर्मपरायणा, बुद्धिमती और वीरांगना थीं। जिस देवी ने भगवान राम के अनन्य भक्त भरत जैसे पुत्र को जन्म दिया, वे देवी तिरस्कार के योग्य नहीं, अपितु परम आदरणीय हैं। ऐसी प्रातः स्मरणीया देवी के चरण–कमलों में मेरा कोटि–कोटि नमन।

प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई

एक रेलवे स्टेशन का दृश्य– एक बैंच पर एक दम्पत्ति बैठे हुए हैं, उनके बगल में एक साधु विराजमान हैं। अभी–अभी घोषणा हुई कि रेलगाड़ी एक घंटे विलम्ब से आएगी। वह सुनकर साधु महाराज ने अपने थैले से रामायण का गुटका निकाला और पढ़ने लगे। समीप बैठे पुरुष ने प्रश्न किया– 'महाराजजी क्या पढ़ रहे हैं?' उत्तर मिला गोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण अर्थात् श्रीरामचरितमानस। अब दम्पत्ति कहने लगे कि ऐसा क्या लिखा है इस ग्रन्थ में जो आप लोग बार–बार पढ़ते रहते हैं। साधु महाराज चुप रहे। इतने में रेलगाड़ी आई और साधु महाराज ने अपना झोला उठाया और तुरन्त गाड़ी में चढ़ गए। दम्पत्ति के साथ सामान अधिक था। अतः श्रीमान जी पहले चढ़ गए और श्रीमती जी नीचे से सामान दे रहीं थीं। पर गाड़ी चल पड़ी और श्रीमती जी नीचे रह गई। साधु महाराज ने चैन खींची, गाड़ी रुकी और किसी तरह हाँफते–दौड़ते श्रीमती जी गाड़ी में चढ़ गई। थोड़ी देर बाद अब साधु महाराज बोले– 'बेटा यदि तुमने रामायण पढ़ी होती तो आज ऐसी स्थिति न होती।' जिज्ञासावश दम्पत्ति ने पूँछा कि महाराज हमें समझाइए। साधु महाराज ने बताया कि जब श्रीरामजी वनवास काल में गंगा पार कर रहे थे तब नाव पर पहले सीताजी को चढ़ाया, फिर स्वयं चढ़े –

राम सखाँ तब नाव मंगाई। प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई॥

(2/151/3)

उतरते समय पहले सीताजी को उतारा और फिर खुद उतरे –

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता। सीय रामु गुह लखन समेता॥

(2/102/1)

साधु महाराज ने दम्पत्ति को समझाया कि जीवन की ऐसी कोई भी समस्या नहीं हो सकती जिसका सम्पूर्ण, सटीक और व्यावहारिक समाधान श्रीरामचरितमानस में न मिल सके। अतः धर्म के भेदभाव से ऊपर उठकर श्रीरामचरितमानस में वर्णित आदर्शों एवं नीतियों का पालन करना चाहिए। इसमें सभी का कल्याण संनिहित है।

हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही

श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद, सी 24/4 कबीर चौरा, वाराणसी

गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' द्वारा एक आदर्श समाज की परिकल्पना की और अपनी लेखनी द्वारा भगवान श्रीरामचन्द्र जी एवं उनके परिवार सहित अन्य लोगों के चरित्रों को उकेरा। माता सीता का रावण द्वारा हरण किए जाने के पश्चात श्रीरामचन्द्र जी एवं लक्ष्मणजी के द्वारा सीताजी की खोज के क्रम में ऋष्यमूक पर्वत की ओर जा निकले।

उधर सुग्रीव अपने भाई बालि से बचते हुये श्रीहनुमान के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगे। सुग्रीव ने जितेन्द्रिय श्रीराम तथा लक्ष्मण दोनों भाईयों को देखा, तो हनुमानजी से कहा – "मेरे मन में सन्देह है कि ये दोनों वीर एवं सर्वश्रेष्ठ पुरूष बालि के द्वारा ही भेजे हुए हैं। अतएव उन पर विश्वास नहीं करना चाहिये। अतः हे कपिश्रेष्ठ! तुम अभी इन देव कुमारों के पास जाओ और पता लगाओ कि ये दोनों धनुर्धरों का ऋष्यमूक पर्वत पर आने का क्या कारण है। श्रीहनुमानजी श्रीराम व लक्ष्मणजी को पहचान तो नहीं रहे थे, परन्तु उनका दाँया अंग फड़क रहा था और ने़त्रो में प्रेमाश्रु छलक रहे थे और उनका हृदय बरबस उन अलौकिक दीप्तिमान देव कुमारों की ओर आकृष्ट होने लगा।

श्रीहनुमानजी अपने वानर रूप को परिवर्तित कर ब्राह्मण का वेश धारण करके श्रीरामचन्द्रजी एवं लक्ष्मण जी के समीप जा पहुँचे। अत्यन्त विनम्र भाव से वे दोनों भाईयों की प्रशंसा करते हुये ऋष्यमूक पर्वत पर आने का कारण पूछते हुए बोले कि आप दोनों पराक्रमी, राज्य भोगने के योग्य हैं, इस निर्जन वन में आपका प्रवेश कैसे सम्भव हुआ। मनुष्य होकर भी आपका रूप देवताओं के तुल्य है। आप दोनों का तेजस्वी स्वरूप देखकर मैं मुग्ध एवं विस्मित हूँ। आप कोई साधारण मनुष्य नहीं जान पड़ते हैं। बातचीत में वाकपटु हनुमान जी के चुप होते ही भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली हो, जिसने यजुर्वेद का पारायण नहीं किया तथा जो सॉमवेद का विद्वान नहीं है, वह इस प्रकार की सुन्दर भाषा का प्रयोग नहीं कर सकता।

नानृग्वेद विनीतस्य, नायजुर्वेद धारिणाः।
ना सामवेद विदुषः शक्यमे विभाषितुम्।।

(4/3/28)

निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण वेदों का गहन स्वध्याय किया है, क्योंकि इतना वार्तालाप करते हुए कोई त्रुटि नहीं हुई। बात करते समय मुख, ललाट, नेत्र, भौहें या अन्य किसी भी अंग में दोष नहीं दिखाई दिया। हे लक्ष्मण! तुम इनसे वार्तालाप करो।

लक्ष्मणजी ने हनुमानजी से कहा कि हे विद्वान! इस पृथ्वी पर दशरथ नाम के प्रसिद्ध तेजस्वी राजा थे। इस भू–तल पर उनसे द्वेष रखने वाला कोई नहीं था और वह भी किसी से द्वेष नहीं रखते थे। लक्ष्मणजी अपने हाथ से श्रीरामजी की ओर इशारा करते हुये कहते हैं – ये महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र हैं और लोग इन्हें श्रीराम कहते हैं। जब इनका राज्याभिषेक किया जा रहा था, तब कुछ ऐसा कारण आ पड़ा, जिससे ये राज्य से वंचित हो गए और वन में निवास करने हेतु अपनी पत्नी सीताजी तथा मैं इनका अनुज लक्ष्मण वन में आ गए। बडे भाई श्रीराम जी की पत्नी सीताजी का किसी राक्षस ने सूने आश्रम से छल पूर्वक हरण कर लिया। हम दोनों भाई इस निर्जन वन में उन्हें ही ढूँढ़ रहे हैं। कृपया आप अपना परिचय दीजिए।

श्रीहनुमानजी का ध्यान उस समय देव कुमार तुल्य श्रीरामजी के मुखारबिन्दु पर ही केन्द्रित था। अपने प्रभु का परिचय प्राप्त हो जाने पर तो हनुमानजी को अपनी सुध ही नहीं रही। सकल गुण निधान हनुमानजी प्रभु श्रीराम जी के त्रैलोक्य–दुर्लभ पावन चरणों में साष्टांग गिर पड़े और प्रेमाश्रुओं से भाव–विह्वल होकर उनके युगल चरणों को प्रक्षालित करने लगे। श्री हनुमानजी के नयनों से आँसू रुक ही नहीं रहे थे। हनुमानजी ने धैर्य पूर्वक हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, कि हे प्रभु करुणानिधान! मैं वानर आपको पहचान नहीं सका, भूल गया, जो स्वाभाविक ही है, किन्तु आप अन्जान बनकर यह कैसी परीक्षा ले रहे हैं –

पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही।।
मोर न्याउ मैं पूछा साईं। तुम्ह पूछहु कस पर की नाईं।।

(4/2)

आप मुझ अनन्य सेवक को कैसे भूल गये? हे प्रभु आपके चरण कमलों के अतिरिक्त मेरे लिए और क्या अवलम्ब है। हे प्रभु! मुझे अपना लीजिये। मारूतिनन्दन का धैर्य उत्तरोत्तर उद्वेलित होता जा रहा था। अत्यधिक व्याकुल चित्त से रुदन करते हुए वे प्रार्थना करने लगे, हे करूणानिधान मैं मोह ग्रस्त एवं अज्ञानता के अन्धकार में डूबा हुआ एक कुटिल हृदय तुच्छ प्राणी हूँ। हे दयामय प्रभु! आप हम पर दया कीजिए –

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें। सेवक प्रभुहि परै जनि भोरें।।
नाथ जीव तव मायाँ मोहा। सो निरस्तरइ तुम्हारेहि छोहा।।

(4/3/1–2)

भगवान श्रीराम तो अन्तर्यामी हैं, वे तो सब कुछ जानते हैं कि यह तो हनुमान ही है। श्री हनुमानजी अपने आराध्य प्रभु के सम्मुख अशान्त चित्त से करुण प्रार्थना करते हुये आत्म–विस्मृत हो गए। उन्हें अपने छद्मवेष का बोध नहीं रहा, उनका ब्राह्मण–वेष स्वतः लुप्त हो गया। वे अपने वास्तविक कपि–रूप में प्रभु श्रीराम के चरणों पर गिर पड़े और रोते हुए प्रार्थना करने लगे। भगवान श्रीराम ने अपने भक्त को अपनी भुजाओं में भर कर अपने हृदय से लगा लिया। उस समय भगवान और भक्त दोनों की अलौकिक स्थिति थी। प्रभु श्रीराम प्रेम से अपना हाथ हनुमान जी के मस्तक पर फेर रहे थे और वे शिशुवत् परम प्रभु श्रीराम के सुविस्तृत वक्ष से चिपके हुये सिसक रहे थे, उनकी वाणी अवरुद्ध हो गई थी।

तत्पश्चात् हनुमानजी ने लक्ष्मणजी के चरणों में अपना प्रणाम निवेदित किया। लक्ष्मणजी ने भी उन्हें गले लगा लिया। मारूतिनन्दन ने प्रभु श्रीरामजी को सुग्रीव का परिचय दिया। नीति–निपुण श्रीहनुमानजी प्रभु श्रीरामजी के मुखारविन्द को अपलक देखते हुए विनम्र वाणी से बोले, प्रभु! अपने बड़े भाई बालि की भयानक शत्रुता के कारण सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करने लगे। वे राज्य से बहिष्कृत और पत्नी वियोग से अत्यन्त दु:खी हैं। सुग्रीवजी को आपकी सहायता की आवश्यकता है। सुग्रीवजी आपसे मैत्री स्थापित कर लेंगे, तो उन्हें निश्चय ही असीम प्रसन्नता होगी तथा माता सीताजी की खोज में वे आपकी सहायता करेंगे।

भगवान श्रीरामजी की स्वीकृति मिलते ही पवनपुत्र हनुमानजी ने दोनों भाईयों को कन्धों पर बिठा कर ऋष्यमूक पर्वत की ओर चल पड़े। भगवान श्रीराम से मिलकर हनुमानजी को अपार हर्ष की प्राप्ति हुई। भगवान श्रीराम और मारुतिनन्दन के मिलन का यह सुन्दर वर्णन गोस्वामी तुलसीदासजी ने "श्रीरामचरितमानस" में बड़े ही सुन्दर एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

विज्ञापन

SHARDE SANDGEET KALA KENDRA

जामवंत के बचन सुहाए

श्री रामजन्म सिंह,
ग्राम+पोस्ट - दामा, तहसील-मेंहनगर, जिला आजमगढ़ (उ0प्र0) मो0 : 09839453851

मंगलाचरण के पश्चात् सुन्दरकाण्ड का प्रारंभ इस चौपाई से होता है –

जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।

(5/1/1)

श्रीरामचरितमानस के सभी काण्डों का आरम्भ दोहे से होता है, किन्तु सुन्दरकाण्ड का आरम्भ चौपाई से हुआ है। सुन्दरकाण्ड के मंगलाचरण भी बहुत सुन्दर हैं। प्रथम मंगलाचरण में श्रीरामजी की वंदना है, जिसमें उनकी सोलह विशेषताएँ व्यक्त की गयी है।

श्रीहनुमानजी का प्रत्येक कार्य भगवत्–स्मरण के साथ ही प्रारम्भ हुआ है। यथा –

'चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा।'

(5/1/4)

भगवान को उन्होंने अपने कर्म का साक्षी बनाया। इससे सिद्ध होता है कि श्रीहनुमानजी लंका में अकेले नहीं गए थे। अपने हृदय के सिंहासन पर श्रीराम को विराजमान कर ले गए थे।

सुन्दरकाण्ड चारित्रिक दृष्टि से, वर्णनात्मकता की दृष्टि से और घटनाक्रम की दृष्टि से तो अनूठा है ही, इसके अतिरिक्त माता सीता का उदात्त चरित्र, हनुमान की कर्तव्यनिष्ठा और पराक्रम, विभीषण की शरणागति, श्रीराम का सात्विक कोप सब कुछ अद्वितीय है।

सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कि मानस के अन्य सभी काण्ड घटना या स्थान विशेष के द्वारा संदर्भित एवं नामित किए गए हैं जैसे बालकाण्ड में श्रीराम जन्म, बाललीला, विवाह आदि के प्रसंग हैं, तथा अयोध्याकाण्ड में अयोध्या में घटित घटनाओं का वर्णन है। अरण्य और किष्किन्धाकाण्ड भी इसी प्रकार स्थान विशेष पर आधारित नाम है। लंकाकाण्ड लंका में घटित युद्ध आदि से सम्बन्धित है। उत्तरकाण्ड रावण की मृत्यु के बाद रामराज्य तथा अन्य उत्तर कथाओं से गुम्फित है।

किन्तु सुन्दरकाण्ड इससे भिन्न है। इस काण्ड का नामकरण न तो किसी घटना से संदर्भित है, न स्थान विशेष से नामित। यह उद्देश्य प्रधान काण्ड है। 'सुन्दर' शब्द के सम्बन्ध में विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। कुछ का कथन है कि लंकापुरी त्रिकूट पर्वत पर बसी थी, जो तीन शिखरों वाला पर्वत था। नील शिखर पर स्वर्णमयी लंका बसी थी। सुबेल पर्वत पर युद्ध भूमि एवं सुन्दर शिखर पर अशोक वाटिका नामक रावण का उद्यान था। सुन्दर शिखर पर शोभायमान अशोक वाटिका के कारण सुन्दरकाण्ड नामकरण किया

गया। इस काण्ड में **'सुन्दर'** शब्द आठ बार आया है –

1. सिंधु तीर एक भूधर **सुंदर**। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर।।

(5/1/5)

2. कनक कोटि बिचित्र मनि कृत **सुंदरायतना** घना।

(5/3/छंद–1)

3. स्याम सरोज दाम सम **सुंदर**। प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर।।

(5/10/3)

4. तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति **सुंदर**।।

(5/13/1)

5. सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि **सुंदर** फल रूखा।।

(5/17/7)

6. सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति **सुंदर**।।

(5/33/3)

7. हरषि राम तब कीन्ह पयाना। सगुन भए **सुंदर** सुभ नाना।।

(5/35/4)

8. सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन **सुंदर** नीती।।

(5/58/2)

सुन्दरकाण्ड एक आशीर्वादात्मक काण्ड है अतः भक्ति, भगवत्कृपा प्राप्त करने का सहज मार्ग बतलाता है। इस काण्ड में श्रीहनुमानजी को चार बार आशीर्वाद मिला है। यथा सुरसा ने आशीर्वाद दिया –

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान।।

(5/2)

लंकिनी का आशीर्वाद –

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

(5/5/1)

सीताजी ने भी आशीर्वाद दिए –

अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।।

(5/17/3)

श्रीरामजी ने भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा –

सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं।।

(5/32/7)

तथा भक्ति का आशीर्वाद दिया –

नाथ भगति अति सुख दायनी। देहु कृपा करि अनपायनी।।
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी।।

(5/34/1–2)

सुन्दरकाण्ड में विभीषण की शरणागति का प्रसंग भी है जिसमें विभीषण का राजतिलक कर उन्हें लंकेश बना दिया।

किष्किन्धा विचार काण्ड है, सुग्रीव केवल विचार करता है, कार्य नहीं। लंका काण्ड कार्य प्रधान है, इसमें युद्ध आदि का वर्णन है, किन्तु सुन्दरकाण्ड विचार प्रधान है, कर्म प्रधान और पराक्रम प्रधान है। सुन्दरकाण्ड में राजनीति, नीतिशास्त्र और व्यवहार शास्त्र का यथा स्थान प्रयोग किया गया है। राजनीति के क्षेत्र में – **'नीति बिरोध न मारिअ दूता।'** शत्रुपक्ष के महत्वपूर्ण व्यक्ति को मिलाकर दल बदल करा देना, यह कूटनीति का एक अंग है। हनुमानजी ने विभीषण को दल बदल करवाया क्योंकि जिस दल में नीति का विरोध हो, अन्याय हो रहा हो उसे छोड़ देना चाहिए। इसके अलावा व्यावहारिक नीति के भी कई उदाहरण सुन्दर काण्ड में उपलब्ध है। जैसे –

सुन्दर काण्ड की कई चौपाइयाँ मंत्र रूप में प्रयुक्त होती हैं। सभी संत, भक्त, विद्वान सुन्दर काण्ड की महिमा को सर्वोपरि मानते हैं। सुन्दर काण्ड के कुछ मंत्र निम्नांकित हैं –

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

(5/5/1)

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

(5/5/2)

दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।।

(5/27/4)

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।।

(5/30)

सद् विचार

- सुख–दुख में जिसके मुख की प्रभा नित्य एक–सी रहती है, जो आत्मा में तृप्त है, आत्मा में ही सन्तुष्ट है, आत्मा में ही क्रीड़ा करता है, आत्मा में ही रति करता है, निन्दा सुनकर जिसके मन में क्षोभ नहीं आता और प्रशंसा सुनकर जो हर्षित नहीं होता, वही भक्त है, वही जीवन्मुक्त है, वही महात्मा है, वही सेवनीय और पूजनीय हैं।

तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा

श्रीमती कुसुम पटैरया, आजीवन सदस्य

हमारा देश ही नहीं आज पूरा विश्व आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है। सभी राष्ट्र और उनके अंदर की राजनैतिक पार्टियाँ यदि आपसी मतभेद भुलाकर, निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर इसका समाधान खोजें और उसे कार्यरूप में परिणित करें तो ऐसा कोई कारण नहीं कि हम इस जटिल समस्या से उबर न सकें। पठानकोट एयरबेस पर हुए आतंकवाद के हमले के संदर्भ में संयुक्तराष्ट्र संघ में चीन का 'विटो' यह दर्शाता है कि आतंकवाद की समस्या के प्रति सबका दृष्टिकोण अलग–अलग है। ठीक ऐसी ही स्थिति रामायण काल में थी। गुरु वशिष्ठ में ब्रह्मा के नियम को तोड़ने तक की शक्ति थी। विश्वामित्र जी अपने तपोबल से दूसरी सृष्टि की रचना करने लगे थे। बहुत मुश्किल से मानें। महाराजा दशरथ इन्द्र तक की सहायता करते थे। महाराजा जनक अपने तपोबल एवं ज्ञान से बहुत उच्च स्थिति में थे, पर इनमें आपसी तालमेल नहीं था। इसी कारण अयोध्या और मिथिला के बीच ताड़का, मारीच और सुबाहु का, दण्डाकारण्य में खर–दूषण का एवं पूरे विश्व में रावण का आतंक छाया हुआ था। इस प्रकार से दैवी शक्तियाँ बिखरीं हुईं थी। उनमें आपसी तालमेल का अभाव था, तो दूसरी ओर आसुरी शक्तियाँ संगठित थीं और इनका प्रमुख संयोजक रावण था जिसे एक प्रकार से अजेय–अमरता का वरदान प्राप्त था। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने बिखरीं हुईं दैवी शक्तियों को संगठित किया और उन्हीं से आशीर्वाद और शक्तियाँ प्राप्त करके आतंकवाद को समूल नष्ट किया। श्रीरामचरितमानस में इस प्रसंग का कुछ इस प्रकार से वर्णन किया गया है। विश्वामित्र जी अपने आश्रम में विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान, यज्ञादि पुनीत कार्य करते थे। वास्तव में ऋषि–मुनियों के इस प्रकार के शोध कार्य आध्यात्मिक प्रगति में सहायक थे। हमारे देश में प्राचीनकाल में इन्हीं आश्रमों में किए जा रहे अनुसंधानों से आध्यात्मिक प्रगति चरम सीमा पर थी। विश्वामित्र जी के आश्रम पर मारीच और सुबाहु का आतंक था। इससे दुखी होकर विश्वामित्र जी ने विचार किया कि इन दुष्टों के संहार हेतु ही अखिल ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म ने 'श्रीराम' के रूप में महाराज दशरथ के यहाँ अवतार लिया है। अतः वे उन्हें लेने के लिए अयोध्या जाने का विचार बनाते हैं। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि विश्वामित्र जी और महाराज दशरथ के गुरु वशिष्ठ जी एक दूसरे के घोर शत्रु थे, किन्तु राष्ट्रहित के सामने निजी शत्रुता को ताक पर रखकर विश्वामित्र जी ने अयोध्या की ओर प्रस्थान किया।

बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार।
करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार।।

(1 / 206)

महाराज दशरथ ने विश्वामित्र जी का स्वागत किया। उनसे आशीर्वाद लिया। भोजन प्रसाद ग्रहण कर लेने के पश्चात् पूछने लगे कि उनके यहाँ आने का कोई विशेष कारण हो तो बताएँ। विश्वामित्र जी ने बताया कि राक्षसों का आतंक उनके आध्यात्मिक कृत्यों में बाधा डालते हैं। उनके संहार हेतु आप अपने पुत्रों, राम–लक्ष्मण को दे दीजिए। राजा इस अप्रिय वाणी को सुनकर कहने लगे कि हे ब्राह्मण देवता! आपने सोच–विचार कर माँग नहीं की है। मैं सब कुछ दे सकता हूँ पर 'राम' देते नहीं बनते।

मागहु भूमि धनु धन कोसा। सर्बस देउँ आजु सहरोसा।।
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं।।
सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं। राम देत नहिं बनइ गोसाईं।।

(1/208/3–5)

इस प्रकार से महाराज दशरथ ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया कि वे किसी भी हालत में राम–लक्ष्मण नहीं देंगे। अब महत्वपूर्ण भूमिका आती है गुरु वशिष्ठ की जो कि विश्वामित्र जी के घोर विरोधी हैं, पर वे त्रिकालदर्शी हैं। वे जानते हैं कि लोक कल्याण हेतु दुष्टों के संहार के लिए श्रीराम–लक्ष्मण को विश्वामित्र जी को देना आवश्यक है। अतः उन्होंने भी निजी शत्रुता को भुलाकर राष्ट्रहित में आतंकवाद को समूल नष्ट कराने की दिशा में कार्य करते हुए महाराज दशरथ को समझाया।

तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा। नृप संदेह नास कहँ पावा।।

(1/208/8)

जब विश्वामित्र जी श्रीराम–लक्ष्मण को साथ लेकर अपने आश्रम की ओर चले जा रहे थे तब राक्षसी ताड़का ने उन पर आक्रमण कर दिया। श्रीराम जी ने उसका एक बाण से अंत कर दिया। तत्पश्चात् विश्वामित्र जी ने अपने आश्रम पहुँचकर श्रीराम जी को वे सभी दैवी शक्तियाँ समर्पित कर दीं जो उन्होंने अभी तक अर्जित कीं थीं।

आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि।।

(1/209)

इससे यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि जो महान विभूति आतंकवाद को समूल नष्ट करने में सहायक हो उसका हर प्रकार से साथ देना चाहिए, अपनी पूरी शक्तियाँ उसे अर्पित कर देनी चाहिए। जिस प्रकार मुनि विश्वामित्र जी और गुरु वशिष्ठ की आपस में नहीं बनती थी, इसी प्रकार से महाराज दशरथ और राजा जनक के आपसी मतभेद इतने थे कि एक दूसरे के राज्य में नदियों के कारण आवागमन भी नहीं था। जिन राजाओं की आपस में मित्रता होती थी वे उनके राज्यों के बीच पड़ने वाली नदियों पर पुलों का निर्माण करा देते थे। जब श्रीराम जी ने धनुष यज्ञ में शिव जी के धनुष को तोड़ दिया और उनका विवाह

जनकपुत्री सीता जी से होना निश्चित हो गया, तब महाराज जनक ने अयोध्या और जनकपुरी के मध्य पड़ने वाली नदियों पर पुल बनवा दिए।

आवत जानि भानुकुल केतू। सरितन्हि जनक बँधाए सेतू।।

(1 / 304 / 5)

गुरु वशिष्ठ जी में वह आध्यात्मिक शक्ति थी कि वे विधाता की गति को भी रोक सकते थे अर्थात् यदि वे ठान लें तो विधि के विधान को भी मिटा सकते थे। श्रीरामचरितमानस में इसका वर्णन इस प्रकार है –

सो गोसाइँ बिधि गति जेहिं छेंकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी।।

(2 / 255 / 8)

जिस प्रकार गुरु वशिष्ठ आध्यात्मिक शक्तियों के भंडार थे ठीक उसी प्रकार मुनि विश्वामित्र जी भी इतने शक्तिशाली थे कि उन्होंने अलग से एक सृष्टि रचना प्रारंभ कर दी थी। यदि श्रीराम जन्म के पूर्व गुरु वशिष्ठ और मुनि विश्वामित्र जी की आपसी शत्रुता न होती और वे दोनों महानुभाव मिलकर आतंकवाद का सामना करते तो आशातीत सफलता मिलती। इन दोनों हस्तियों को मिलाने का काम श्रीराम जी ने किया। अब राजा दशरथ की प्रतिभा पर विचार करते हैं। वे इतने शक्तिशाली थे कि देवताओं के राजा इन्द्र तक उनकी सहायता के आकांक्षी थे। देखिए श्रीरामचरित मानस का यह प्रसंग।

ससुर चक्कवइ कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ।।
आगें होइ जेहि सुरपति लेई। अरध सिंघासन आसन देई।।

(2 / 98 / 3–4)

अर्थात् (सीता जी मंत्री सुमंत्र से कहतीं हैं) मेरे ससुर चक्रवर्ती कौशलेन्द्र का चौदह भुवनों में प्रभाव विदित है। देवराज इन्द्र जिनका आगे बढ़कर स्वागत करते हैं और अपना आधा सिंहासन उन्हें देते हैं। इतने प्रतापी होने पर भी उनके पड़ोसी राज्य जनकपुरी और उनके राज्य के बीच ताड़का, सुबाहु और मारीच का भारी आतंक था, पर उसे समाप्त करने का कोई प्रयास राजा दशरथ की ओर से नहीं हुआ क्योंकि उनका अपना राज्य सुरक्षित था। अयोध्या नाम ही इसलिए पड़ा कि यहाँ कभी युद्ध हुआ ही नहीं। गुरु वशिष्ठ जी आतंकवाद को समूल नष्ट कराने में किस प्रकार सहायक हुए अब इस पर विचार करते हैं। श्रीराम विवाह के पश्चात् अयोध्या नगरी में आनंद की वर्षा हो रही थी। अब सभी नगरवासी श्रीराम जी को युवराज अथवा अपने राजा के रूप में देखना चाहते थे। महाराज दशरथ ने गुरु वशिष्ठ जी से श्रीराम जी के राज्याभिषेक का शुभ मुहूर्त पूछा। गुरु वशिष्ठ जी त्रिकालदर्शी थे। वे जानते थे कि अभी तो श्रीराम जी का वनवास होना है और यह आवश्यक है आतंकवाद को समूल नष्ट करने के लिए। अतः उन्होंने बहुत ही चतुराई से राजा दशरथ को इस प्रकार समझाया।

बेगि बिलंबु न करअि नृप साजिअ सबुइ समाजु।
सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु॥

(2/4)

(अर्थात् हे राजन्! शीघ्रता कीजिए, विलंब न करें। जब श्रीराम जी युवराज होगें तभी शुभ मुहूर्त होगा।)

महाराज दशरथ ने यह समझ लिया कि जब ही युवराज पद श्रीराम जी को देंगे, उस समय स्वतः शुभ मुहूर्त हो जाएगा। श्रीराम जी की इच्छा से और सरस्वती देवी द्वारा मंथरा की बुद्धि पलटने से माँ कैकेयी ने उस पर विश्वास किया और उन्होंने महाराज दशरथ से भरत को राजतिलक और श्रीराम जी को चौदह वर्ष का वनवास माँग लिया। श्रीराम जी का यह वनवास ही आतंकवाद को समूल नष्ट कर सका। इस कारण जब भरत जी चित्रकूट जाते हैं, श्रीराम जी को वापिस अयोध्या लौटाने के उद्देश्य से, तब भी गुरु वशिष्ठ जी ने श्रीराम जी को अयोध्या लौट आने का आदेश नहीं दिया बल्कि सभी को यही समझाया कि श्रीराम जी की इच्छानुसार कार्य करना उचित होगा।

बोले मुनिबरु समय समाना। सुनहु सभासद भरत सुजाना॥
धरम धुरीन भानुकुल भानू। राजा रामु स्वबस भगवानू॥
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू। राम जनमु जग मंगल हेतू॥

(2/254/1—3)

राखें राम रजाइ रुख हम सब कर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ॥

(2/254)

इस प्रकार से सभी ने अपने आपसी मतभेद भुलाकर एकजुट होकर विश्व के सबसे बड़े आतंकी रावण का अंत कराया। इससे आज विश्व के सभी राजनेताओं को यह शिक्षा लेनी चाहिए कि आपसी मतभेद भुलाकर, निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर विश्व कल्याण की भावना से एकजुट होकर आतंकवाद का सामना करें।

सद् विचार

कहते हैं, किसी दानी के दान की प्रशंसा की गयी तो वह रोने लगा। उससे रोने का कारण पूछा गया तो वह बोला– 'धन उसका, देने वाला वह, मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ। लोग मुझे दानी कहते हैं, भला मैं प्रभु के सामने क्या मुँह दिखाऊँगा ?

हृदय राखि कोशलपुर राजा

श्री सोमदत्त गुप्ता, सी–7, एफ, वाटिका अपार्टमैन्ट, मायापुरी, नई दिल्ली–110064

प्राणी का जन्म–मरण एक शाश्वत एवं अविरल प्रक्रिया है। शरीर में प्राण अर्थात् जीव, जीवात्मा होने से ही प्राणी का संसार में अस्तित्व है। निष्प्राण होने पर मृत्यु कहलाती है। अतः आवागमन आत्मा का होता है। आत्मा ही परमात्मा का विशुद्ध रूप में अंश है।

ईश्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी।।

(7 / 117 / 2)

आत्मा के लिए इस संसार में आने के लिए शरीर ही कर्म करने का साधन हैं, जो जीवन पर्यन्त होता है। मनुष्य अपने विवेकानुसार कर्म करने में स्वतंत्र हैं। मनुष्य की यात्रा जन्म से मृत्यु तक होती है, परन्तु उसे नही पता कब आया, कैसे आया, कौन रोया, कौन हँसा। ऐसे ही कब जाएगा, कहाँ जाएगा, कौन रोएगा, कौन हँसेगा। जन्म मृत्यु का सम्बन्ध निरन्तर एवं अचल है। प्राणी को अपने जीवन के सभी कार्य विवेकपूर्ण समभाव से पर अभिमान रहित स्वयंहित, जनहित एवं राष्ट्रहित में करने चाहिए। इसके लिये अपनी समस्त इन्द्रियों को, मन, बुद्धि को एकाग्र करना होगा। कार्य अत्यन्त ही कठिन है। परन्तु प्रभु राम पर पूरा भरोसा एवं विश्वास हो तो हम अपने लक्ष्य में अवश्य ही सफल होगें। जब हम अपने हृदय में भगवान श्रीराम का स्मरण करते हुए कार्य करेंगें तो सफलता तो मिलेगी ही, शनैः–शनैः मन राम में रमने लगेगा और अंततः इसी जन्म में जन्म–मरण के चक्र से छुटकारा मिल सकता है। इसके लिए सतत प्रयास की आवश्यकता है और वह भी सदैव ईश्वर को हृदय में धारण करते हुए कार्य करना, जैसा श्री हनुमान जी ने लंका जाते समय किया था –

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

(5 / 5 / 1)

प्रभु राम ने शबरी को भक्ति का उपदेश देते हुए नवीं भक्ति इस प्रकार बताई –

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।

(3 / 36 / 5)

हमें सम–विषम सभी परिस्थितियों में अपने विवेकानुसार निमित्त कार्यों में कपटरहित सर्वहित में कार्यरत रहना हैं। इसके लिऐ सर्वप्रथम प्रभु प्रदत्त इस शरीर रूपी सुन्दर एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण धरोहर को जीवन पर्यन्त स्वस्थ, स्फूर्तिवान एवं सात्विक बनाना होगा। हमारे आचार–विचार, भोजन में शुद्धता ही शरीर को मृत्युपर्यन्त स्वस्थ रख सकते हैं। हमारे तन, मन, बुद्धि एवं विवेक में कोई क्षति न हो, विकार न हो, त्रुटि

न हो, यह प्रभु कृपा से, श्रेष्ठ गुरुओं आचार्यो की कृपा, शिक्षा–दीक्षा एवं सत्पुरूषों के मार्गदर्शन से ही सम्भव है। अतः आचार्यों, गुरुओं सन्तों, श्रेष्ठ जनों का उचित सम्मान उनके प्रति निष्ठा एवं उनकी वाणी में पूर्ण विश्वास रखने तथा उनके बताए नियमों के आचरण से ही जीवन को सफलता की ओर ले जा सकेंगे। प्रभु राम ने सातवी भक्ति बताते हुए कहा –

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा।।

(3 / 36 / 3)

जगत में सभी प्राणी परमात्मा ही की सन्तान है। हम परदोष न देखें एवं गुरुओं, आचार्यों संतो के मागदर्शन में आगे बढ़े। संत कबीर ने भी गुरु के संदर्भ में कह दिया –

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े काकै लागों पाँय।
बलिहारी गुरु आपकी जो गोविन्द दियो मिलाय।।

हमारा अपने कार्य क्षेत्र में परिस्थितियों, स्थान, समय एवं कार्य की जटिलता पर कोई नियंत्रण नहीं होता, फिर भी प्रभु राम में दृढ़ विश्वास, आचार्यों एवं संतो द्वारा निदेर्शित मार्ग पर चलकर ही हम अपने कार्यों में सफल हो सकते हैं। अपने कार्य क्षेत्र में अपने से ऊपर एवं छोटे सभी कार्मिकों में सामंजस्य रखना होगा। नियमों–उपनियमों का पालन करना होगा, तभी हम अपने कार्यों को सुचारू एवं समयबद्ध तरीके से पूरा कर पाएँगें। ऐसे ही हम अपने पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों को पूर्ण करते हुए अपना जीवन यापन करते हुए सफलता एवं पूर्णता की ओर बढ़ पाएँगे। आज के आधुनिक परिपेक्ष में भी श्रीराम जी ने शबरी को जो भक्ति का उपदेश दिया, वह अनुकरणीय है। श्रीराम जी ने नवीं भक्ति में जो सरलता एवं छल रहित होने की बात कही है यदि हम अपने जीवन में उसको अपना लें तो इहलोक और परलोक दोनों सुधर जाएँगे। लोग कहते है कि बिना छल–कपट के काम नहीं चलता है। यह तथ्यहीन है क्योंकि जब छल–कपट की कलई खुलती है तब सब कुछ नष्ट हो जाता है पर सरलता एवं छल विहीन ईमानदारी प्रारंभ में इनका व्यवहार कठिन लग सकता है, सदैव शाश्वत है एवं लोक–परलोक दोनों को सुधारने वाला है। अतः हमारा परम कर्त्तव्य यही है कि इस सिद्धांत का अनुसरण करते हुए हम ईश्वर को ह्रदय में धारण करके अर्थात् उनका ध्यान करते हुए, उनका स्मरण करते हुए जग के सारे कार्य करें तो निश्चित ही परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। अतः कार्य के समय सदैव ध्यान रखे कि –

ह्रदय राखि कोसलपुर राजा।

सद् विचार

नवनिर्माणों के चिन्तन में, हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ साधना की आँधी में, विश्व का कल्याण न भूलें।

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी

डॉ0 राजाराम त्रिपाठी
ग्राम पो0 – चिचारा, जिला महोबा (उ0प्र0)

परमपूज्य गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में लिखा है कि वे कोई कवि नहीं है और न ही कवि कहलवाना चाहते हैं वे तो अपनी बुद्धि के अनुसार श्रीरामजी का गुणगान करना चाहते हैं। उनकी कविता सभी काव्य गुणों से रहित होते हुए भी श्रीराम नाम से परिपूर्ण है। इस कारण यह सज्जनों को प्रिय लगेगी –

कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू। सकल कला सब बिद्या हीनू।।

(1/9/8)

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।।

(1/10/1)

सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी।।
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही।।
जदपि कबित रस एकउ नाहीं। राम प्रताप प्रगट एहि माहीं।।

(1/10/5–7)

श्रीराम नाम वंदना सहित सभी की वंदना करते हुए वे लिखते हैं कि शिवजी की कृपा से उनके ह्रदय में सद्बुद्धि का प्रवाह हो गया है, अतः अब इस रामचरितमानस के कवि तुलसी हैं –

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी।।

(1/36/1)

पहले वे लिखते हैं कि मेरी कविता में एक भी रस नहीं हैं, पर जब बाद में वे शिवजी की कृपा की बात करते हैं, तब फिर 'रस' की कमी कहाँ रहेगी और 'श्रीरामचरितमानस' वह महाकाव्य बन गया, जिसमें 'नव–रस' के अलावा संपूर्ण ग्रन्थ में ऐसा भक्ति रस भरा हुआ है जो निश्चित रूप से भगवान श्रीराम के चरण कमलों में दृढ़ अनुराग पैदा करता है। श्रीरामचरितमानस में वर्णित विभिन्न रस एवं अलंकारों के कुछ उदाहरण इस लेख में प्रस्तुत किए जा रहे हैं –

1. श्रृंगार रस : जग जननी पार्वती और अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम की आदि शक्ति सीताजी की सुन्दरता का वर्णन करते समय अति मर्यादित रूप में श्रृंगार अलंकार का उपयोग हुआ है –

बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाईं। करि सिंगारु सखीं लै आईं॥
देखत रूपु सकल सुर मोहे। बरनै छबि अस जग कबि को है॥
जगदंबिका जानि भव भामा। सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा॥
सुंदरता मरजाद भवानी। जाइ न कोटिहुँ बदन बखानी॥

(1 / 100 / 5–8)

सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगत जननि अतुलित छबि भारी॥
भूषन सकल सुदेस सुहाए। अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए॥
रंगभूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी॥

(1 / 248 / 2–4)

2. वीर रस : सीतान्वेषण हेतु समुद्र तट पर बैठे सभी वानर विचार कर रहे थे कि अब यह सौ योजन समुद्र पार करके कौन जाएगा। जब किसी की हिम्मत न पड़ी। तब जामवंतजी ने हनुमानजी को उनके विस्मृत बल का ध्यान कराया और 'रामकाज' करने हेतु कहा, जिसे सुनते ही उन्होंने अपना शरीर पर्वताकार कर लिया और कहने लगे –

राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा॥
कनक बरन तन तेज बिराजा। मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा। लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा॥
सहित सहाय रावनहिं मारी। आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी॥

(4 / 30 / 6–9)

3. करुण रस : मेघनाद द्वारा लक्ष्मणजी को **'बीरघातिनी साँगी'** से मूर्छित कर दिया गया था और उनके उपचार हेतु हनुमानजी संजीवनी बूटी लेने गए थे। जब उनके आने में विलंब हो रहा था, तब श्रीरामजी भाई लक्ष्मण को गोद में लेकर कहते हैं –

अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ॥
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥

(6 / 61 / 2 तथा 6)

4. रौद्र रस : धनुष भंग के पश्चात परशुरामजी जनकपुरी में रंगस्थल पर अति क्रोध में आए और लक्ष्मणजी से जो वार्तालाप हुआ, उसने 'आग में घी' का काम किया। इससे उनका क्रोध और प्रचंड हो गया और वे लक्ष्मणजी से कहते हैं –

बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोहि। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही॥

(1 / 272 / 5–6)

5. वीभत्स रस : श्रीराम–रावण युद्ध में दोनों ओर भयंकर मारकाट हुई, जिसके परिणामस्वरूप खून की नदी बह चली। इसका वर्णन वीभत्स रस में इस प्रकार किया गया है –

कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अबर्त बहति भयावनी॥
जलजंतु गज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन को गने।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने॥

(6 / 87 / छंद)

6. भयानक रस : जब रावण ने आदेश दिया कि बंदर की पूंछ में आग लगा दी जाए तब हनुमानजी ने अपनी पूँछ को बढ़ाना शुरू किया। लंकावासियों ने उस पर कपड़ा बाँध कर घी तेल डालकर आग लगा दी। तब हनुमानजी ने उछल कर उसी साधन से लंका को जला दिया। उस समय का दृश्य भयानक रस के माध्यम से इस प्रकार से वर्णित है –

जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला॥
तात मातु हा सुनिअ पुकारा। एहिं अवसर को हमहि उबारा॥

(5 / 26 / 2–3)

7. अद्‌भुत रस : श्रीरामजी ने माता कौशिल्या को अपना विराट स्वरूप अपने मुख के अंदर दिखाया। इस प्रसंग में अद्‌भुत रस हैं –

देखरावा मातहि निज अद्‌भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड॥

(1 / 201)

8. हास्य रस : नारद मोह के प्रसंग में हास्य रस का वर्णन मिलता है। नारदजी समझ रहे थे कि उनको भगवान विष्णु का रूप मिल गया है, पर वास्तविकता यह थी कि उनको श्रीहरि ने बंदर का रूप दे दिया था उनके कल्याणार्थ। यह देखकर विप्र वेश में बैठे शिवगण उनकी हँसी उड़ा रहे थे। यह हास्य रस इस प्रकार है –

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूली॥
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर गन मुसुकाहीं॥

(1 / 135 / 1–2)

9. शान्त रस : धनुष भंग के पश्चात् परशुरामजी अत्यन्त क्रोधित होकर धनुष यज्ञ में आते हैं और कहते हैं कि जिसने शिवजी का धनुष तोड़ा हो, वह नृप समाज से अलग खड़ा हो जाए अथवा सारा नृप समाज उससे दूर चला जाए अन्यथा यहाँ बैठे सभी राजा मारे जाएँगे। कोई कुछ नहीं कह रहा था, तब श्रीरामजी अति शान्त मुद्रा में शान्त रस प्रवाह करते हुए इस प्रकार बोले –

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।

(1/271/1–2)

लेख के विस्तार भय से अलंकारों एवं छन्दों आदि का वर्णन अगले अंक में प्रकाशनार्थ लेख में भेजूँगा। प्रारंभ में तुलसीदासजी लिखते हैं कि 'काव्य' लेखन का एक भी विवेक उनके पास नहीं –

कबित बिबेक एक नहिं मोरें। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें।।

(1/9/10–11)

किन्तु जब उनकी बुद्धि को शिवजी ने प्रेरित कर दिया तब भला किस विवेक की कमी रह सकती है और इस प्रकार से शिव कृपा एवं हरि प्रेरणा से श्रीरामचरितमानस में महाकाव्य के सभी लक्षण विद्यमान हैं।

पेपर कटिंग

बुरे का हश्र बुरा होता है

भय बिनु होइ न प्रीति

पं0 रामनरेश तिवारी, "पिण्डीवासा"
797/1सी, बाघाम्बरी रोड, इलाहाबाद, 211006, फोन 09415443173

विभीषण जी की सलाह से श्रीराम जी ने रास्ता देने के लिए समुद्र से प्रार्थना की किंतु जब उसने श्रीराम जी की प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया तब श्रीराम जी ने धनुष पर बाण चढ़ा लिया। इससे समुद्र क्षमा माँगता हुआ कहता है –

ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।

(5/59/6)

समुद्र कहता है कि हे प्रभु, प्रकृति के पंच महाभूत आपकी ही प्रेरणा से बने हैं तथा जिन्हें आप जैसी आज्ञा दें वे पालन करेंगे। समुद्र ने यह तब कहा जब श्रीरामजी ने क्रोध करके बाण खींचा।

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।।

(5/57)

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि तुम धनुष बाण दो, मैं अग्निबाण छोड़कर सारा समुद्र सुखा दूँगा। सठ से विनय करने पर वह अभिमान से भर जाता है। कुटिल व्यक्ति से प्रीति करने पर दुःख उठाना पड़ता है और कृपण व्यक्ति को सदुपदेश यानी उदारता से खर्च करने की बात निष्फल हो जाती है। ये तीनों अपने–अपने स्वभाव से विवश हैं। इन्हें समझकर तदनुसार व्यवहार करने अथवा प्रताड़ित करने पर ही कार्य ले सकते हैं। उपर्युक्त चौपाई में ताड़ना का अर्थ केवल प्रताड़ना नहीं हैं। इसका अर्थ व्यक्ति/वस्तु के स्वभाव को समझना है और तदनुसार व्यवहार करना है। इस विषय पर स्मारिका में कई लेख विस्तार से पूर्व में लिखे जा चुके हैं, अतः इस पर और अधिक विवेचना नहीं की जा रही है।

ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी।।
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा।।

(5/58/3–4)

तुलसीदास महाराज ने मानव स्वभाव का गहन अध्ययन किया था। उपर्युक्त चौपाई में तुलसीदास कहते हैं कि ममता में फंसे व्यक्ति को ज्ञान की बात गले नहीं उतरती। अति लोभी व्यक्ति के सामने वैराग्य की बात करना व्यर्थ होता है और क्रोधी, कामी व्यक्ति कभी भी हरि कथा में रस नही लेते। इन सबसे ऐसी बात करना ऊसर में बीज बोने जैसा निष्फल प्रयास है।

जैसे ही राम ने धनुष बाण उठाया समुद्र के पेट में ज्वाला धधकने लगी तथा समुद्री जीव उबलते पानी में तड़पने लगे। तभी समुद्र तीव्र गति से ब्राह्मण का रूप धारण कर राम के चरणों में आ गिरा तथा कहने लगा बचाओ, बचाओ, रक्षा करो, रक्षा करो। भगवान के समक्ष कनक थाल में मोती भर कर रखे और विनय करने लगा। समुद्र की विनय पर भगवान दया के सागर पिघल गए। तब इस दृश्य का वर्णन करते हुए

काकभुसुण्डिजी गरुड़ से कहते है कि –

काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच॥

(5 / 58)

काकभुसुण्डिजी कहते है कि केला काटने पर ही फलता है। चाहे कोई उसे जितना भी सींचे कभी फल नहीं लगता। इसी प्रकार नीच पुरुष, जड़ बुद्धि वाला डाँटने पर ही सीधा काम करता है। समुद्र प्रभु के पाँव पकड़ कर अपने अवगुणों की क्षमा याचना करता है। वह कहता है आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी सब आपके ही उपजाए हैं ये जड़ बुद्धि के है। इनके साथ कठोर बनना पड़ता है। समुद्र कहता है कि प्रभु आपने मुझ पर क्रोध कर मुझे अच्छी शिक्षा दी। अन्यथा मैं तो जड़ ही था। सागर का विनय भाव भी सराहनीय है। वह प्रभु राम के प्रताप से अभिभूत होकर कहता है –

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई॥

(5 / 59 / 7–8)

प्रभु की आज्ञा से मैं सूख जाता हूँ और वानर सेना को मार्ग देता हूँ। इस में मेरा कोई बड़प्पन नहीं है, प्रभु की कृपा ही सर्वोच्च है।

समुद्र के मीठे वचन सुनकर भगवान श्री राम प्रसन्न होकर समुद्र से पूछते हैं कि अब तुम्ही मुझे कोई मार्ग सुझाओं जिससे हमारी सेना समुद्र लाँघकर लंका की भूमि पर पाँव रख सके। श्रीराम का विनीत स्वभाव देखकर सब चकित होते है और समुंद्र सलाह देता है कि तुम्हारी सेना में नल और नील नामक दो वानर भाई हैं जिन्हें बचपन में एक ऋषि द्वारा आशीर्वाद प्राप्त हुआ था कि बड़े–बड़े पत्थर, शिलाखण्ड जो भी वे नदी या सागर में डालेगें, डूबेगें नहीं। बस उन्ही के हाथों पत्थर डलवाकर सेतु बाँध लीजिए। आप की सेना आराम से पार उतर जाएगी। इस सेतु के बाँधने से तीनो लोकों में आप का सुयश फैलेगा।

श्रीराम के दर्शन एवं प्रभुता पाकर समुद्र प्रसन्नचित विदा होकर अपने निवास वापस चला गया। समुद्र के वचन सुनकर जामवन्त से नहीं रहा गया। उसने हाथ जोड़कर कहा कि सबसे बड़ा सेतु तो राम का नाम है जिसका जाप करने से जीव भवसागर पार हो जाता है।

सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ।
अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु॥
सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह।
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भवसागर तरहिं॥

(6 / मंगलाचरण के बाद सोरठा)

सन्तशिरोमणि तुलसीदास महाराज द्वारा लिखित उपर्युक्त पंक्तियों के द्वारा मानव जीवन को सफल बनाने के लिए राम नाम का महत्त्व बताया गया है, पर व्यवहार में भय और प्रीति की नीति द्वारा ही समाज को सुधारा जा सकता है। इस प्रसंग से यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति (पंजीकृत)

ए-447, सेक्टर-47, नोएडा-201 301

दूरभाष : 2571547

वित्तीय वर्ष 2015 - 2016 का आय/व्यय विवरण (राशि भारतीय रुपयों में)

क्र.सं. आय विवरण	रुपये	व्यय विवरण	रुपये
1. वर्ष के प्रथम दिन की स्थिति			
(क) मियादी जमा खाता	1,55,269.00		
(ख) बैंक में बचत खाता	1,39,612.00		
(ग) नकद राशि	6,283.00		
2. स्मारिका में विज्ञापन से प्राप्त राशि	21,250.00	1. स्मारिका छपाई व्यय	1,02,500.00
3. दान/आरती मानस पाठ सदस्यता शुल्क से प्राप्त राशि	29,515.00	2. श्रीरामनवमी उत्सव एवं श्रीराम कथा आयोजन पर व्यय	16,100.00
4. 55.269 के FDR से प्राप्त ब्याज बैंक ब्याज (अब FDR 72,185 रु0 का कराया गया) भी 2015–16 में शामिल है	25,213.00	3. टेलीफोन बिलों का भुगतान	5,852.00
		4. विविध व्यय (बैंक चार्ज सहित)	1,700.00
		5. वर्ष के अंतिम दिन की स्थिति	
		(क) मियादी जमा खाता	72,185.00
		(ख) बैंक में बचत खाता	0.00
		(ग) नकद राशि	0.00
		(घ) श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के खाते में स्थानांतरित राशि	
		1) चैक से	1,60,000.00
		2) नगद	18,805.00
कुल योग	3,77,142.00	कुल योग	3,77,142.00

दिनेश चन्द्र शर्मा	**भगवान दास पटैरया**	**जे.के. गुप्ता**	**चार्टड**
अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष	लेखाकार

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

वित्तीय वर्ष 2015 – 2016 का आय/व्यय विवरण (राशि भारतीय रुपयों में)
(6 अगस्त 2015 से 31 मार्च 2016 तक)

क्र.सं. आय विवरण	रुपये	व्यय विवरण	रुपये
1. वर्ष के प्रथम दिन की स्थिति			
(क) मियादी जमा खाता	0.00		
(ख) बैंक में बचत खाता	0.00		
(ग) नकद राशि	0.00		
2. स्मारिका में विज्ञापन से प्राप्त राशि	26,000.00	1. स्मारिका छपाई व्यय	0.00
3. दान/आरती मानस पाठ सदस्यता शुल्क से प्राप्त राशि	40,019.00	2. श्रीरामनवमी उत्सव एवं श्रीराम कथा आयोजन पर व्यय	0.00
4. श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति से फंड स्थानांतरण	1,78,805.00	3. टेलीफोन बिलों का भुगतान	1,571.00
		4. विविध व्यय (बैंक चार्ज सहित)	4,278.00
		5. वर्ष के अंतिम दिन की स्थिति	
		(क) मियादी जमा खाता	1,40,000.00
		(ख) बैंक में बचत खाता	74,878.00
		(ग) नकद राशि	24,097.00
कुल योग	2,44,824.00	कुल योग	2,44,824.00

दिनेश चन्द्र शर्मा	भगवान दास पटैरया	जे.के. गुप्ता	चार्टड
अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष	लेखाकार

श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र

श्रीरामचरितमानस एक महाकाव्य ही नहीं, बल्कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम का ग्रन्थावतार है। इसकी चौपाइयाँ, दोहे आदि सशक्त मंत्रों का संकलन है। इसकी चौपाइयाँ, दोहे, सोरठे सभी सरल मंत्र हैं। संस्कृत के मंत्र कठिन होते हैं, इससे हर एक को उनके उच्चारण में सुगमता नहीं होती, इसलिये जापक का मन उनमें पूरा नहीं लगता। साबर–मंत्र रूखे और कठिन शब्दावली से भरे होते हैं। उनमें भी मन नहीं लगता, परन्तु श्रीरामचरितमानस के ये मंत्र सरल, सरस और सार्थक हैं। जापक इनमें तन्मय हो जाता है। इच्छाशक्ति तल्लीन हो जाती है। इससे मनवांछित फल शीघ्र प्राप्त होता है।

रक्षा-रेखा :

मन्त्र सिद्ध करने के लिये या किसी संकटपूर्ण जगह पर रात्रि व्यतीत करने के लिये अपने चारों ओर रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिए। लक्ष्मणजी ने सीताजी की कुटी के आसपास जो रक्षा रेखा खींची थी, उसी लक्ष्य पर निम्नांकित रक्षा-मन्त्र बनाया गया है। इसे एक सौ आठ आहुति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिए।

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥

इन मंत्रों को सिद्ध करके उनका जप करना अथवा मानस पाठ करते समय दोहा/सोरठा एवं चौपाइयों के बीच संपुट लगाने से इष्ट फल की अवश्य ही प्राप्ति होती है। मंत्र सिद्ध करने के लिए उपयुक्त मुहूर्त में रात्रि 10 बजे के बाद अष्टांग हवन सामग्री से इष्ट चौपाई अथवा दोहा/सोरठा से 108 आहुतियाँ देनी चाहिए। अष्टांग हवन सामग्री में चन्दन का बुरादा, तिल, शुद्ध घी, शक्कर, अगर, तगर, कपूर, शुद्ध केशर, नागर मोथा, पंच मेवा, जौ और चावल आते हैं। एक दिन हवन करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मंत्र (दोहा/चौपाई आदि) का प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिए, पर किसी भी स्थिति में 21 बार से कम जप न हो, इसका ध्यान रखें। सामान्यतया सवा लाख जप किया जाता है, पर इससे पहले ही यदि कार्य सिद्ध हो जाए तब भी अनुष्ठान पूरा करना चाहिए और जीवन पर्यन्त उस मंत्र को रोज स्मरण कर लेना चाहिए, ताकि मंत्र सिद्ध रहे।

इस सम्बन्ध में निम्नांकित नियम महत्वपूर्ण हैं :

1. पूर्ण श्रद्धा–विश्वास एवं समर्पण भाव से जप करें।
2. वाराणसी में भगवान शंकरजी ने मानस की चौपाइयों को मन्त्र शक्ति प्रदान की है, इसलिये वाराणसी की ओर मुख करके शंकरजी को साक्षी मानकर श्रद्धा से जप करना चाहिए।
3. जिस उद्देश्य के लिये जो चौपाई, दोहा या सोरठा जप करना बताया गया है, उसको सिद्ध करने के

लिये अष्टांग हवन की सामग्री से उसी चौपाई, दोहे या सोरठे के द्वारा 108 आहुतियाँ देनी चाहिए। यह हवन केवल एक ही दिन करना है। शुद्ध मिट्टी की वेदी बनाकर उस पर अग्नि स्थापित करके उसमें आहुति देनी चाहिए। प्रत्येक आहुति के साथ चौपाई, दोहा, सोरठा आदि के अन्त में 'स्वाहा' बोलना चाहिए।

4. प्रत्येक आहुति लगभग 10 ग्राम की (सब चीजें मिलाकर) होनी चाहिए। इस हिसाब से 108 आहुति के लिये लगभग एक किलोग्राम सामग्री सब चीजें मिलाकर बना लेनी चाहिए। कोई चीज कम–ज्यादा हो तो कुछ आपत्ति नहीं। पंचमेवा में पिस्ता, बादाम, किशमिश (द्राक्षा), अखरोट और काजू ले सकते हैं। इनमें से कोई चीज न मिले तो उसके बदले में मिस्री मिला सकते हैं। केसर शुद्ध 3 ग्राम ही डालने से काम चल जाएगा, अधिक की आवश्यकता नहीं है।
5. हवन करते समय माला रखने की आवश्यकता एक सौ आठ की संख्या गिनने भर के लिये है। माला रखने में असुविधा हो तो गेहूँ, जौ या चावल आदि के 108 दाने रखकर उनसे गिनती की जा सकती है। करमाला का उपयोग भी कर सकते हैं।
6. बैठने के लिये आसन ऊन का अथवा कुशा का होना चाहिये।
7. मन्त्र सिद्ध करने के लिये यदि लंकाकाण्ड की चौपाई या दोहा हो तो उसका हवन शनिवार को करना चाहिये। दूसरे काण्डों के चौपाई–दोहे किसी भी दिन उपयुक्त मुहूर्त में हवन करके सिद्ध किये जा सकते हैं।
8. एक दिन हवन करने से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मन्त्र (चौपाई–दोहे आदि) का प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को, जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिये, अधिक कर सकें तो अधिक उत्तम। आप चाहें तो नियमित जप के अलावा भी दिनभर चलते–फिरते हुए उस चौपाई या दोहे का जप कर सकते हैं। जितना अधिक जप हो, उतना ही उत्तम है।
9. कोई दो तीन कार्यों के लिये दो तीन मन्त्रों का अनुष्ठान एक साथ करना चाहें तो कर सकते हैं, पर उन मन्त्रों को पहले अलग–अलग हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिये। हवन के द्वारा एक ही दिन में दो या तीन मंत्रों को सिद्ध कर सकते हैं।
10. स्त्रियाँ भी इस अनुष्ठान को कर सकती हैं, परन्तु रजस्वला होने की स्थिति में जप नहीं करना चाहिये। इस अवस्था में हवन भी नहीं करना चाहिये।
11. जप करते समय मन में यह विश्वास अवश्य रखना चाहिये कि भगवान श्रीसीताराम की अहैतुकी कृपा से मेरा कार्य अवश्य सफल होगा। विश्वासपूर्वक जप करने पर सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी।

12. अधिकांश मंत्र तथा उपर्युक्त नियम 'कल्याण' के मासिक अंकों से लिए गए हैं।

13. जप करते समय यदि निम्नांकित बिन्दुओं का पालन करें तो सफलता शीघ्रता से प्राप्त होगी :

(क) जप सूर्योदय से पूर्व करें।

(ख) पूर्व की ओर अथवा वाराणसी की ओर मुँह करके जप करें।

(ग) ऊन के आसन पर बैठें।

(घ) अपने सामने श्रीरामदरबार का चित्र रखें। एक लोटा जल अपने बाईं ओर रखें जिसे जप के पश्चात किसी पौधे में डाल दें या सूर्य को अर्घ्य दें।

(ङ) अपने दाईं ओर घी का दीपक जला कर रखें।

विभिन्न कामनाओं की प्राप्ति हेतु मानस के कुछ सिद्ध मंत्र इस प्रकार हैं –

1. **असमंजस की स्थिति में परम कल्याण हेतु**

जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।। (1/132/7)

2. **शरणागत होकर संकट निवारणार्थ**

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ। एहि अवसर सहाय सोइ होऊ।। (1/132/2)

3. **सर्व मंगल कामना हेतु**

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी।। (1/112/4)

4. **श्रेष्ठ भक्ति की कामना**

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें।। (2/102/7)

5. **मानस का गायत्री मन्त्र**

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।। (1/18/7–8)

6. **संकट नाश के लिए**

दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।। (5/27/4)

7. **जीविका प्राप्ति के लिए**

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।। (1/197/7)

8. **लक्ष्मी प्राप्ति हेतु**

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ। धरम सील पहिं जाहिं सुभाएँ।। (1/294/2–3)

9. शत्रुता नाश के लिए

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।। (7/20/8)

10. यात्रा की सफलता के लिए

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।। (5/5/1)

11. परीक्षा में पास होने के लिए

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कवि उर अजिर नचावहिं बानी।। (1/105/6)
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहि कृपाँ अघाती।। (1/28/3)

12. विद्या प्राप्ति के लिए

गुरुगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल विद्या सब आई।। (1/204/4)

13. प्रेम बढ़ाने के लिए

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।। (7/21/2)

14. विविध रोगों एवं उपद्रवों की शांति के लिए

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।। (7/21/1)

15. ईश्वर से अपराध क्षमा कराने के लिए

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता।। (1/285/6)

16. मन पसन्द वर की प्राप्ति हेतु

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।। (1/236/7)

17. मन पसन्द वधू की प्राप्ति हेतु

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।। (1/237/4)

18. अपने इष्ट की प्राप्ति हेतु

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।। (1/259/6)

19. विपत्ति नाश हेतु

राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुख दायक।। (1/18/10)

20. भूत-प्रेत भगाने हेतु

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।। (1/17)

21. दरिद्रता नाश के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दबारि के।। (1/32/8)

22. सन्तान प्राप्ति के लिए

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।। (1/193/3)
प्रेम मगन कौसल्या, निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान।। (1/200)

23. सुख सम्पत्ति प्राप्ति हेतु

जे सकाम नर सुनहि जे गावहिं। सुख सम्पति नाना विधि पावहिं।। (7/15/3)

24. मुकदमा जीतने के लिए

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।। (4/30/4)

25. शत्रु को मित्र बनाने हेतु

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।। (5/5/2)

26. निन्दा निवृत्ति के लिए

रामकृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी।। (2/317/3)

27. विघ्न विनाश के लिए

सकल विघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही।। (1/39/5)

28. अकाल मृत्यु के निवारण के लिए

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।। (5/30)

29. नजर झाड़ने के लिए

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी।। (1/118/5)

30. खोई हुई चीज पुनः प्राप्त करने के लिए

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू।। (1/13/7)

31. ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने के लिए

साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।। (1/22/4)

32. उत्सव के अवसर प्राप्त करने के लिए

सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु।। (1/361)

33. मनवांछित जीवनसाथी की प्राप्ति के लिए

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।। (1/259/6)

34. विरक्ति तथा श्रीसीताराम चरणों में प्रेम प्राप्ति के लिए

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति।। (2/326)

35. ज्ञान प्राप्ति के लिए

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।। (4/11/4)

36. भक्ति की प्राप्ति के लिए

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम।। (7/84 ख)

37. श्रीहनुमानजी को प्रसन्न करने के लिए

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।। (1/26/6)

38. श्रीसीतारामजी के दर्शन के लिए

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम।। (1/146)

39. सहज स्वरूप दर्शन के लिए

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना।। (1/146/8)

40. भगवत्स्मरण करते हुए आराम से शरीर त्याग करने के लिए

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग।। (4/10)

41. संशय निवृत्ति के लिए

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।। (1/114/1)

42. प्रभु-प्रेम में निरन्तर वृद्धि के लिए

सीता राम चरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें।। (2/205/2)

43. सुखद एवं ऐश्वर्यपूर्ण यात्रा के लिए

चलत बिमान कोलाहल होई। जय रघुबीर कहइ सबु कोई। (6/119/3)

श्रीरामशलाका-प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावों को श्रीरामशलाका–प्रश्नावली का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, उसकी महत्ता एवं उपयोगिता से प्रायः सभी मानस प्रेमी परिचित होंगे। अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अंकित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालने की विधि तथा उसके उत्तर–फलों का उल्लेख कर दिया जाता हैं। श्रीरामशलाका–प्रश्नावली का स्वरूप इस प्रकार है–

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	व	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रे	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म*	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	इ	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह्व	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	म	स	रि	ग	द	न	ष	म	खि	जि	मनि	त	जं
सिं	मु	न	न	कौ	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ढ़	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	स	हिं	र	त	न	ष	ा	ज	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	जा	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

इस रामशलाका–प्रश्नावली के द्वारा जिस किसी को जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान करना चाहिये।

तदनन्तर श्रद्धा–विश्वास पूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में अंगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाये। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है, उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े, उसे भी लिख लेना चाहिये। इस प्रकार प्रति नवें अक्षर को क्रम से लिखते जाना चाहिये और तब तक लिखते जाना चाहिये, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अंगुली अथवा शलाका न पहुँच जाये। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते–पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायेगी, ये प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि किसी–किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (ा) और किसी–किसी कोष्ठक में दो–दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देना चाहिये और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार गिनना चाहिये। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे, वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेना चाहिये और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे, वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिये।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई निकाल दी जाती है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के * इस चिह्न से संयुक्त 'म' वाले कोष्ठक में अँगुली या शलाका रक्खा और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन–गिनकर लिखता गया तो उत्तर स्वरूप चौपाई बन जायेगी–

हो इ है सो ई जो रा म * र चि रा खा । को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा षा ।।

यह चौपाई बालकाण्डान्र्तगत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्ता को इस उत्तर स्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होने में संदेह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

1. सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में श्री सीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरी जी ने श्रीसीता जी को आशीर्वाद दिया है।

फल– प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

2. प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।।

स्थान– यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

फल– भगवान का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

3. उघरें अंत न होई निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग वर्णन के प्रसंग में है।

फल– इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में संदेह है।

4. बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।

स्थान– यह चौपाई भी बालकाण्ड के आरम्भ में ही सत्संग वर्णन के प्रसंग की है।

फल– खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होने में संदेह है।

5. मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में संत–समाज रूपी तीर्थ के वर्णन में है।

फल– प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

6. गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

स्थान– यह चौपाई श्रीहनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

फल– प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

7. बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धारि काहुँ न धीरा।।

स्थान– यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावण की मृत्यु के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।

फल– कार्य पूर्ण होने में संदेह है।

8. सफुल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में पुष्प वाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्र जी का आशीर्वाद है।

फल– प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

इस प्रकार रामशलाका–प्रश्नावली से कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं; जिनमें सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तराशय संन्निहित हैं।

विक्रम संवत् 2074 वर्ष की प्रमुख तिथियाँ - एक दृष्टि में

मास/पक्ष	गणेश चतुर्थी	एकादशी (स्मार्त)	प्रदोष	मास शिवरात्रि	अमावस्या	पूर्णिमा	सत्य0 व्रत	संक्रान्ति
चैत्र शुक्ल	31.03.17	07.04.17	08.04.17	—	—	11.04.17	10.04.17	—
वैशाख कृष्ण	14.04.17	22.04.17	24.04.17	24.04.17	26.04.17	—	—	13.04.17
वैशाख शुक्ल	29.04.17	06.05.17	08.05.17	—	—	10.05.17	10.05.17	—
ज्येष्ठ कृष्ण	14.05.17	22.05.17	23.05.17	24.05.17	25.05.17	—	—	14.05.17
ज्येष्ठ शुक्ल	29.05.17	05.06.17	06.06.17	—	—	08.06.17	08.06.17	—
आषाढ़ कृष्ण	13.06.17	20.06.17	21.06.17	22.06.17	24.06.17	—	—	15.06.17
आषाढ़ शुक्ल	27.06.17	04.07.17	06.07.17	—	—	08.07.17	08.07.17	—
श्रावण कृष्ण	12.07.17	19.07.17	21.07.17	21.07.17	23.07.17	—	—	16.07.17
श्रावण शुक्ल	26.07.17	03.08.17	05.08.17	—	—	07.08.17	07.08.17	—
भाद्रपद कृष्ण	11.08.17	18.08.17	19.08.17	20.08.17	21.08.17	—	—	16.08.17
भाद्रपद शुक्ल	25.08.17	02.09.17	03.09.17	—	—	06.09.17	05.09.17	—
आश्विन कृष्ण	09.09.17	16.09.17	17.09.17	18.09.17	20.09.17	—	—	16.09.17
आश्विन शुक्ल	24.09.17	01.10.17	03.10.17	—	—	05.10.17	05.10.17	—
कार्तिक कृष्ण	08.10.17	15.10.17	17.10.17	18.10.17	19.10.17	—	—	17.10.17
कार्तिक शुक्ल	23.10.17	31.10.17	01.11.17	—	—	04.11.17	03.11.17	—
मार्गशीर्ष कृष्ण	07.11.17	14.11.17	15.11.17	16.11.17	18.11.17	—	—	16.11.17
मार्गशीर्ष शुक्ल	22.11.17	30.11.17	01.12.17	—	—	03.12.17	03.12.17	—
पौष कृष्ण	06.12.17	13.12.17	15.12.17	16.12.17	18.12.17	—	—	15.12.17
पौष शुक्ल	22.12.17	29.12.17	30.12.17	—	—	02.01.18	01.01.18	—
माघ कृष्ण	05.01.18	12.01.18	14.01.18	15.01.18	16.01.18	—	—	14.01.18
माघ शुक्ल	20.01.18	27.01.18	29.01.18	—	—	31.01.18	31.01.18	—
फाल्गुन कृष्ण	03.02.18	11.02.18	13.02.18	14.02.18	15.02.18	—	—	12.02.18
फाल्गुन शुक्ल	13.02.18	26.02.18	27.02.18	—	—	01.03.18	01.03.18	—
चैत्र कृष्ण	05.03.18	13.03.18	14.03.18	15.03.18	17.03.18	—	—	14.03.18

विक्रमी संवत् 2074 के व्रत, पर्व त्यौहारों की सूची

शुभ संवत् 2074, शाके 1939, राजा मंगल, मन्त्री गुरु, समय वास धोबी के घर में, वाहन वृषभ, रोहिणी का निवास तट पर, संवत्सर का नाम साधारण

28 मार्च से 11 अप्रैल 2017 तक (चैत्र शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
अमा० / प्रति०	मंगलवार	28.3.2017	विक्रमी संवत् 2074 प्रारम्भ, बासंती नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापन, गौतम जयंती, गुड़ी पडवा, श्रीदुर्गा पूजा, गंडमूल 13.41 से, प्रतिपदा का क्षय
द्वितीया	बुधवार	29.3.2017	झूलेलाल जयंती, चेटी चांद (सिंधि)
तृतीया	गुरुवार	30.3.2017	मत्स्य जयंती, गणगौर तीज (चैत्र), गंडमूल समाप्त 9.24 पर
चतुर्थी	शुक्रवार	31.3.2017	दमनक चतुर्थी व्रत, सूर्य प्रवेश रेवती 12.40
पंचमी	शनिवार	01.4.2017	अप्रैल मूर्ख दिवस, रोहिणी व्रत, श्री पंचमी
षष्ठी	रविवार	02.4.2017	स्कन्दषष्ठी व्रत, यमुना षष्ठी
सप्तमी	सोमवार	03.4.2017	आयंबिल ओली प्रारंभ
अष्टमी	मंगलवार	04.4.2017	श्रीराम जयंती, माँ तारा जयंती, बसंत दुर्गाष्टमी, रामनवमी
नवमी	बुधवार	05.4.2017	नवरात्र समाप्त, मेला मनसा देवी, गंडमूल 22.52 से
दशमी	गुरुवार	06.4.2017	नवरात्र–पारणा, धर्म राज दशमी
एकादशी	शुक्रवार	07.4.2017	कामदा एकादशी व्रत, गंडमूल 23.34 तक
द्वादशी	शनिवार	08.4.2017	प्रदोष व्रत, अनंग त्र्योदशी
त्रयोदशी	रविवार	09.4.2017	महावीर जयंती
चतुर्दशी	सोमवार	10.4.2017	गुरु तेग बहादुर गुरयाई, श्री सत्यनारायण पूजा
पूर्णिमा	मंगलवार	11.4.2017	हनुमान जयन्ती, पूर्णिमा व्रत

12 अप्रैल से 26 अप्रैल 2017 तक (वैशाख कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	गुरुवार	13.4.2017	वैशाखी, मेघ संक्रान्ति
तृतीया	शुक्रवार	14.4.2017	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, गुड़ फ्राइडे
चतुर्थी	शनिवार	15.4.2017	सती अनुसूया जयंती, गंडमूल 13.40 से
पंचमी	रविवार	16.4.2017	ईस्टर संडे
षष्ठी	सोमवार	17.4.2017	गंडमूल 19.33 तक
अष्टमी	बुधवार	19.4.2017	अष्टमी तिथि, कालाष्टमी व्रत
दशमी	शुक्रवार	21.4.2017	पंचक प्रारम्भ 14.20
एकादशी	शनिवार	22.4.2017	श्रीवल्लभाचार्य ज०, वरूथिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
द्वादशी	रविवार	23.4.2017	वरूथिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)
त्रयोदशी	सोमवार	24.4.2017	सोम प्रदोष व्रत, गंडमूल 24.05 से
चतुदर्शी	मंगलवार	25.4.2017	पंचक समाप्त 21.55
अमावस्या	बुधवार	26.4.2017	अमावस्या, शुकदेव मुनि ज०, गंडमूल 19.20 तक

27 अप्रैल से 10 मई 2017 तक (वैशाख शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	शुक्रवार	28.4.2017	परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया
तृतीया/चतु०	शनिवार	29.4.2017	मातंगी जयंती, रोहिणी व्रत, गणेश चतुर्थी व्रत
पंचमी	रविवार	30.4.2017	शंकराचार्य जयन्ती
षष्ठी	सोमवार	01.5.2017	मई (श्रम दिवस), श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती
सप्तमी	मंगलवार	02.5.2017	गंगा जयन्ती
अष्टमी	बुधवार	03.5.2017	श्री दुर्गा अष्टमी, श्री बगलामुखी जयन्ती
नवमी	गुरुवार	04.5.2017	जानकी जयन्ती, सीता नवमी
एकादशी	शनिवार	06.5.2017	मोहनी एकादशी व्रत
द्वादशी	रविवार	07.5.2017	रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती
त्रयोदशी	सोमवार	08.5.2017	सोम प्रदोष व्रत
चतुदर्शी	मंगलवार	09.5.2017	नरसिंह जयन्ती
पूर्णिमा	बुधवार	10.5.2017	कूर्मा जयन्ती, बुद्ध जयन्ती, छिन्नमस्ता जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, श्री सत्यनारायण पूजा

11 से 25 मई 2017 तक (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	शुक्रवार	12.5.2017	देवर्षि नारद जयन्ती, वीणादान
तृतीया	रविवार	14.5.2017	वृष संक्रान्ति, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
चतुर्थी	सोमवार	15.5.2017	रेवत्यांशुक्र 22.52
सप्तमी	गुरुवार	18.5.2017	कालाष्टमी व्रत, पंचक प्रारम्भ 22.12
अष्टमी	शुक्रवार	19.5.2017	अष्टमी तिथि, संत दादूदयाल पुण्य तिथि
नवमी	शनिवार	20.5.2017	सूर्य सायन मिथन 26.02
एकादशी	सोमवार	22.5.2017	अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी
द्वादशी	मंगलवार	23.5.2017	प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त 8.24
त्रयो॰/चतु॰	बुधवार	24.5.2017	शिवरात्रि व्रत
अमावस्या	गुरुवार	25.5.2017	शनैश्चर जयंती, वट सावित्री व्रत, भावुका अमावस्या

26 मई से 09 जून 2017 तक (ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शुक्रवार	26.5.2017	करवीर व्रत, मिथुन में मंगल, दशाश्वमेघ घाट स्नानारम्भ
तृतीया	रविवार	28.5.2017	महाराणा प्रताप ज॰, रमजान शुरू, रम्भा तृतीया व्रत
चतुर्थी	सोमवार	29.5.2017	गणेश चतुर्थी व्रत, उमा अवतार
षष्ठी	बुधवार	31.5.2017	अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा
सप्तमी	गुरुवार	01.6.2017	दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती
दशमी	रविवार	04.6.2017	गंगा दशहरा, वटुक भैरव जयंती
एकादशी	सोमवार	05.6.2017	निर्जला एकादशी व्रत
द्वादशी	मंगलवार	06.6.2017	प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी
त्रयोदशी	बुधवार	07.6.2017	वट सावित्री व्रत प्रारम्भ
चतुर्दशी	गुरुवार	08.6.2017	श्री सत्यनारायण व्रत
पूर्णिमा	शुक्रवार	09.6.2017	वटसावित्री व्रत समाप्त, पूर्णिमा व्रत

10 से 24 जून 2017 तक (आषाढ़ कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शनिवार	10.6.2017	गुरु हरगोविन्द जयंती
द्वितीया	रविवार	11.6.2017	ऋषभनाथ जयंती (जैन)
चतुर्थी	मंगलवार	13.6.2017	गणेश चतुर्थी व्रत
पंचमी	बुधवार	14.6.2017	पंचक प्रारम्भ 28.28
षष्ठी	गुरुवार	15.6.2017	मिथुन संक्रांति
अष्टमी	शनिवार	17.6.2017	कालाष्टमी व्रत
नवमी	रविवार	18.6.2017	पितृ दिवस (फादर्स डे)
दशमी	सोमवार	19.6.2017	पंचक समाप्त 17.26
एकादशी	मंगलवार	20.6.2017	योगिनी एकादशी व्रत
द्वादशी	बुधवार	21.6.2017	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	गुरुवार	22.6.2017	शिवरात्रि व्रत, रोहिणी व्रत
चतुर्दशी	शुक्रवार	23.6.2017	अमावस्या पितृकार्येषु
अमावस्या	शनिवार	24.6.2017	आषाढ़ी अमावस्या, शनैश्चरी अमा॰, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, प्रातः 08.01 के बाद

25 जून से 9 जुलाई 2017 तक (आषाढ़ शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	रविवार	25.6.2017	रथ यात्रा (पुरी)
चतुर्थी	मंगलवार	27.6.2017	ईद–उल–फितर
षष्ठी	गुरुवार	29.6.2017	कुमार षष्ठी व्रत, स्कन्द पूजन
सप्तमी	शुक्रवार	30.6.2017	विवास्वत सप्तमी
अष्टमी	शनिवार	01.7.2017	अष्टमी तिथि
नवमी	रविवार	02.7.2017	भड्डलीनवमी, गुप्तनवरात्र समा॰, मेला शरीफ भवानी (कश्मीर)
एकादशी	मंगलवार	04.7.2017	देवशयनी एकादशी
त्रयोदशी	गुरुवार	06.7.2017	प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	शनिवार	08.7.2017	श्री सत्यनारायण पूजा
पूर्णिमा	रविवार	09.7.2017	गुरु पूर्णिमा, अष्टान्हिका समाप्त, पूर्णिमा व्रत

10 से 23 जुलाई 2017 तक (श्रावण कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	सोमवार	10.7.2017	श्रावण सोमवार
द्वितीया	मंगलवार	11.7.2017	मंगला गौरी व्रत प्रारम्भ
तृतीया	बुधवार	12.7.2017	गणेश चतुर्थी व्रत, पंचक प्रारम्भ 10.03
पंचमी	शुक्रवार	14.7.2017	नागपंचमी (राजस्थान व बंगाल)
सप्तमी	रविवार	16.7.2017	कालाष्टमी व्रत, पंचक समाप्त 11.05, कर्क में सूर्य
अष्टमी	सोमवार	17.7.2017	अष्टमी तिथि
दशमी / एका॰	बुधवार	19.7.2017	कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त), एका॰ तिथि का क्षय
द्वादशी	गुरुवार	20.7.2017	कामिका एकादशी व्रत (वैष्णव)
त्रयोदशी	शुक्रवार	21.7.2017	प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत
अमावस्या	रविवार	23.7.2017	श्रावण (हरियाली) अमावस्या

24 जुलाई से 07 अगस्त 2017 तक (श्रावण शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	सोमवार	24.7.2017	मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)
तृतीया	बुधवार	26.7.2017	गणेश चतुर्थी व्रत, हरियाली तीज
चतुर्थी	गुरुवार	27.7.2017	नाग पंचमी
पंचमी	शुक्रवार	28.7.2017	कल्की जयन्ती
सप्तमी	रविवार	30.7.2017	गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
अष्टमी	सोमवार	31.7.2017	श्री दुर्गाष्टमी, मेला छिन्नमस्तिका चिन्तपूर्णी–चामुण्डा देवी समाप्त
नवमी	मंगलवार	01.8.2017	लोकमान्य तिलक जयंती
एकादशी	गुरुवार	03.8.2017	पवित्रा एकादशी
त्रयोदशी	शनिवार	05.8.2017	प्रदोष व्रत, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ
चतुर्दशी	रविवार	06.8.2017	मित्र दिवस
पूर्णिमा	सोमवार	07.8.2017	रक्षा बन्धन, गायत्री जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, श्री सत्यनारायण व्रत

8 से 21 अगस्त 2017 तक (भाद्रपद कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	मंगलवार	08.8.2017	पंचक प्रारम्भ 16.16
तृतीया	गुरुवार	10.8.2017	कज्जली तीज
चतुर्थी	शुक्रवार	11.8.2017	गणेश बहुला चतुर्थी व्रत, संकट चतुर्थी
षष्ठी	रविवार	13.8.2017	चन्दन षष्ठी व्रत
सप्तमी	सोमवार	14.8.2017	श्रीकृष्ण जयन्ती, जन्माष्टमी (स्मार्त)
अष्टमी	मंगलवार	15.8.2017	स्वतंत्रता दिवस, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)
नवमी	बुधवार	16.8.2017	रोहिणी व्रत, सिंह संक्रान्ति, नन्दोत्सव, गोगा नवमी
एकादशी	शुक्रवार	18.8.2017	अजा एकादशी व्रत
द्वादशी / त्रयो॰	शनिवार	19.8.2017	प्रदोष व्रत, गोवत्स पूजा
चतुर्दशी	रविवार	20.8.2017	शिवरात्रि व्रत, गंडमूल प्रारम्भ 17.21
अमावस्या	सोमवार	23.8.2017	कुशा ग्रहणी पिठौरी सोमवती अमावस्या, रानी सती मेला झुन्झनु

22 अगस्त से 06 सितम्बर 2017 तक (भाद्रपद शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	मंगलवार	22.8.2017	कल्पसूत्र पाठ, शरद ऋतु प्रा॰, गंडमूल 14.43 तक
द्वितीया	बुधवार	23.8.2017	चन्द्र दर्शन
तृतीया	गुरुवार	24.8.2017	हरितालिका तीज, गौरी तृतीया, चंद्रदर्शन निधेष
चतुर्थी	शुक्रवार	25.8.2017	गणपति स्था॰, गणेश चतुर्थी व्रत
पंचमी	शनिवार	26.8.2017	क्षमावाणी पर्व, ऋषि पंचमी
षष्ठी	रविवार	27.8.2017	सूर्य षष्ठी व्रत
सप्तमी	सोमवार	28.8.2017	मुक्ता भरण—सन्तान सप्तमी व्रत
अष्टमी	मंगलवार	29.8.2017	राधा अष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत, दधिची जयन्ती
नवमी	बुधवार	30.8.2017	श्रीचन्द नवमी, श्री भागवत सप्ताह प्रारम्भ
दशमी	गुरुवार	31.8.2017	धूप / सुगंध दशमी
एकादशी	शनिवार	02.9.2017	पद्मा एकादशी व्रत
द्वादशी	रविवार	03.9.2017	वामन जयन्ती, भुवनेश्वरी जयंती, प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	सोमवार	04.9.2017	गणपति विसर्जन, पंचक प्रारम्भ 23.55
चतुर्दशी	मंगलवार	05.9.2017	शिक्षक दिवस, राधाकृष्णन ज॰, अनन्त चतुर्दशी व्रत, श्राद्ध प्रा॰, महालय श्राद्ध, श्री सत्यनारायण पूजा
पूर्णिमा	बुधवार	06.9.2017	पूर्णिमा व्रत

7 से 20 सितम्बर 2017 तक (आश्विन कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	गुरुवार	07.9.2017	पितृपक्ष, प्रतिपदा एवं द्वितीया का श्राद्ध
द्वितीया	शुक्रवार	08.9.2017	तृतीया का श्राद्ध
तृतीया	शनिवार	09.9.2017	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, पंचक समाप्त 11.43
चतुर्थी / पंचमी	रविवार	10.9.2017	पंचमी का श्राद्ध, पंचमी तिथ का क्षय
षष्ठी	सोमवार	11.9.2017	षष्ठी का श्राद्ध, विनोबा भावे जयन्ती
सप्तमी	मंगलवार	12.9.2017	रोहिणी व्रत, सप्तमी का श्राद्ध
अष्टमी	बुधवार	13.9.2017	श्रीमहालक्ष्मी व्रत, अष्टमी का श्राद्ध
नवमी	गुरुवार	14.9.2017	मातृनवमी, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध
दशमी	शुक्रवार	15.9.2017	दशमी का श्राद्ध
एकादशी	शनिवार	16.9.2017	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध
द्वादशी	रविवार	17.9.2017	प्रदोष व्रत, संन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध
त्रयोदशी	सोमवार	18.9.2017	त्रयोदशी का श्राद्ध, शस्त्र–दुर्घटनादि व अपमृत्यु से मृतों का श्राद्ध
चतुर्दशी	मंगलवार	19.9.2017	सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी व अमावस्या का श्राद्ध
अमावस्या	बुधवार	20.9.2017	दान, देवकार्येषु, मातामाह (नाना का श्राद्ध)

21 सितम्बर से 05 अक्टूबर 2017 तक (आश्विन शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	गुरुवार	21.9.2017	अग्रसेन जयन्ती, शारदीय नवरात्र प्रा०, कलश स्थापना
तृतीया	शनिवार	23.9.2017	मुर्हरम, सिन्दूर तृतीया
पंचमी	सोमवार	25.9.2017	उपांग ललिता व्रत
षष्ठी	मंगलवार	26.9.2017	आयंबिल ओली प्रारम्भ
सप्तमी	बुधवार	27.9.2017	सरस्वती आवाह्न, भद्रकाली अवतार
अष्टमी	गुरुवार	28.9.2017	शरद दुर्गाष्टमी, सरस्वती पूजन
नवमी	शुक्रवार	29.9.2017	शरद नवरात्र समाप्त, शस्त्र पूजा, सरस्वती पूजन
दशमी	शनिवार	30.9.2017	दशहरा, माधवाचार्य जयन्ती, सरस्वती बलिदान, सरस्वती विसर्जन
एकादशी	रविवार	01.10.2017	पापांकुशा, एकादशी व्रत, भरत मिलाप
द्वादशी	सोमवार	02.10.2017	लालबहादुर ज०, महात्मा गांधी ज०, पंचक प्रा० 08.51
त्रयोदशी	मंगलवार	03.10.2017	प्रदोष व्रत
पूर्णिमा	गुरुवार	05.10.2017	शरद पूर्णिमा, आयांबिल ओली समाप्त, महर्षि बाल्मीकि जयंती, पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण पूजा

06 से 19 अक्टूबर 2017 तक (कार्तिक कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शुक्रवार	06.10.2017	पंचक समाप्त 19.31
तृतीया	रविवार	08.10.2017	करवा चौथ, गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20.12
पंचमी	मंगलवार	10.10.2017	रोहिणी व्रत
सप्तमी / अष्ट॰	गुरुवार	12.10.2017	अहोई अष्टमी व्रत, अष्टमी तिथि, कालाष्टमी व्रत, अष्टमी तिथि का क्षय
नवमी	शुक्रवार	13.10.2017	गुरु अस्त
एकादशी	रविवार	15.10.2017	रमा एकादशी व्रत, कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ
द्वादशी	सोमवार	16.10.2017	गोवत्स द्वादशी व्रत
त्रयोदशी	मंगलवार	17.10.2017	धनतेरस, चतुर्मास्य समाप्त, तुला संक्रान्ति, प्रदोष व्रत, यम दीपदान
चतुर्दशी	बुधवार	18.10.2017	नरक चतुर्दशी, हनुमान जयन्ती
अमावस्या	गुरुवार	19.10.2017	कार्तिक अमावस्या, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन

20 अक्टूबर से 04 नवम्बर 2017 तक (कार्तिक शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शुक्रवार	20.10.2017	गोवर्धन पूजा, जैन संवत प्रारम्भ, विश्वकर्मा पूजा, अन्नकूट
द्वितीया	शनिवार	21.10.2017	भैया दूज
चतुर्थी	सोमवार	23.10.2017	दूर्वा गणेश चतुर्थी व्रत
पंचमी	बुधवार	25.10.2017	ज्ञान पंचमी
षष्ठी	गुरुवार	26.10.2017	छठ पूजा, सूर्य षष्ठी व्रत
अष्टमी	शनिवार	28.10.2017	अष्टमी तिथि, दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी
नवमी	रविवार	29.10.2017	अक्षय कुष्मांड नवमी, पंचक प्रारम्भ 17.59
एकादशी	मंगलवार	31.10.2017	हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत
द्वादशी	बुधवार	01.11.2017	प्रदोष व्रत, तुलसी विवाह
त्रयोदशी	गुरुवार	02.11.2017	बैकुंठ चतुर्दशी, पंचक समाप्त 29.29
चतुर्दशी	शुक्रवार	03.11.2017	श्री सत्यनारायण पूजा
पूर्णिमा	शनिवार	04.11.2017	गंगा स्नान, गुरुनानक देव जयंती, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), कार्तिक पूर्णिमा, अष्टान्हिका, पूर्णिमा व्रत

5 से 18 नवम्बर 2017 तक (मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
तृतीया	सोमवार	6.11.2017	रोहिणी व्रत, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
चतुर्थी	मंगलवार	7.11.2017	अंगारकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत
सप्तमी	शुक्रवार	10.11.2017	भैरव पूजन, मासिक कालाष्टमी व्रत, भैरवाष्टमी
अष्टमी	शनिवार	11.11.2017	अष्टमी तिथि
एकादशी	मंगलवार	14.11.2017	उत्पत्ति एकादशी व्रत, बाल दिवस, पं0 जवाहरलाल नेहरू जयंती
द्वादशी	बुधवार	15.11.2017	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	गुरुवार	16.11.2017	वृश्चिक संक्रांति, शिवरात्रि व्रत
चतुर्दशी	शुक्रवार	17.11.2017	बालाजी जयंती, लाला लाजपतराय पुण्य तिथि
अमावस्या	शनिवार	18.11.2017	अमावस्या, मेला शनि (शिगनापुर)

19 नवंबर से 3 दिसम्बर 2017 तक (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	रविवार	19.11.2017	चन्द्र दर्शन
चतुर्थी	बुधवार	22.11.2017	गणेश चतुर्थी व्रत
पंचमी	गुरुवार	23.11.2017	नागपंचमी, श्रीराम जानकी विवाहोत्सव
षष्ठी	शुक्रवार	24.11.2017	स्कंद षष्ठी
षष्ठी	शनिवार	25.11.2017	पंचक प्रारम्भ 26.01
अष्टमी	सोमवार	27.11.2017	अष्टमी तिथि, दुर्गाष्टमी
नवमी	मंगलवार	28.11.2017	नन्दा नवमी
एकादशी	गुरुवार	30.11.2017	मोक्षदा मौनी एकादशी, गीता जयंती, पंचक समाप्त 16.13
द्वादशी / त्रयो	शुक्रवार	01.12.2017	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी तिथि का क्षय
चतुर्दशी	शनिवार	02.12.2017	पिशाच मोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत
पूर्णिमा	रविवार	03.12.2017	त्रिपुर जयंती, रोहिणी व्रत, अन्नपूर्णा ज॰, दत्तात्रेय ज॰, डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ज॰, पूर्णिमा व्रत, श्री सत्यनारायण पूजा

4 से 18 दिसम्बर 2017 तक (पौष कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	मंगलवार	5.12.2017	शनि पश्चिम में अस्त 08.47
तृतीया	बुधवार	6.12.2017	गणेश चतुर्थी व्रत
अष्टमी	रविवार	10.12.2017	अष्टमी तिथि, कालाष्टमी व्रत
दशमी	मंगलवार	12.12.2017	श्रीपार्श्वनाथ जयंती (जैन)
एकादशी	बुधवार	13.12.2017	सफला एकादशी व्रत
द्वादशी	गुरुवार	14.12.2017	बोधनाचार्य जयंती
त्रयोदशी	शुक्रवार	15.12.2017	धनु संक्रांति, प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	शनिवार	16.12.2017	शिवरात्रि व्रत
अमावस्या	सोमवार	18.12.2017	सोमवती अमावस्या

19 दिसंबर से 2 जनवरी 2018 तक (पौष शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	मंगलवार	19.12.2017	गंडकूल 10.05
द्वितीया	बुधवार	20.12.2017	आरोग्य व्रत, चन्द्र दर्शन
तृतीया	गुरुवार	21.12.2017	सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, गौरी पूजन
पंचमी	शनिवार	23.12.2017	पंचक प्रारम्भ 08.30
सप्तमी	सोमवार	25.12.2017	पं॰ मदनमोहन मालवीय जन्मदिवस, क्रिसमस डे, गुरु गोविन्द सिंह जयंती
अष्टमी	मंगलवार	26.12.2017	अष्टमी तिथि, दुर्गाष्टमी
नवमी	बुधवार	27.12.2017	पंचक समाप्त 25.37
एकादशी	शुक्रवार	29.12.2017	पुत्रदा एकादशी व्रत
द्वादशी	शनिवार	30.12.2017	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	रविवार	31.12.2017	रोहिणी व्रत
चतुर्दशी	सोमवार	01.01.2018	नववर्ष दिवस, श्रीसत्यनारायण पूजा
पूर्णिमा	मंगलवार	02.01.2018	शाकुंभरी जयंती, माघ स्नान प्रारम्भ, पूर्णिमा व्रत

3 से 17 जनवरी 2018 तक (माघ कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
तृतीया	गुरुवार	04.01.2018	सौभाग्य सुन्दरी व्रत
चतुर्थी	शुक्रवार	05.01.2018	संकष्ट चतुर्थी, गणेश चतुर्थी व्रत
सप्तमी	सोमवार	08.01.2018	स्वामी विवेकानन्द जयंती, कालाष्टमी व्रत
एकादशी	शुक्रवार	12.01.2018	षट्तिला एकादशी व्रत,
द्वादशी	शनिवार	13.01.2018	लोहिड़ी, तिल द्वादशी
त्रयोदशी	रविवार	14.01.2018	पोंगल (तमिल), मेरु त्रयोदशी, मकर संक्रांति, प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	सोमवार	15.01.2018	शिवरात्रि व्रत
अमावस्या	मंगलवार	16.01.2018	मौनी अमावस्या
अमावस्या	बुधवार	17.01.2018	अमावस्या स्नानदानादि

18 से 31 जनवरी 2018 तक (माघ शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	गुरुवार	18.01.2018	गुप्त नवरात्र प्रारम्भ
द्वितीया	शुक्रवार	19.01.2018	पंचक प्रारम्भ 14.17, बाबा श्रीलालादयाल जयंती,
तृतीया	शनिवार	20.01.2018	गौरी तीज, वरद/तिल चतुर्थी
पंचमी	सोमवार	22.01.2018	बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन
षष्ठी	मंगलवार	23.01.2018	सुभाष जयंती, गंडमूल 08.08 से
सप्तमी	बुधवार	24.01.2018	पंचक समाप्त 08.34
अष्टमी	गुरुवार	25.01.2018	अष्टमी तिथि, दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, गंडमूल 08.21 तक
नवमी	शुक्रवार	26.01.2018	गणतंत्र दिवस, गुप्त नवरात्रे समाप्त
दशमी	शनिवार	27.01.2018	जया एकादशी व्रत (स्मार्त)
एका॰/द्वाद॰	रविवार	28.01.2018	लाजपत राय जयंती, भीष्म द्वादशी, जया एकादशी व्रत (वैष्णव), द्वादशी तिथि का क्षय
त्रयोदशी	सोमवार	29.01.2018	सोम प्रदोष व्रत
पूर्णिमा	बुधवार	31.01.2018	ललिता जयंती, माघ स्नान समाप्त, पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण पूजा

1 से 15 फरवरी 2018 तक (फाल्गुन कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	गुरुवार	01.02.2018	शुक्रोदय
तृतीया	शनिवार	03.02.2018	गणेश चतुर्थी व्रत
षष्ठी	मंगलवार	06.02.2018	शुक्र कुम्भ में
सप्तमी	बुधवार	07.02.2018	कालाष्टमी व्रत, श्रीनाथ उत्सव
अष्टमी	गुरुवार	08.02.2018	जानकी व्रत
नवमी	शुक्रवार	09.02.2018	गुरु रामदास नवमी
दशमी	शनिवार	10.02.2018	स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती
एकादशी	रविवार	11.02.2018	विजया एकादशी व्रत
द्वादशी	सोमवार	12.02.2018	कुंभ संक्रांति, फाल्गुन संक्रांति
त्रयोदशी	मंगलवार	13.02.2018	महा शिवरात्रि, प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	बुधवार	14.02.2018	वैलेंटाइन डे, श्री वैद्यनाथ जयंती
अमावस्या	गुरुवार	15.02.2018	पंचक प्रारम्भ 20.40, अमावस्या

16 फरवरी से 1 मार्च 2018 तक (फाल्गुन शुक्ल पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
द्वितीया	शनिवार	17.02.2018	फुलेरा दूज, रामकृष्ण परमहंस जयंती
तृतीया	रविवार	18.02.2018	वसन्त ऋतु प्रारम्भ
चतुर्थी	सोमवार	19.02.2018	गंडमूल 13.38 से
पंचमी	मंगलवार	20.02.2018	याज्ञवल्क्य जयंती, पंचक समाप्त 14.03
षष्ठी	बुधवार	21.02.2018	गंडमूल 14.01 तक
अष्टमी	शुक्रवार	23.02.2018	अष्टमी तिथि, होलाष्टक प्रारम्भ, दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णा अष्टमी, लक्ष्मी–सीताष्टमी
एकादशी	सोमवार	26.02.2018	आमलकी एकादशी व्रत
द्वादशी	मंगलवार	27.02.2018	प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी
त्रयोदशी	बुधवार	28.02.2018	महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत
चतुर्दशी / पूर्णि॰	गुरुवार	01.03.2018	होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त, चैतन्य महाप्रभु जयंती, पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण पूजा

2 से 17 मार्च 2018 तक (चैत्र कृष्ण पक्ष)

तिथि	वार	दिनांक	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शुक्रवार	02.03.2018	होली (धुलैण्डी), वसंतोत्सव, होला पर्व
द्वितीया	शनिवार	03.03.2018	संत तुकाराम जयंती
चतुर्थी	सोमवार	05.03.2018	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्री भगवान नारायण जयंती
पंचमी	मंगलवार	06.03.2018	श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ
षष्ठी	बुधवार	07.03.2018	एकनाथ षष्ठी
सप्तमी	गुरुवार	08.03.2018	शीतला सप्तमी
अष्टमी	शुक्रवार	09.03.2018	अष्टमी तिथि, कालाष्टमी व्रत, शीतला अष्टमी पूजन
दशमी	सोमवार	12.03.2018	दशमाता व्रत
एकादशी	मंगलवार	13.03.2018	पापमोचिनी एकादशी व्रत
द्वादशी	बुधवार	14.03.2018	मीन संक्रांति, प्रदोष व्रत, पंचक प्रारम्भ 28.08
त्रयोदशी	गुरुवार	15.03.2018	रंगतेरस, वारुणी पर्व, शिवरात्रि व्रत
चतुर्दशी	शुक्रवार	16.03.2018	मेला पृथूदक–पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)
अमावस्या	शनिवार	17.03.2018	विक्रमी सम्वत् 2074 पूर्ण, चैत्र अमा॰, स्नानदानादि

स्वयं सिद्ध मुहूर्त (अनपूछ मुहूर्त)

नीचे दिये गये साढ़े तीन मुहूर्त स्वयं सिद्ध माने जाते हैं, जिसमें पंचांग की शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है –

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2. वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया), 3. आश्विन शुक्ल दशमी (विजय दशमी), 4. (आधा) दीपावली का प्रदोष काल।

भारतवर्ष में इनके अतिरिक्त लोकाचार और देशाचार के अनुसार निम्नलिखित तिथियों को भी स्वयंसिद्ध मुहूर्त माना जाता है।

1. भड्डली नवमी (आषाढ़ शुक्ल नवमी), 2. देवोत्थानी एकादशी (कार्तिक शुक्ल एकादशी), 3. वसन्त पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी), 4. फुलेरा दूज (फाल्गुन शुक्ल द्वितीया)

इनमें (स्वयंसिद्ध मुहूर्तों में) किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु विवाह आदि में तो पंचांग में दिये गये मुहूर्तों को ही स्वीकार करना श्रेयकर है।

विज्ञापन

AVG Logistic

आरती एवं वन्दना

आरती गणेशजी की

जय गणेश, जय गणेश जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूषे की सवारी।। जय गणेश ...।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय गणेश ...।।
लड्डुन का भोग लगे, सन्त करें सेवा। हार चढ़ें, फूल चढ़ें और चढ़े मेवा।। जय गणेश ...।।
दीनन की लाज रखो शम्भु–सुत वारी। कामना को पूर्ण करो जग बलिहारी।। जय गणेश ...।।

आरती श्रीरामचन्द्रजी की

जगमग जगमग जोत जली है। राम आरती होन लगी है।।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती। आरती संत करें दिन राती।।
आनन्द की सरिता उभरी है। जगमग जगमग जोत जली है।।
कनक सिंहासन सीय समेता। बैठहिं राम होइ चित चेता।।
वाम भाग में जनक लली है। जगमग जगमग जोत जली है।।
आरती हनुमत के मन भावे। राम कथा नित शंकर गावे।।
सन्तों की ये भीड़ लगी है। जगमग जगमग जोत जली है।।

आरती श्रीरामायणजी की

आरति श्रीरामायनजी की। कीरति कलित ललित सिय पी की।। आरति श्री ...
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिशारद।।
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी।। आरति श्री ...
गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबही की। आरति श्री ...
गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।। आरति श्री ...
कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की।। आरति श्री ...

आरती भगवान जगदीश्वर की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।। **ॐ** जय ...।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का।। स्वामी ...।।
सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। **ॐ** जय ...।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।। स्वामी ...।।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। **ॐ** जय ...।।
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।। स्वामी ...।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। **ॐ** जय ...।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।। स्वामी ...।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। **ॐ** जय ...।।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पती।। स्वामी ...।।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।। **ॐ** जय ...।।
दीनबन्धु दुख हरता, तुम ठाकुर मेरे।। स्वामी ...।।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। **ॐ** जय ...।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।। स्वामी ...।।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। **ॐ** जय ...।।
तन, मन, धन, सब कुछ है तेरा।। स्वामी ...।।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।। **ॐ** जय ...।।
श्यामसुन्दरजी की आरती जो कोई नित गावे।। स्वामी ...।।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।। **ॐ** जय ...।।

आरती सरस्वतीजी की

शारदे जय हंसवाहिनी,
जयति वीणावादिनी।
जय सरस्वती ज्ञानदायिनी,
कमल हंस विराजिनी।

शारदे जय हंसवाहिनी,
ऋद्धि सिद्धि विवेकदायिनी,
कुमति शूल विनाशनी।
देवी मंद सुहास वर्षनी,
हृदय हंस विराजिनी।
शारदे जय हंसवाहिनी,
मधुर काव्य कला,
प्रणव नाद विकासिनी।
भगवती संगीत वर दे,
भुवन मानस वासिनी।

शारदे जय हंसवाहिनी,
जयति वीणावादिनी।

आरती शिवजी की

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि।।

जय शिव ओंकारा प्रभु हर शिव ओंकारा, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा। ॐ हर हर महादेव।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे, हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे। ॐ हर हर महादेव।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दस भुज ते सोहे, तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे। ॐ हर हर महादेव।।

अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी, चंदन मृगमद सोहे भोले शुभकारी। ॐ हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे, सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे। ॐ हर हर महादेव।।

लक्ष्मी बर गायत्री, पारवती संगे, अरधंगे अरु शिरभंगे, सिर सोहत गंगे। ॐ हर हर महादेव।।

करके मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, सुखकारी दुखहारी जग पालन कारी। ॐ हर हर महादेव।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका। ॐ हर हर महादेव।।

त्रिगुणस्वामी की आरती जो कोई नित गावे, कहत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावे। ॐ हर हर महादेव।।

आरती श्रीहनुमानजी की

आरती कीजे हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपे। रोग–दोष जाके निकट न झाँके।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पताल तोरि जमकारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा।। आरती ०००

आरती सत्यनारायणजी की

ॐ जय श्री लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन–पातक–हरणा।। ॐ जय ...

रत्न जटित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजे।। ॐ जय ...

प्रकट भये कलिकारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो।। ॐ जय. ...

दुर्बल भील कराल, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, तिनकी विपति हरी।। ॐ जय ...

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं।। ॐ जय ...

भाव–भक्ति के कारण, छिन–छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सरयो।। ॐ जय ...

ग्वाल–बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी।। ॐ जय ...

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।। ॐ जय ...

श्री सत्यनारायणजी की, आरती जो कोई नित गावे।
भगतदास मनवांछित सुखसम्पत्ति पावे।। ॐ जय ...

आरती अम्बेजी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।। ॐ जय अम्बे ...

मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको।। ॐ जय अम्बे ...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे।। ॐ जय अम्बे ...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी।। ॐ जय अम्बे ...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती।। ॐ जय अम्बे ...

शुम्भ–निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नयना, निशिदिन मदमाती।। ॐ जय अम्बे ...

चण्ड–मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु–कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। ॐ जय अम्बे ...

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम–निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। ॐ जय अम्बे ...

चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरू। बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू।। ॐ जय अम्बे ...

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता।। ॐ जय अम्बे ...

भुजा चार अति शोभित, वर–मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी।। ॐ जय अम्बे ...

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।। ॐ जय अम्बे ...

माँ अम्बे की आरती, जो कोई नित गावे। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख–सम्पत्ति पावे।। ॐ जय अम्बे ...

श्री रामचन्द्रजी की स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।
नव कंज लोचन, कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्।।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम्।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जिति खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम ह्रदय कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनम्।।
मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि–पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

आरती कुंजबिहारीजी की

आरती कुंज बिहारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की।

गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला।
नन्द के आनन्द, मोहन बृजचन्द, परमानन्द, राधिका रमण बिहारी की।। आरती कुंज ...

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चन्द्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की।। आरती कुंज ...

कनकमय मोर मुकुट विलसें, देवता दर्शन को तरसें।
गगन से सुमन बहुत बरसें, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल छवि गोप कुमारी की।। आरती कुंज ...

जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी गंगा,
स्मरण से होत मोह भंगा, बसी शिव शीश, जटा के बीच,
हरै अघ कीच, चरण छवि श्री बनवारी की।। आरती कुंज ...

चमकती उज्ज्वल तट रेणू, बाजती वृन्दावन वेणू।
चहुँ दिशि गोप ग्वाल धेनू, हंसत मृदुमन्द, चांदनी चन्द।
कटत भव फन्द, टेर सुन दीन दुखारी की।। आरती कुंज ...

आरती लक्ष्मीजी की

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु धाता।। जय लक्ष्मी ...

उमा रमा ब्रह्माणी तुम ही जग माता,
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता। जय लक्ष्मी ...

दुर्गा रूप निरंजन सुख संपति दाता,
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि पाता। जय लक्ष्मी ...

तू ही है पाताल बसंती तू ही है शुभ दाता,
कर्म प्रभाव प्रकाशक भवनिधि की त्राता। जय लक्ष्मी ...

जिस घर में तुम रहतीं सब सद्‌गुण आता,
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबड़ाता। जय लक्ष्मी ...

तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोइ पाता,
खान पान को वैभव सब तुम से आता। जय लक्ष्मी ...

शुभ गुण सुन्दर मुक्ता क्षीरो निधि जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता। जय लक्ष्मी ...

श्रीलक्ष्मीजी की आरती जो कोई नित गाता,
उर आनन्द समाता पाप उतर जाता। जय लक्ष्मी ...

आरती श्रीराम की

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ
आरती उतारूँ मैं तो तन मन वारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

कनक सिंहासन राजत जोरी—दसरथ नन्दन जनक किशोरी।
युगल छवी को सदा निहारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

वाम भाग शोभित जग जननी—चरण विराजत हैं सुत अंजनी।
इन चरणों में जीवन वारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

चरणों से निकली गंगा प्यारी— पावन करती है दुनियाँ सारी।।
इन चरणों को सदा पखारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

आरती हनुमत के मन भावै—रामकथा नित शिवजी गावै।
मैं सुन सुन निज जनम संवारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

आरती अवध विहारी की

आरती अवध विहारी की, लखन सिया जनक दुलारी की।

शीश पर क्रीट मुकुट सोहे। चंद्रिका की छवि मन मोहे।।
लखन सेवा बलिहारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

कपोलन पै अलकैं झलकें। अधर पै बिजली सी चमके।।
छवि कजरारे नयनन की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

अंग सब ज्यों निर्मल नीरा। भरत रिपुदलन महावीरा।।
चरण सेवा धनुधारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

जिए जुग श्यामलता जोरी। भजो रे मन सब माया तोरी।।
दरस हित युगल विहारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

वंदना

जिस घर में हो आरती, चरण कमल चितलाय। वहाँ प्रभु वासा करें, स्वर्ग लोक से आय।।

कथा सदा होती रहे, सुनो वीर हनुमान। राम लखन सीता सहित, सदा करो कल्यान।।

बार बार वर माँगहुं, राम कृपा कर देहुं। जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुं घटे जनि नेहु।।

देवता सब आश्रम गये, शम्भु गये कैलाश। श्रोता–वक्ता जायेंगे, हरि सुमिरन की आस।।

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर। अस विचार रघुवंश मनि, हरहु विषम भव भीर।।

हम तो कुछ जाने नहीं, तुम जानों रघुनाथ। सेवा पूजा वन्दना, सबहि तुम्हारे हाथ।।

पुष्पांजलि अर्पण करूं, ग्रहण करो महाराज। कृपा दृष्टि अवलोकिए, शरण पड़े की लाज।।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।

ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्या कुमारी च धीमहि तन्नो दुर्गे प्रचोदयात्।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।

ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

ॐ वासुदेवाय विद्महे राधाबल्लभाय धीमहि तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।

ॐ दशरथाय विद्महे सीताबल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।

ॐ रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत प्रचोदयात्।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्ण मेवावशिष्यते।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वरः। यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।

श्रीरामचरितमानस पाठ आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री

नारियल–1		देशी घी	1 कि.ग्रा.
कंद		गोला साबुत *	1
सुपारी–11+10 *		मिश्री	200 ग्राम
धूपबत्ती		सौंफ	100 ग्राम
अगरबत्ती		काली मिर्च	10 ग्राम
कलावा		गंगाजल	
रोली		फल (ऋतु फल)	5 तरह के
कपूर (डली का)		दूर्वा	
इलायची	10 ग्राम	तुलसी के पत्ते	
लौंग	10 ग्राम	रूई	
पंचरंगा *		पान साबुत	5
हवन सामग्री *	1 कि.ग्रा.	फूल हार	7
काले तिल *	50 ग्राम	आम के पत्ते	
इन्द्र जौ *	25 ग्राम	हवन के लिए लकड़ी *	5 कि.ग्रा.
जौ *	50 ग्राम	(आम / आक / ढाक की)	
बेलगिरी *	250 ग्राम	कलश	1
अगर *	25 ग्राम	थाली	4
तगर *	25 ग्राम	लोटा	2
नागर मौथा *	25 ग्राम	चम्मच	2
कपूर कचरी *	25 ग्राम	माचिस	2
चन्दन चूरा *	25 ग्राम	आसन	2
धाय के फूल *	25 ग्राम	कटोरी	4
कच्ची खांड *	250 ग्राम	आटा	50 ग्राम
चावल	250 ग्राम	हल्दी	50 ग्राम
पंच मेवा	50 ग्राम		

समिति द्वारा प्रतिमाह श्रीरामचरितमानस पाठ / सुन्दरकाण्ड पाठ, यज्ञ, कीर्तन एवं प्रवचन निःशुल्क आयोजित किए जाते हैं। सभी प्रभु प्रेमी अपने निवास अथवा समीपस्थ मंदिर / उपयुक्त स्थान पर उपर्युक्त धार्मिक आयोजन करवा कर पुण्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

* यदि यज्ञ न कराएँ तो यह सामग्री नहीं चाहिए।

ग्रेटर नौएडा

विश्वस्तरीय शहर बनने की दिशा में अग्रसर...

नौएडा–ग्रेटर नौएडा मेट्रो

नौएडा–ग्रेटर नौएडा मेट्रो लाईनः मेट्रो लाईन की लम्बाई 29.164 किमी.। यह लाईन नौएडा सिटी सेन्टर सैक्टर 32 से ग्रेटर नौएडा में नॉलेज पार्क–द्वितीय, परी चौक होते हुए अल्फा–द्वितीय तक जायेगी, परियोजना की कुल लागत रु. 5,194 करोड़ होगी।

नाईट सफारीः ग्रेटर नौएडा शहर को विश्वपटल पर पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किये जाने हेतु नाईट सफारी परियोजना को पी.पी.पी. मॉडल पर विकसित किये जाने हेतु लगभग 338 हेक्टेअर भूमि आरक्षित।

नाईट सफारी

दिल्ली–मुम्बई औद्योगिक कॉरीडोरः कॉरीडोर की लम्बाई 1483 किमी. है। यह कॉरीडोर दादरी से प्रारम्भ होकर जे. एन. पोर्ट, मुम्बई पर समाप्त होगा। कॉरीडोर का प्रथम नोड ग्रेटर नौएडा है, कॉरीडोर के दोनों ओर 150 किमी. के क्षेत्र में उच्चस्तरीय निम्न अवस्थापना सुविधाऐं विकसित की जाऐंगी, जिससे अभूतपूर्व विकास के साथ लगभग 12 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। ग्रेटर नौएडा व डी.एम.आई.सी.डी.सी. की एस.पी.वी. गठित कर एस.पी.वी. को 747 एकड़ भूमि हस्तांतरित कर दी गई है। • बोडाकी में एक नये रेलवे स्टेशन का विकास। • दादरी के निकट मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब। • 600 एकड़ में इन्ट्रीग्रेटिड औद्योगिक टाऊनशिप का विकास। • ग्रेटर नौएडा से इन्दिरा गांधी हवाई अड्डे तक हाई स्पीड कनेक्टीविटी।

शहीद विजय सिंह पथिक क्रीडा संकुलः ग्रेटर नौएडा क्षेत्रवासियों के लिए उच्चस्तरीय क्रीड़ा सुविधायें उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ग्रेटर नौएडा में क्रीड़ा संकुल का निर्माण किया गया है, जिसमें ओलम्पिक साईज का एक स्वीमिंग पूल, दो स्कवॉश कोर्ट, 12 नग बेडमिन्टन कोर्ट, 04 नग प्रैक्टिस टेनिस कोर्ट, 01 नग टूर्नामेन्ट टेनिस कोर्ट, 02 नग बॉस्केट बॉल कोर्ट, 02 नग प्रैक्टिस वॉलीबॉल कोर्ट, जिम बिलियर्ड्स रूम, कार्ड रूम, एम्फीथियेटर, लाईब्रेरी, क्लब एवं रेस्टोरेंट इत्यादि का निर्माण किया गया है। स्वीमिंग पूल की दर्शक दीर्घा 2700 है एवं बेडमिन्टन एरिना में दर्शक दीर्घा 4400 है। कुल लागतः रु. 117.60 करोड़।

शहीद विजय सिंह पथिक क्रीडा संकुल

चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध मल्टीस्पेशिएलिटी अस्पतालः ग्रेटर नौएडा में 15 एकड़ क्षेत्रफल में 23 स्पेशिएलिटी सहित 500 शैय्याओं के निर्माणाधीन मल्टीस्पेशिएलिटी अस्पताल को चिकित्सा विश्वविद्यालय के रुप में विकसित किया जा रहा है। कुल लागत रु. 1376 करोड़ है। चिकित्सालय में 02 अप्रैल 2013 से ओ.पी.डी. तथा मरीजों के सैम्पल टैस्टिंग हेतु पैथोलॉजी विभाग का क्रियान्वयन 19 जुलाई, 2013 से किया जा चुका है।

हैलीपोर्टः नौएडा एवं ग्रेटर नौएडा प्राधिकरण द्वारा संयुक्त रुप से हैलीपोर्ट परियोजना का विकास लगभग रु. 100 करोड़ की अनुमानित लागत से किया जाना प्रस्तावित। जो इन शहरों को नई दिल्ली, आगरा एवं जयपुर से जोड़ेगा।

क्रिकेट स्टेडियम

कन्वेंशन सेन्टरः ग्रेटर नौएडा क्षेत्र के नोलेज पार्क–2 में लगभग 31.25 एकड़ के भूखण्ड में इण्डिया एक्सपोजीशन मार्ट के निकट प्रदर्शनी / सेमीनार हेतु कन्वेंशन सेन्टर का निर्माण। अनुमानित लागत लगभग रु. 1485 करोड़।

गंगाजल परियोजनाः ग्रेटर नौएडा के विभिन्न सैक्टरों में 85 क्यूसैक गंगा जल उपलब्ध कराने हेतु 9.95 लाख वर्ग मी. नहरों की लाईनिंग एवं हैड रेगुलेटर का कार्य, लागत रु. 318 करोड़।

हैलीपोर्ट

सीवेज ट्रीटमेन्ट प्लॉन्टः कासना के निकट रु. 150 करोड़ की लागत से अत्याधुनिक एस.बी.आर. तकनीक पर आधारित 137 एम.एल.डी. क्षमता के सीवेज़ ट्रीटमेन्ट प्लॉन्ट का निर्माण पूर्ण।

130 मी. चौड़ी सड़कः ग्रेटर नौएडा को नौएडा, गाजियाबाद, दादरी एवं यमुना एक्सप्रेसवे के क्षेत्र को जोड़ने वाली प्रमुख सड़क है। कुल लम्बाई 28.20 किमी. एवं 23 किमी. का निर्माण कार्य पूर्ण।

मुख्य प्रशासनिक कार्यालय भवनः नॉलेज पार्क–4 में प्राधिकरण का 23000 वर्गमीटर (5.75 एकड़) क्षेत्रफल में आधुनिक सुविधाओं से युक्त एवं ग्रीन बिल्डिंग मानकों पर स्थाई मुख्य प्रशासनिक कार्यालय भवन का निर्माण।

वहन योग्य भवनः ग्रेटर नौएडा के सैक्टर–म्यू–2 एवं सैक्टर–10 में समाज के सभी वर्गों हेतु वहन योग्य 7215 भवनों की योजना। अनुमानित लागत रु. 400 करोड़।

मुख्य प्रशासनिक भवन

ग्रेटर नौएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण

169, चितवन एस्टेट, सैक्टर–गामा, ग्रेटर नौएडा 201 308 जिला–गौतमबुद्ध नगर

ईमेलः authority@gnida.in वेबसाइटः www.greaternoidaauthority.in

SE SUSHMA ENTERPRISES

(An ISO 9001:2008 certified company)

MANUFACTURER OF:-

Precast Concrete (SFRC), Man-Hole Covers & Frames, Checkered Tiles, Marbles Tiles, (ISI MARKED), Gully Gratings, Paver Blocks, Kerb Stones, Concrete Tiles, Cable Covers, Man-Hole Footrest & Other Concrete Products.

IS:12592-2002

KBS

NABCB QM-032

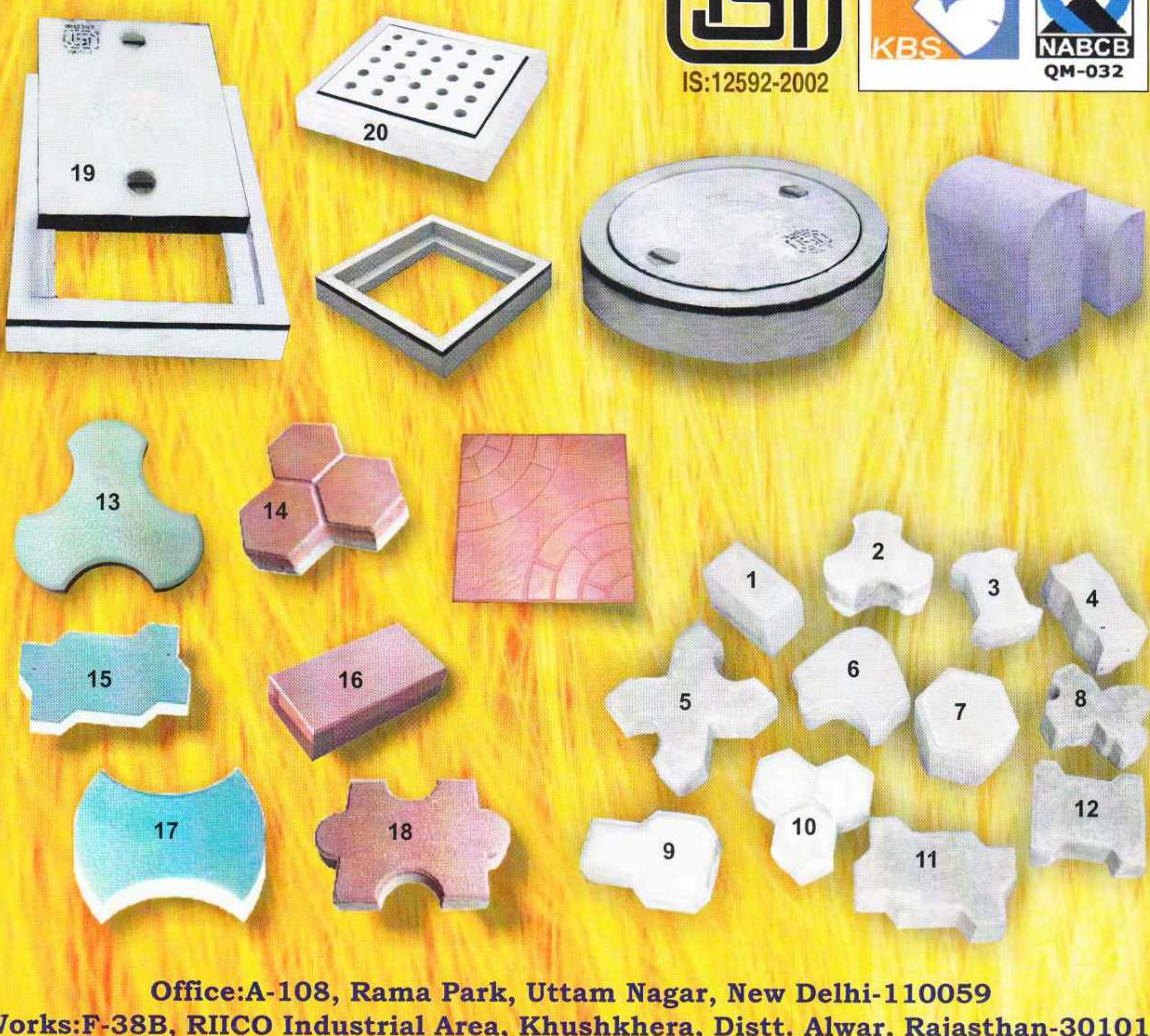

Office:A-108, Rama Park, Uttam Nagar, New Delhi-110059
Works:F-38B, RIICO Industrial Area, Khushkhera, Distt. Alwar, Rajasthan-301019
Phone: 011-25357884, Fax: 011-25357885, 9810130098, 9810334699
E Mail: sales@sushmaenterprises.co.in

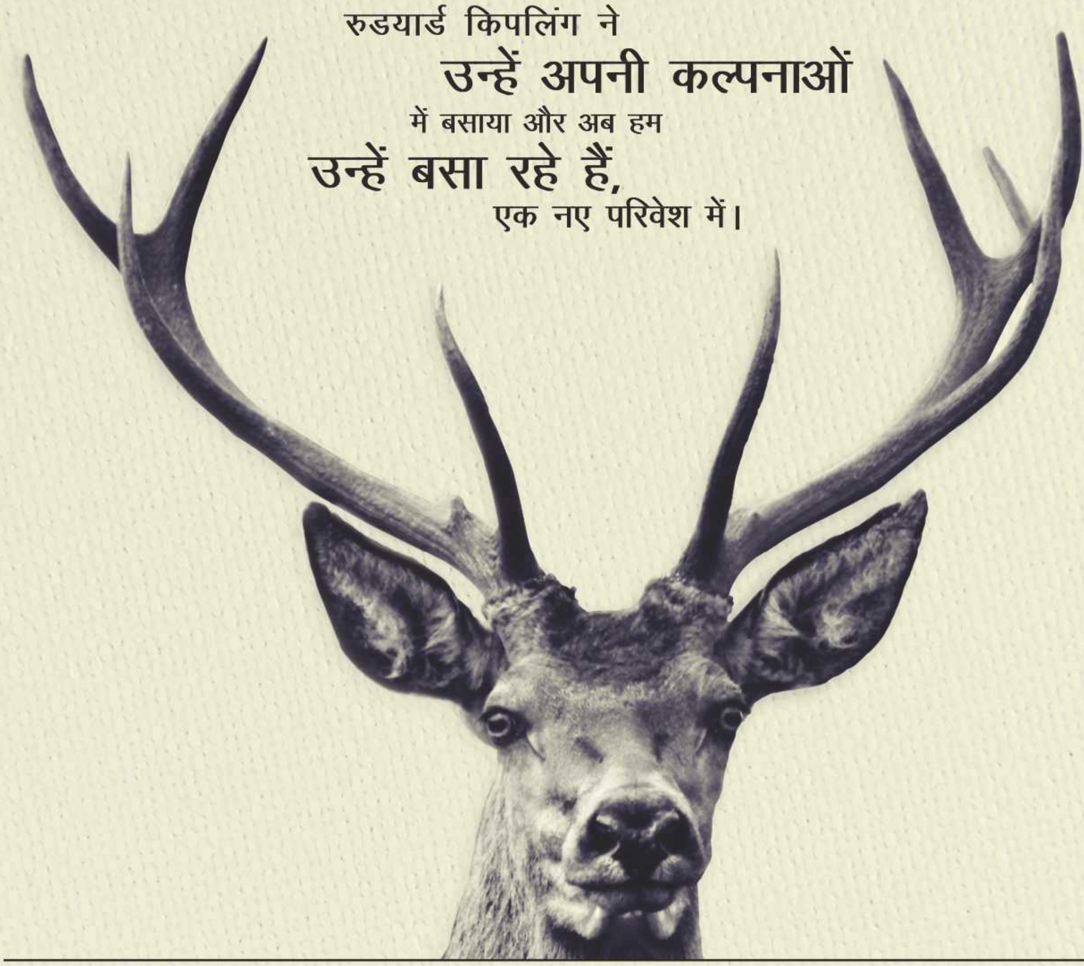

''ओएनजीसी बारासिंघा (ईस्टर्न स्वैम्प डीअर) संरक्षण परियोजना''

एक दुर्लभ प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये ओएनजीसी की सीएसआर पहल।

असम में पाये जाने वाले बारासिंघा या ईस्टर्न स्वैम्प डीअर *(Rucervus duvaucelii ranjitsinhi)* आज विलुप्त होने की कगार पर है। प्रसिद्ध लेखक रुडयार्ड किपलिंग ने जिस से मंत्रमुग्ध हो कर उसकी सुन्दरता को अपनी दूसरी किताब 'द सेकंड जंगल बुक' में कैद किया हो, उस जीव के लिये यह काफी दुखद स्थिति है।

ओएनजीसी ने इस प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये अपने कदम बढ़ाये, और वो भी बिल्कुल सही समय पर।

इसके पहले चरण के अन्तर्गत इनकी अनुमानित आबादी, अनुकूल पर्यावरण, पशु–चिकित्सा अंतःक्षेप एवं सामान्य अध्ययन और जागरूकता अभियान किया गया। इनके स्थानांतरण के लिये मानस राष्ट्रीय उद्यान को चुना गया, जो इनके रहने के लिये बिल्कुल उपयुक्त स्थान था।

काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से 19 बारासिंघो को मानस में स्थानांतरित करना बहुत ही कठिन काम था। योजना के इस अत्यंत कठिन दूसरे चरण को दक्षिण अफ्रीका से बुलाये गये वन्यजीव विशेषज्ञों ने बहुत खास तरीके से अंजाम दिया। 19 बारासिंघो का स्थानांतरण खास तंबुओ में किया गया, जिनको अन्दर से उनके प्राकृतिक आवास जैसा ही बनाया गया था। कुछ ही महीनों में 6 नवजात बारासिंघो ने झुण्ड में जुड़कर, स्थानांतरण की खुशी को दुगना कर दिया।

इस योजना के विस्तार के तीसरे चरण के अन्तर्गत 20 अतिरिक्त बारासिंघो का स्थानांतरण किया जा रहा है।

यह परियोजना संतुलित पर्यावरण की ओर ओएनजीसी की एक शुरुआत है। लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण करने के लिये प्रेरित, हमारा संगठन प्रकृति की असली सुंदरता को बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध है।

ओएनजीसी ONGC

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालयः– पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऊर्जा भवन, 5, नैलसन मंडेला मार्ग, वंसत कुँज, नई दिल्ली-110070
दूरभाषः 011-26752021, 26122148, फैक्सः 011-26129091 www.ongcindia.com /ONGC Limited @ONGC_

जीवन के सुनहरे कल को साकार करते
विश्वस्तरीय पथ का निर्माण करता
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

यमुना एक्सप्रेसवे द्वारा ग्रेटर नौएडा से आगरा तक भारत के सर्वाधिक लम्बे नियन्त्रित परिवहनीय कंक्रीट से बने सभी सुविधाओं से युक्त एक्सप्रेसवे (165 कि.मी., 6 लेन) का निर्माण किया गया है। यमुना एक्सप्रेसवे (यीडा) की आत्मा बसती है बुद्ध इन्टरनेशनल रेस सर्किट में, जहाँ वर्ष 2011 में भारत की पहली फार्मूला रेस आयोजित हुई थी। यहाँ विभिन्न स्पोर्ट्स सेन्टर तथा एक स्पोर्ट्स एकेडमी है। यीडा वाणिज्यक, संस्थागत और आमोद–प्रमोद की परियोजनाओं की अवस्थापना सुविधाओं के साथ पश्चिमी उ.प्र. में आर्थिक और औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने में लगातार प्रयासरत है।

- **पतंजलि आयुर्वेदिक लिमिटेड को आयुर्वेदिक उत्पादों के उत्पादन हेतु सेक्टर 24 / 24ए में लगभग 430 एकड़ भूमि आवंटित। सम्भावित निवेश रु. 1666.80 करोड़।**
- **पतंजलि आयुर्वेदिक लिमिटेड को विश्वस्तरीय रिसर्च सेन्टर के निर्माण हेतु सैक्टर 22ई में लगभग 27 एकड़ भूमि आवंटित।**
- **सैक्टर 24 में इलेक्ट्रौनिक मैन्युफेक्चरिंग क्लस्टर्स (ई.एम.सी.-01) में लावा मोबाईल तथा अन्य इलेक्ट्रौनिक मोबाईल कम्पनियों हेतु 100 एकड़ भूमि आवंटित। सम्भावित निवेश रु. 115 करोड़।**
- **उत्तर प्रदेश कृषि उत्पादन मण्डी परिषद द्वारा प्रस्तावित पेरिस में निर्मित RUNGIS मण्डी की तर्ज पर अत्याधुनिक विशिष्ट टर्मिनल मण्डी हेतु सैक्टर 28 में लगभग 400 एकड़ भूमि चिन्हित।**

यमुना एक्सप्रेसवे के सर्वांगीण विकास की राह में बढ़ते कदम...

- सैक्टर 17ए में 25–250 एकड़ की **ओपन एण्डेड योजना** के अर्न्तगत 13 भूखण्डों का आवंटन, जिसका निर्धारित क्षेत्रफल लगभग 440 एकड़ है। उक्त योजना के अन्तर्गत **गलगोटिया यूनिवर्सिटी** एवं **नौएडा इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी** का निर्माण कार्य पूर्ण एवं प्रथम एवं द्वितीय शैक्षिक सत्र प्रारम्भ।
- वर्ष 2010 से अब तक **संस्थागत योजना** के अन्तर्गत सैक्टर 17ए, 22ई, 22ए एवं 26ए में कुल 80 भूखण्डों का आवंटन। जिसमें ऑफिस यूज के लिए 72, नर्सरी स्कूल के लिए 1 एवं इन्स्टीट्यूशन के लिए 7 भूखण्ड हैं।
- उद्योगों को आकर्षित करने हेतु 3,91,050 वर्गमी. में 821 **औद्योगिक भूखण्डों** का आवंटन। सम्भावित निवेश रु. 325 करोड़।
- वर्ष 2015 में **यू.पी.पी.टी.सी.एल. के पक्ष में 80 एकड़ भूमि का आवंटन** 765 के.वी. बिजलीघर हेतु ग्राम जहांगीरपुर में किया गया एवं आवंटी द्वारा बिजलीघर का निर्माण पूर्ण, निवेश रु. 1500 करोड़।
- सैक्टर 24 में **मिक्सड् लैण्ड यूज योजना** के अन्तर्गत वर्तमान तक विभिन्न उपयोग हेतु 64 एकड भूमि का आवंटन किया गया है। सम्भावित निवेश रु. 118 करोड।

आवासीय भूखण्ड, आवासीय भवन एवं ग्रुप हाउसिंग हेतु योजनाऐं

- यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा वर्ष 2010 से अब तक **बिल्डर्स टाउनशिप एवं ग्रुप हाउसिंग** की अनेक योजनाऐं लायी गयी। उक्त योजनाओं के अन्तर्गत विभिन्न सैक्टरों में कुल 17 भूखण्डों का आवंटन किया गया।
- वर्ष 2009 में **विभिन्न श्रेणी के भूखण्डों की आवासीय योजना–2009** (1) के अन्तर्गत 300, 500, 1000, 2000 एवं 4000 वर्ग मी. के 21,000 भूखण्डों का आवंटन।
- वर्ष 2015 में विभिन्न श्रेणियों के भूखण्डों की **आवासीय भूखण्ड योजना** आर.पी.एस. 02 / 2015 के अन्तर्गत 120 वर्गमीटर के 600 भूखण्ड एवं 162 वर्गमीटर के 300 भूखण्डों का आवंटन किया गया।
- वर्ष 2016 में विभिन्न श्रेणियों के भूखण्डों की **आवासीय भूखण्ड योजना** आर.पी.एस. 03 / 2016 के अन्तर्गत 120 वर्गमीटर के 1200 भूखण्ड एवं 162 वर्गमीटर के 263 तथा 200 वर्गमीटर के 330 भूखण्डों का आवंटन किया गया।
- सैक्टर 22डी में **एर्फोडेबल लागत** के **एल.आई.जी.** एवं **एम.आई.जी.** फ्लैटों की योजना में 632 आवेदकों को आवंटन–पत्र दिनांक 31.12.2014 को निर्गत किए जा चुके हैं।
- सैक्टर–22ए में **यमनोत्री हाउसिंग योजना** में **एल.आई.जी.** एवं **एम.आई.जी.** फ्लैटों की योजना में 776 आवेदकों को आवंटन–पत्र दिनांक 20.05.2015 को निर्गत किए जा चुके हैं।
- सैक्टर–22ए में **बिल्टअप हाउसिंग योजना** में **एल.आई.जी.** एवं **एम.आई.जी.** फ्लैटों की योजना में 107 आवेदकों को आवंटन–पत्र दिनांक 15.09.2015 को निर्गत किए जा चुके हैं।
- सैक्टर–22डी में **लेफ्ट आउट बिल्टअप फ्लैट 07 योजना** में **एर्फोडेबल भवन** के 359 फ्लैटों की योजना माह जून 2016 में प्रकाशित की गयी।

YEIDA
Yamuna Expressway Industrial Development Authority
FUTURE IS HERE

यमुना एक्सप्रेस–वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा 201 308, जनपद-गौतमबुद्ध नगर

वेबसाईटः www.yamunaexpresswayauthority.com